सुलगते हृदय

लेखक

नरेन्द्र शर्मा

प्रकाशक

पैरामाउन्ट पब्लिशिंग कोआपरेटिव सोसाइटी लि०

५ यू. बी० बंगलो रोड दिल्ली-७.

मुद्रक : श्री कम्पोजिंग केन्द्र द्वारा सम्राट प्रेस दिल्ली।

मूल्य : तीन रुपये

३-००

इन्द्रा को—

नरेन्द्र शर्मा

उपन्यास के समस्त पात्रों, घटनाओं और स्थानों के नाम मेरी अपनी बुद्धि की खोज हैं। कोई भी सज्जन वास्तविकता से मिला कर धोखा खाने का प्रयत्न न करे।

वास्तविक नामों का सहारा केवल उपन्यास की सुन्दरता के लिए लिया गया है, वह भी कल्पना में।

नरेन्द्र शर्मा

धृष्टता

इस उपन्यास का नाम 'सैक्टर बाईस' बदलकर मैंने 'सुलगते हृदय' रख दिया है—यह भी क्या कम मुर्खता है जबकि यह उपन्यास "राजधानी" वीकली चन्डीगढ़ में "सेक्टर बाईस" के नाम से लगातार छपता रहा—मगर क्या करूँ—। मेरा काम तो कुछ करना है और कुछ नहीं तो मुर्खता ही सही—

नरेन्द्र शर्मा

5/1910 मुलतानी ढाँढा,
देहली ।

लोकप्रिय उपन्यासकार

नरेन्द्र शर्मा की अन्य रचनाएँ

1.	नई सुबह	4·75
2.	मन का मीत	4·50
3.	अन्तिम भेंट	5·25
4.	अनाड़ी	2·50
5.	विदा	2·50
6.	जन्म जला	4·50
7.	प्यासे होंठ	प्रेस में

सुलगते हृदय

पहली करवट

फूल

"बन्द करो यह बकवास—"

"ये बकवास नहीं सत्य है अरुण—"

"हर नौजवान यही कहता है—"

"मैं पागल नहीं अरुण—मुझे समझाने का प्रयत्न करो—"

"पहले अपने आप को समझ लो सतीश—! फिर मुझे समझना—"

"अपने आप को मैं समझ चुका हूँ लेकिन अफ़सोस है कि दुनिया ने मुझे समझने का प्रयत्न नहीं किया।"

"दुनिया बड़ी पत्थर दिल है—इसकी चर्चा मत किया करो—"

"मगर में पत्थर दिल दुनिया से लड़ूँगा—निगार मेरी है—मेरी रहेगी—"

"हा—हा— ।—निगार—तुम्हारी है—हा—हा—हा—निगार तुम्हारी है—! निगार तुम्हारी नहीं सतीश—"

"मेरे सिवा वह किसी और की नहीं हो सकती—

"हर प्रेमी यही कहता है—मगर—हिन्दुस्तानी लड़की—

हा—हा—हा—"

"अरुण तुम्हें प्रेम की ठोकर ने पागल कर दिया है—तुम स्वयं डरपोक बन गये हो—"

"मैं डरपोक नहीं सतीश बल्कि समझदार हो गया हूँ—"

"यह कहाँ की समझदारी है कि तुम मेरे प्रेम पर पागलों की तरह खिलखिला रहे हो—! क्या मेरा प्रेम इतना ही घटिया है—कि

तुम उसका यूं मज़ाक उड़ाते रहो— !"

"मैं प्रेम को कभी मज़ाक नहीं समझता मगर प्रेम करने वालों को मज़ाक जरूर समझता हूँ—"

"अरुण—! निगार मेरा जीवन है—वह मुझे न मिली तो मैं पागल हो जाऊँगा—उसकी नीली आँखों में से मुझे दुनिया-भर का आराम मिलता है—उसके चौड़े कन्धों ने मुझे नवजीवन का संदेश दिया है—उसके सुन्दर बालों में मेरे दिल की धड़कनें समा गई हैं उसके उभरे सीने को देखकर मेरे दिल में प्रेम के तूफान ठाठें मारते हैं—उसके गुलाब की पत्तियों जैसे होंठ मेरी इच्छाओं का जीवन हैं—"

"और जिस दिन समाज ने तुम से उसे छीन लिया उस दिन—!"

"भगवान के लिए ऐसा न कहो अरुण—मैं तबाह हो जाऊँगा—मैं मर जाऊँगा—मैं मिट जाऊँगा—मेरा दुनिया में उसके सिवा है ही कौन—? फिर मेरी जिन्दगी किस काम की—!"

"हर प्रेमी यही कहता है—मगर तुम क्यों भूल गये मेरे निर्दोष प्रेमी कि जिस लड़की से तुम प्रेम कर रहे हो वह तुम से अलग अपने माँ-बाप की बेटी भी है—तुम चार मीठी बातें करके उसे अपना जीवन बना बैठे—और जिन्होंने इतने सालों तक उसे पाला पोसा है—क्या उनका हक—"

"अरुण—"

वह चिल्ला पड़ा—

"चिल्लाओ नहीं—वास्तविकता लाख कड़वी सही मगर लाभकारी है।"

"प्रेम की असफलता के बाद अरुण तुम बुज़दिल हो गये हो—"

"बुज़दिल नहीं दिलेर हो गया हूँ—मैं सच कहता हूँ सतीश प्रेम

आदमी को बुज़दिल बना देता है और प्रेम की असफलता दिलेर—"

"यह तुम्हारा भरम है—जिस चीज को तुम दिलेरी कह रहे हो यह हारे हुए जुआरी की कल्पित प्रसन्नता है—जो हारने के बाद किसी से कर्ज उठा कर जीतने की आश रखता है—

"मेरा भरम नहीं, भरम तुम्हारा है सतीश—तू उस लड़की से प्रेम कर रहा है जो केवल कुछ फिल्में देखकर प्रेम के रोग में फंस गई है और अब अपने देश में फिल्मी प्रेम होता है—तुम स्वयं को राजकपूर के सांचे में ढाल रहे हो—वह नरगिस के—"

"अरुण तुम मज़ाक कर रहे हो—"

"मज़ाक नहीं दोस्त मैं सच्ची बात कह रहा हूँ—तुम अपनी शक्ल देख लो—जब से तुम ने राजकपूर की फिल्म देखी है—अपनी शक्ल भी वैसी ही बना ली है—लिबास इसीलिए नया सिलाया है कि राजकपूर से मिल जाय—वह भी बालों के स्टाइल देहली से बनवाकर लाई है ताकि तुम्हारी नरगिस बन सके—"

"अरुण तुम्हें तो सब मालूम है—"

"इस शहर की किस लड़की के सम्बन्ध में मैं नहीं जानता—खास कर ये मिडिल क्लास की लड़कियां जो सिर्फ फिल्में देखकर ही अपने आप को हीरोइन ख्याल करती हैं और फिर किसी हीरो की तलाश में इन सेक्टरों के चक्कर काटती हैं और अपने प्रेमी से मिलने के लिए समय निकालना हो तो कालिज से या स्कूल से छुट्टी लेकर आती हैं—"

"अरुण तुम ज्योतिषी हो—"

"ज्योतिषी नहीं—असफल प्रेमी—"

यह कहते हुए अरुण ने सामने मेज पर टाँगें फैला दीं और पनामा सिगरेट सुलगाकर वायुमण्डल में सिगरेट का धूँआं छोड़ने लगा—

"आज कौन-सी फिल्म देखोगे—?"

"नज़राना—"

"ओ हो—! राजकपूर और वैजयन्ती माला—"

"हाँ यार मुझे यह जोड़ी अच्छी लगती है—"

"और तुम्हारी—"

"धत—"

सतीश कुछ लजा गया—

"अच्छा उसका पता तो बता दो—"

"पते से क्या करोगे—?"

"मैं कौन-सा उससे प्रेम करूँगा—"

"सेक्टर उन्नीस में—"

उन्नीस—! अरुण चौंक पड़ा—

"क्यों तुम तो घबरा गये—जैसे तुम उसे जानते हो या प्रेम करते हो—

"मैं और प्रेम—यह दोनों विपरीत चीजें है—जमाने ने मुझे प्यार के बदले में घृणा दी है और अब मैं जमाने को घृणा के सिवा क्या दे सकता हूँ—अब यह घृणा ही मेरी जिन्दगी की आखिरी जायदाद है—"

"मगर मुझे तो प्यार ही मिला है—मैं फिर घृणा क्यों करूं ?

"मैंने कभी घृणा करने के लिए नहीं कहा—मैं तो कहता हूँ कि तुम प्यार करो—मगर जरा संभलकर—यह फिल्मी प्यार हैं। लड़का और लड़की इकट्ठे फिल्म देखकर शुरू कर देते हैं—यही कारण है कि आजकल प्यार एक खेल ही बन गया है—बिल्कुल गुड्डे गुड़िया का—और सिनेमा की फ़िल्म की तरह ही वह जल्द खत्म हो जाता

है और यह बीमारी तेजी से मिडिल क्लास में फैल रही है—"

"तुम मिडिल क्लास के पीछे बहुत पड़े हुए हो—"

"पीछे नहीं सतीश—मुझे वास्तव में अब मिडिल क्लास की हालत पर दया आने लगी है जो बेचारे अन्दर से खोखले हैं और ऊपर से अपने आप को ऐसा पोज करते हैं कि शायद हिन्दुस्तान का करोड़पति भी नहीं करता—सुबह उठकर जहाँ बिज़निस मैन लोग अपने करोबार पर ध्यान देते हैं वहाँ यह अपनी मुँह की दाढ़ी को आइने में देखते हैं—बालों के स्टाइल बनाते हैं—पैंट की क्रीज ठीक करते हैं—बूटों पर पालिश करते हैं और फिर किसी प्रेमिका की ओर—"

"असल में यह प्रेम मिडिल क्लास की उपज है—मिडिल क्लास की लड़कियाँ भी माँ-बाप से चोरी तमाम मेकप का सामान रखती हैं और कोई न मिले तो तुम्हारे जैसे प्रेमी तो हर समय हाजिर हैं जो उन के लिये जान हथेली पर रखे फिरते हैं—जो प्रेम करते समय भी भूल जाते हैं कि दो चार दिन में जिस लड़की को अपना जीवन समझ लिया है उसके मां-बापों का क्या होगा जिन्होंने उसे पाल-पोस कर इतना बड़ा किया—"

"हर हारा हुआ जुआरी उपदेश दिया करता है— सतीश ने टाई की गिरह को ठीक करते हुए कहा और मुँह पर क्रीम का लेप चढ़ाने लगा—इसके बाद सस्ती किस्म का पाउडर चेहरे पर लगाया—अरुण बैठा सिगरेट के कश लगाता हुआ उसे औरतों की तरह मेकप करते हुये देख कर मुस्कराता रहा—

"यह निगार—तुम्हें मिली कहाँ थी—?

"इसी शहर में—"

"मेरा मतलब है पहली मुलाकात में प्रेम कैसे हुआ—?"

"तुम तो यार ऐसे पूछ रहे हो जैसे कोई जासूस बातें पूछता है—"

"जासूस नहीं सतीश—मैं सोचता हूँ मैं भी प्रेम करना सीखूं—"

"अभी तो प्रेम का विरोध कर रहे थे—"

"प्रेम का विरोध नहीं वह तो उस वास्तविकता से परदा उठा रहा था जो अभी तक तुम से छिपी रही—मैंने अपने दिल की बात कह दी—अब तुम भी जरा बता दो—"

"नहीं मै नहीं बताऊँगा—तुम्हारा क्या भरोसा–सारे शहर में ढिंडोरा पीट दो—"

"नहीं—नहीं ऐसी बात नहीं सतीश—मैं ऐसा भूलकर भी नहीं कर सकता—मुझे केवल यह बता दो कि तुम्हारी पहली मुलाकात कहाँ हुई थी—? और कैसे हुई थी—?"

"मगर तुम्हें इससे क्या प्राप्त होगा—?"

"कुछ भी नहीं—केवल तुम्हारे बारे में वह जानकारी जो आज तक मुझ से छिपी हुई है—"

"अच्छा तो एक वादा करो—"

"क्या—?"

" इस भेद को केवल भेद ही रहने दोगे—तुम्हें अपनी प्रेमिका की सौगन्ध "

"सतीश—!" वह चौंक पड़ा जैसे किसी जहरीले बिच्छू ने डंक मार दिया हो—

प्रेमिका—एक लम्बी आह दिल की गहराइयों से निकलकर और सिगरेट के धुंएँ में मिल गई—शायद भूतकाल की सारी बातें उसकी आत्मा से बाहर निकल आई थीं—

"अरुण—क्या तुम्हें मेरी बात से दुःख हुआ है—?"

"दुःख तुहारी बात से होगा दोस्त जिसने मेरे जैसे आवारा आदमी को शरण दी—मगर सतीश इतना जरूर याद रखो कि मेरी प्रेमिका का चर्चा मत किया करो—उसे मैं हर तरह से भूल जाना चाहता हूँ—कहीं ऐसा न हो कि मैं फिर कभी जिन्दगी में भटक जाऊँ—फिर मेरी जिन्दगी वीरानों की तलाश शुरू कर दे—"

"खैर में इस बात के लिए क्षमा चाहता हूं।"

"क्षमा नहीं सतीश—इस जिक्र को ही छोड़ो—"

"हाँ तो मुझे यह बताओ कि निगार तुम्हें सबसे पहले कहाँ मिली थी—?

"सेक्टर बाईस में—"

"और फिर—"

"यह कल बताऊँगा—" सतीश यह कहकर बाहर निकल गया—

"निगार—"

"हाँ—" जवानी का गर्व बोल उठा—

"क्या तुम मेरा साथ इसी तरह देती रहोगी—?

"आगे किसका साथ दे रही हूँ—?" पलक उठे—

"मुझे तो डर लग रहा है—"

"डर तो अपराधियों को लगता है—तुमने कोई चोरी थोड़े ही की

है—" उसने साड़ी के पल्लू को उँगली पर लपेटते हुए कहा—

"न जाने क्यों मेरा दिल आज धड़क रहा है—अरुण की बातों ने मुझे अजीब सोच में डाल दिया है—"

"कौन अरुण—"

"वही मेरा दोस्त—"

"अच्छा वह—मोटी-मोटी आँखों वाला—दार्शनिक किस्म का बातूनी जो प्रत्यकक्षण किसी सोच में डूबा रहता है—"

"हाँ—हाँ—वही—"

"क्या कहता है वह—" जवानी की चंचलता ने अंगड़ाई ली—

"वह कहता है कि लड़की पर माँ-बाप का भी अधिकार होता है क्योंकि उन्होंने उसे पाल-पोस कर इतना बड़ा किया है—"

"मगर तुम भी कितने भोले हो कि उसकी बातों में आ गये—क्या इतना भी नहीं जानते कि माँ-बाप लड़कियों को अपने लिए जवान नहीं करते—बल्कि—" निगार ने लज्जा से आंखें नीची कर लीं—

"निगार—"एक प्यार भरा स्वर वातावरण में गूंजी और उसने मुसकराकर निगार का हाथ अपने हाथ में लेने का प्रयत्न किया···

"धत—यह सेक्टर बाईस है—यहाँ सारा चन्डीगढ़ संध्या को घूमने आता है अगर किसी ने देख लिया तो—"

"इस दुकान के अन्दर कौन आएगा—" उसने निगार के गालों—पर हल्की सी चपत लगा दी—

"गाहक और मौत का भी कोई समय नियत है—"

"प्रेम का भी तो कोई समय नियत नहीं है—"

"अच्छा तो आज कहाँ चल रहे हो—?"

Simple role played by Nigar

"मेरा विचार है कि पंजौर चला जाए—वहाँ बाग़ में कुछ बैठा जाए—आज मौसम भी कितना अच्छा है—! देखो आकाश पर कितने प्यारे-प्यारे बादल छाए हुए हैं—बिल्कुल इसी तरह जैसे कभी तुम्हारे चेहरे पर जुल्फें छा जाती हैं—"

"छोड़िये—आप तो मज़ाक करते हैं—" जवानी लजा गई—

"मज़ाक नहीं यह सत्य है निगार—तुम्हारे इस भोलेपन ने तो मुझे पागल बना दिया है—"

"और जनाब की दीवानगी ने मुझ पर जादू कर दिया है—जब से मिले हैं—लगभग एक हफ्ते में एक नाग़ा अवश्य होता है—इसका नतीजा क्या होगा—?"

"क्या होगा—?"

"साल बाद मैं फेल हो जाऊँगी—"

"पास होकर तुमने कौनसी नौकरी करनी है—!"

"नौकरी नहीं—यद्यपि माँ-बाप तो कहेंगे न कि फीस और समय नष्ट किया—"

"फीस मैं जमा करवा दूंगा—फीस भी कोई माने रखती है—" वह उसकी झील-सी गहरी आँखों में खो गया—

"आप मुझे यूँ क्यों घूर रहे हैं—?"

"जी चाहता है कि इन आँखों में खो जाऊँ—"

"अच्छा कविता छोड़ो—चलना है तो चलो—वरना कालिज का समय बीत जायेगा—"

"मगर एक बात पहले मेरी सुनो—"

"क्या—?"

"यह कान में कहूँगा—"

"लो बताओ—"

निगार ने अपना कान उसके मुँह के पास कर दिया—

फिर एकदम सतीश के प्यासे ओंठ विचलित हुए—उसने अपने ओंठ निगार के ओंठों पर यूँ धँसा दिये जैसे कोई सुन्दरतम फूल को चूम लेता है—वह नागिन की तरह बल खाकर पीछे हट गई—

"सतीश—मैंने तुम्हें पचास बार समझाया है कि ये हरकतें मेरे साथ न किया करो—" जवानी का गर्व रोष में भर उठा—गुस्से के मारे उसके चेहरे पर सुरखी की लहर दौड़ गई—

"मुझे क्षमा कर दो निगार—क्या करूँ—!"

"अब ज्यादा बातें न बनाओ—जल्दी चलो—ये सेक्टर बाईस है—कुछ ख्याल किया करो—"

"लेकिन दुकान पर—"

मैं हाजिर हो गया हूँ—" अरुण ने अपना सिगरट सुलगाते हुए कहा—

"हे भगवान—मैं तो प्रतीक्षा करते-करते थक गया—निगार तुम अरुण से तो परिचित हो न—यह देहली से आये हैं—मेरे बड़े अच्छे दोस्त हैं—दोस्त क्या भाई समझो—" सतीश ने फिर निगार का हाथ अपने हाथ में ले लिया—और उसके माथे के बालों को पीछे करने लगा—

निगार लजा कर पीछे हट गई—शायद अरुण का वहाँ रहना उसे खटक रहा था—

"अरुण को सतीश की ये भद्दी-सी हरकत बहुत बुरी जान पड़ी—उसने गुस्से के मारे मुँह पीछे कर लिया और सिगरट का एक लम्बा कश लगाकर बाहर देखने लगा—वह जानता था कि सतीश प्रेम के

मामले में बड़ा ही सस्ता है—वह प्रेम की गति को नहीं जानता—उसे यह समझ नहीं कि प्रेम एक पर्दा है जिस दिन यह परदे से बाहर आ जाये उस दिन प्रेम के बजाय साधारण संसारी वस्तु हो जाती है—

"अरुण—हम लोग ज़रा पंजौर तक जा रहे हैं—तुम बाद में ज़रा दुकान सम्भालना—" यह कहकर सतीश ने निगार का हाथ पकड़ा और आगे चलने लगा—

"ऐसे नहीं—सेक्टर बाईस से बाहर निकलकर मैं तुम्हारी मोटर साईकिल पर बैठ जाऊँगी—यहाँ से चलकर मैं रक्शा में सेक्टर १७ के पीछे खड़ी हूँ—"

"ये डर भी क्या मुसीबत है—!

"इस डर में ही प्रेम का जीवन है—" अरुण के ओंठों पर एक हल्की सी मुस्कान फैल गई—

"अरे—खाक है यार—यहाँ तो एक मुद्दत बीत गई—यह डर ही मिला है—" यह कहकर सतीश झुँझलाया हुआ बाहर निकल गया—

काले बादलों की टुकड़ियाँ आकाश पर ज़हरीले साँपों की तरह फुनकार रही थीं—किसी भी क्षण उनकी फुनकार धरती के सीने पर पानी ही पानी कर सकती थी—दूर शिमला की काली पहाड़ियां अनोखा दृश्य उपस्थित कर रही थी—ठंडी-ठंडी हवा के झोंके अल्हड़ नवयुवती की तरह अटखेलियाँ कर रहे थे—सतीश की मोटर साईकिल की रफ़तार इस समय पचास से ऊपर थी—न जाने क्यों वह निगार को पीछे बिठाकर मोटर साईकिल चलाने में एक नया आनन्द अनुभव कर रहा था—पीछे बैठी निगार घबरा रही थी—मगर उसकी घबराहट के साथ वह चाल में

श्रौर भी वृद्धि कर देता—शायद हुस्न का नशा उसे दीवाना कर रहा था—

पत्थर श्रौर तारकोल की काली सड़क के सीने पर मोटर साईकिल की घड़घड़ाहट बादलों की गरज में घुल-मिल जाती थी—श्रौर फिर जब कभी श्रासमान पर बिजली चमकती तो निगार किसा बच्चे की तरह सहमकर उससे चिपट जाती—श्रचानक एक पहाड़ी मोड़ पर जाकर सामने एक बस श्रा गई—सतीश को एकदम से ब्रेक लगाने पड़े—ब्रेक लगाने से निगार उछलकर उसके ऊपर श्रा गई—उसके सुर्ख गाल सतीश के कन्धे को पार करते हुए उसके श्रोंठों पर पहुँच गये—सीने के नुकीले उभार पीठ के साथ लगकर मसल गये—

"क्या कर रहे हो—?"

"मस्ती—"

"मगर मोटर साईकिल पर यह मस्ती श्रच्छी नहीं—" सुन्दरता घबरा गई—

"यह खेल तो हर वक्त ही हो तो श्रच्छा है—"

"मुझे पसन्द नहीं है यह खेल—"

"रूठ क्यों गई हो मेरी रानी—! इसमें मेरा क्या कसूर है—श्रागे से बस श्रा गई थी—विवशता से ब्रेक लगाने पड़े—"

"तो धीरे चलाया करो ना—"

"इस उम्र में मोटर साईकिल धीरे कहाँ चलती है—! श्रौर फिर बोतल का नशा—"

"क्या तुमने शराब पीनी शुरू कर दी है—"

"हाँ—"

"सतीश—!"

वह चिल्ला पड़ी—

"चिल्लाओ नहीं मेरी जान—शराब अब बोतल से नहीं पिया करता—"

"और कहां से पीते हो—?"

"तुम्हारी आँखों से जवानी की शराब पीता हूँ—"

"फिर वही बेहूदा मजाक—"

"यह मज़ाक नहीं सत्य है निगार—तुम्हें देखकर ही मुझे नशा चढ़ जाता है—"

"अच्छा बातें कम बनाओ आगे ध्यान रखो—"

"निगार ज़रा अपना मुँह मेरे पास कर देखो कहीं सचमुच मैंने शराब तो नहीं पी ली—"

"नहीं—मैं जानती हूँ—जो शरारत तुम करना चाहते हो—" बहानेबाजी तो कोई तुमसे सीखे—"

"यह बहानेबाजी नहीं—मैं तो अपनी सच्चाई बता रहा हूँ—मुँह सूंघ कर देख लो अगर शराब की बू आ जाय तो समझ लेना मैंने शराब पी है—अगर न आये तो मैं सच्चा—"

"इस सच-झूठ का फैसला बाद में करना—देखो पंजौर आ गया है—आगे कालका जाने का इरादा है—दिल तो करता है कि तुम्हें कालका से आने पर शिमला की पहाड़ियों में ले जाकर हमेशा के लिए इस दुनिया से अलग हो जाऊँ— वहाँ पर एक छोटा सा घर हो—बिल्कुल वीराने में—जहाँ तुम हो और में हूँ और तीसरा कोई न हो—इस छिछोरी दुनिया के डर ने हमें मार रखा है—हर वक्त डर ही डर है—"

सतीश ने मोटर साईकिल को ब्रेक लगा दी—और निगार का हाथ अपने हाथों में लेकर झूमता हुआ बाग में प्रवेश किया—

निगार—!

"हाँ—"

"यह फूल कितने अच्छे हैं—ये हरी हरी घास—ये फूलों से लदी हुई डालियां—ये खिला हुआ कुंज—यह बहारों का नृत्य आज कितना सुहाना लग रहा है—ऐसा मालूम होता है मानो आज सारी दुनिया की खुशियाँ सिमटकर मेरी गोद में आ गई हैं—"

("अब आप को आभास हुआ कि प्रेम क्या चीज है—?")

"वह तो उस दिन से ही हो गया था जब तुम मेरी दुकान पर रूमानी उपन्यास खरीदने आई थीं—क्या नाम था—?

"नई सुबह—"

"हाँ हाँ—वह नई सुबह थी—उसने मेरें जीवन में सचमुच नई सुबह ला दी और मैं अंधेरों की कोख को चीर कर प्रकाश में आ गया था—और वह प्रकाश चांद की चांदनी से भी उजली और शीतल है—"

"सतीश तुम चलने से पहले कह रहे थे कि मुझे डर लग रहा है—"

"हां निगार में इस अरुण की बातों से वास्तव में घबरा-सा गया था—इस जालिम की बातें इतनी डरावनी और सार्थक होती हैं कि कभी-कभी शरीर तो शरीर दिल भी कांपने लगता है—कमबख्त की ज़िन्दगी इतनी दर्द में डूबी हुई है कि खुशी का नाम तक भूल गया है—हर वक्त डर

ग्रौर भय की बातें करेगा—समाज का डर—दुनिया का डर—
—बिरादरी का डर—धर्म का डर—न जाने प्रेम के सम्बन्ध में उसने कितने डर गिनवा दिये हैं—अगर लिखने लगो तो पूरी किताब बन जाती है—"

"मगर उसे तो मैंने हर वक्त हँसते देखा है—!"

"यही तो उसकी सबसे बड़ी खूबी है—दुनिया के लिये वह हर वक्त मुस्कराता है—मगर एकांत में केवल आँसू बहाता है—मैंने अक्सर रात के एकान्त में उसे तस्वीर के आगे आँसू बहाते देखा है—"

"तस्वीर के आगे आंसू बहाते ?"

(एक हैरानी से झुके उबरू उठे)

"हाँ तस्वीर के आगे—?"

"किसकी तस्वीर के आगे—"

"एक लड़की—"

"लड़की की—निगार और भी चकित हो गई—"

"हाँ हाँ—वह लड़की जो समाज ने उससे छीन ली—वह लड़की जिसकी वह पूजा करता है—लेकिन उसे उसका नाम लेने का भी हक़ नहीं—वह लड़की जो उसे कुछ मुस्कराहटें देकर जीवन-भर के लिए आंसू देकर चली गई—वह लड़की जिसके प्यार ने अरुण को इतना दीवाना कर दिया है कि वह अब कुछ साँसों का भी मुहताज है—जिस के लिये अरुण ने घर-बार और रिश्तेदार छोड़ दिये—यह दुनिया छोड़ दी—

"मगर वह लड़की कहाँ है—क्या···वह···"

(लड़खड़ाती ज़बान)

"नहीं निगार ऐसी बात नहीं—अरुण की प्रेमिका इस दुनिया

में है—"

"फिर क्यों नहीं मिलती उससे—?"

"समाज का डर—दुनिया के बन्धन—बिरादरी की ज़ंजीरें—जब प्यार का गला घोंट देती है—तो इन्सान सिवाय आँसू बहाने के कुछ नहीं कर सकता—"

"सतीश—!" एक चीख के साथ निगार उसकी गोद में गिर गई—

"घबराओ नहीं निगार—" सतीश ने उसके गालों को थपथपाया—

"मगर समाज का डर—दुनिया के बन्धन—बिरादरी की ज़ंजीरें—सतीश यह सब कुछ मुझसे सहन न होगा—मेरी दुनिया तुम ही हो—केवल तुम—मैंने जवानी की पहली सीढ़ी पर केवल तुम्हें ही देखा है—कहीं ऐसा न हो कि…"

"निगार मैं तुम्हारा हूँ—केवल तुम्हारा—जब हमारा प्यार सच्चा है तो दुनिया की कोई शक्ति हमें अलग नहीं कर सकती—"

गड़ गड़……गड़—दूर कहीं बादलों की टक्कर से गरज के साथ भयानक बिजली चमकी—

"सतीश—!" निगार एक चीख के साथ उससे लिपट गई—

सतीश ने उसे बाँहों में यूँ भींच लिया, जैसे दुनिया की सब से प्यारी चीज उसे मिल गई हो—उसका रोआँ-रोआँ—किसी अदृश्य भावना से प्रभावित हो गरमी उगलने लगा।

"निगार…" उखड़ी साँसें—

"सतीश…"भावुकता में डूबा हुआ स्वर—

"मुझे थाम लो निगार … मुझे थाम लो … मैं दीवाना हो गया—"

"मैं स्वयं तुम्हारे सहारे की मुहताज हूँ—"

सतीश की निगाह निगार के फूल की पत्ती जैसे गुलाबी ओटों पर पड़ गई। यहाँ प्राकृतिक सुर्खी नाच रही थी—बनावट—लिपस्टिक की बू नहीं थी बल्कि कुदरती खुशबू थी—भीनी-भीनी सुगन्ध जो खिले हुए फूल से निकलती है उसके लम्बे बाल तेज हवा से उड़कर उसके मुँह से टकरा रहे थे—-बहारों की सारी खुशबू नथनों के रास्ते उसके शरीर में घुस रही थी—साँसें आपस में घुलमिल रही थीं।

ओंट कंपकंपा रहे थे—कुछ कहने के लिये—अभिलाषाओं ने जिह्वा गुंग कर दी—आँखों में एक अनोखी बेचैनी नाच रही थी—हल्की फुवार ने कामनाओं में और उन्नति कर दी—शायद वर्षा की कारण से ही बाग सूना हो गया था—

शरीर से शरीर टकराकर निराला वातावरण पैदा हो गया—बिल्कुल जैसे बादल से बादल टकरा कर चमकदार बिजली पैदा होती है—मगर इन बादलों के टकराने की कोई आवाज पैदा नहीं होती—शरीर हल्की आँच से सुलगने लगे—पतझड़ की पत्तियों की तरह कंपकपाने लगे।

"छोड़ दो मुझे—छोड़ दो—("जवानी की कसमसाहट)

"निगार तुम्हें छोड़कर में कहाँ जाऊँ—! (एक प्रार्थना)

"सतीश तुम अधीर हो रहे हो···तुम···"

"मुझे तुम ही केवल धीरज दे सकती हो—निगार···मैं···"

"नहीं सतीश—नहीं—तुम्हारी आँखों से पागलपन टपक रहा है—तुम्हारा जिस्म आग की तरह फुंक रहा है—तुम कोई भी गलत हरकत कर सकते हो—जिससे···"

"निगार……निगार……मैं……मैं—"

वह हकलाने लगा...

"नहीं सतीश मुझे छोड़ दो—क्यों भूलते हो कि मैं कुंआरी लड़की हूँ—"

"कुंआरी लड़की ही इस काम के लिये…"

"सतीश—!" वह चिल्लाकर उसकी गोद से अलग हो गई—

उसके ओंट हल्के-हल्के कांप रहे थे—छीना-झपटी में बाल उलझ गये थे—टाई की गाँठ खुल गई थी—शरीर बुरी तरह झुलसता जा रहा था—

"निगार—" वह चिल्लाया—

"सतीश तुम पागल हो गये हो—मैंने तुम्हें पचास बार समझाया है कि मुझे इन्सान के इसी रूप से ज्यादा डर लगता है—"

"मगर निगार…मैं…मैं…क्या करूँ—! आखिर मैं कब तक अपनी इच्छाओं का गला घोंटूं—!कब तक कामनाओं की आग में झुलसता रहूँ—कब तक भावनाओं का गला घोंटता रहूँ—! मैं पूछता हूँ निगार आखिर कब तक—!"

"जब तक हम ब्याह नहीं कर लेते—"

"अगर ब्याह ही कामनाओं की पूर्ति है तो यह कामनायें ब्याह से पहले ही क्यों पैदा होते हैं—?"

"भावनायें कभी भी पैदा हो सकती हैं मगर ब्याह केवल एक बार ही होता है —केवल बौद्धिक उद्देश्य की पूर्ति के लिये—"

"मगर मैं अब ज्यादा देर सहन नहीं कर सकता—मेरे सहनशीलता का प्याला भर चुका है—सच पूछो तो अब मुझे कारबार में भी कोई रुचि नहीं रही—"

"वह कारोबार ही किस काम का जहाँ तुम न हो—मेरी जिन्दगी न हो—"

"सतीश—मैं केवल तुम्हारी जिन्दगी हो सकती हूँ—या तुम मेरे हो सकते हो मगर ये मत भूलो कि कारोबार पर हम दोनों की जिन्दगियों का सवाल है—अगर यह कारबार नहीं होगा हम दोनों किसी काम के नहीं रहेंगे"

"निगार—जब तक सदा के लिये मेरे पास न आओगी—मैं दुनिया का कोई काम नहीं कर सकता—"

"सदा के लिये लाना आपका काम है—मेरा नहीं — मैं लड़की हूँ—अपने माँ-बाप के सामने इस बारे में कभी जवान नहीं खोल सकती—इस समय मेरी परीक्षा में केवल दो महीने बाकी हैं—बस परीक्षा होवे ही आप पिता जी से मिल लें—"

"मैं मिल लूं—!" उसके स्वर में हैरानी थी—

"हाँ—हाँ—और क्या मैं मिलूंगी—?"

"लेकिन मुझे तो—"

"कहो कि डर लगता है—"

"डर नहीं निगार—मैं ऐसी बात कैसे कह सकता हूँ—! मैं तो बिल्कुल अनाड़ी हूँ—"

"आप लड़के होकर इतने घबरा रहे हैं—मैं तो फिर लड़की हूँ—मेरा क्या हाल होगा—"

"अगर हम दोनों में से कोई नहीं कहेगा तो गाड़ी कैसे चलेगी—?" सतीश के चेहरे पर एक उदासी छा गई—

"मेरा विचार है तुम अपने पिताजी से कह दो ,वह मेरे पिता जी से बातें कर लेंगे—"

"लेकिन मैं उनके सामने ज़बान कैसे खोल सकता हूँ—?"

"फिर ब्याह का विचार दिल से निकाल दो—"

"क्यों—?"

एक तड़प के साथ उसने सुलगती नज़रें निगार के चेहरे पर गाड़ दीं—

"इसके सिवा और क्या हो सकता है — जब कोई बात ही नहीं करेगा तो क्या किसी को आकाशवाणी होगी कि हम एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते—"

"मगर यह बात कुछ कठिन है—किस तरह किसी से कहा जाय कि हमारा ब्याह कर दो—यह तो हमने सोचा ही नहीं था कि प्रेम हम दोनों करें शादी के लिए किसी दूसरे से स्वीकृति लें—अरुण ठीक कहता था कि प्रेमी से कहीं ज्यादा अधिकार लड़की पर उसके माता-पिता का होता है—अब मेरी समझ में आई बात।"

"तो फिर ऐसा करो कि अरुण से कहो कि वही इस उलझन का कोई हल निकाले—"

निगार के झुके पलक तुरत उठे—

"हाँ हाँ—वही कुछ कर सकता है—अरुण तजुर्बेकार है और मेरा दोस्त भी—वाह निगार तुमने तो बहुत बड़ी उलझन दूर कर दी—" उसने निगार को दोनों हाथों में खुशी से पकड़ लिया—और फिर प्रसन्नतावश ऊपर उठा लिया—

"अरे क्या कर रहे हो—?"

"घबराओ नहीं—यह सेक्टर बाईस नहीं — इस खुशी में एक हो जायें एक—"

"धत ! तुम्हें लज्जा नहीं आती—"

"जवानी में लज्जा—! वह भी एक चुम्बन के लिये--!"

चुप—मुझे यह मज़ाक पसन्द नहीं—"

"यह मज़ाक नहीं निगार मेरी ज़रूरत है—"

"इन्सान की हर ज़रूरत पूरी नहीं हुआ करती—"

"मगर यहाँ इस समय कोई नहीं—सब लोग वर्षा के डर के कारण भाग गये हैं—इस समय हम दोनों हैं—अगर ऐसे में एक हो जायें तो क्या हर्ज है—ज़रा तबियत बहल जायगी—"वह बच्चे की तरह ज़िद करने लगा—सारा भोलापन उसके चेहरे पर प्रकट हो आया था—

"मगर एक शर्त पर—"

"वह क्या—?"

"कि तुम काटोगे नहीं—"

"मंज़ूर—"

फिर वातावरण में किसी के ओटों की हल्की सी चुसकी सुनाई दी—जैसे चारों ओर भीनी-भीनी सुगन्ध का नाच शुरू हो गया हो—

"बहुत देर हो गई सतीश—जल्दी चलो—"

"निगार ने अपने आप को सम्भालते हुए कहा—"

"घबराओ नहीं—तुम मोटर साईकिल पर बैठो—पूरे तीन मिनट में सेक्टर बाईस पहुँचा दूंगा—"

"अरे सेक्टर बाईस नहीं—सेक्टर सत्तरह के पीछे..."

"ओह सारी—ये सेक्टर बाईस एक मुसीबत है—"

"मुसीबत नहीं ये चन्डीगढ़ की जिन्दगी है—"

"मगर अपनी जिन्दगी तुम हो—"

फिर मोटर साईकिल की गड़गड़ाहट बादलों की गड़गड़ाहट के साथ खो गई—

"अरे वह कहाँ गया—?

"कौन—?"

"अरे वही रांझे का भाई—मंजनू का बेटा—फरहाद का चचा—मिर्ज़ा का दमाद—सेक्टर बाईस का हीरो राजकपूर—"

"तुम्हारा मतलब सतीश से है—"

"हाँ यार तुम भी उसके गुरु हो—बात का मतलब पहले पूछते हो उत्तर बाद में देते हो—"

"बाले—तुम तो अकारण नाराज़ हो रहे हो—तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तो अपने आप को भी भूल बैठा हूँ—फिर सतीश के सम्बन्ध में कैसे जान सकता हूँ—?"

"देखो अरुण तुम ज्यादा बनने का प्रयत्न न करो—अब मैं चन्डीगढ़ आ गया हूँ— पहले पाँच साल तो देहली में बिता दिये हैं—"

"मैंने कब कहा है कि मैं तुम से ज्यादा समझदार हूँ—मैं तो कहता हूँ कि मेरे जैसा पागल दुनिया में नहीं मिलेगा—"

"यही तुम्हारा पागलपन तुम्हारी महत्वपूर्ण कृति है'—'

"अच्छा अब इस चापलूसी को रहने दो—कुछ काम की बात करो—"

"बात क्या है यार—सतीश से मिलने आया था—मगर निराशा हुई—देखो अरुण तुम इस कमबख्त को कुछ समझाओ—जमाने की रफ्तार इतनी तेजी से तबाही की ओर जा रही है कि तुम्हारा सतीश एक तिनके की तरह उड़ता नज़र आयेगा—कोई गुमनाम जगह हो तो प्रेम चल सकता है—यह कमबख्त सेक्टर बाईस है—यहाँ तो हर चीज ऐसे उड़ती है जैसे कि..."

"आखिर बात क्या है जो इतना लेक्चर झाड़ रहे हो बाले—"

"अरे यार तुम सदा भोला-भाला बनने का प्रयत्न करते हो—क्या वह निगार के साथ नहीं गया—?"

"निगार के साथ—" (आश्चर्य)

"मेरे भोले प्रेमी—तुम कब तक सतीश के इन गुनाहों पर परदा डालोगे जबकि हर दुकानदार निगार को जानता है—जब वह आता है तो लोग उसके एक-एक पग की आहट पर कान लगाये रखते हैं—सचमुच चीज़ भी बड़ी सुन्दर है—पतली कमर—उभरे हुए कूल्हे—कोमल शरीर—सीने का उभार...हाय...और उसके साथ आँखों में स्काच का नशा—भरे हुए गाल—जिन पर ज़रा-सी हँसी के साथ दो गड्ढे बन जाते हैं—और पतले ओंट जिन पर प्राकृतिक सुर्ख रंग फूल की तरह नाच करता दिखाई देता है..."

"बस बस...मेरे बाले—बस करो—तुम तो आज कवि बन गये हो—"

"कवि नहीं अरुण...यह सत्य है कि निगार सेक्टर बाईस की हीरोइन है—इसका उत्तर पैदा नहीं किया जा सकता—मगर हमारा सतीश—मुझे तो अब उसकी हालत पर दया आने लगी है—वह इस समय सारे सेक्टर की नज़रों में खटक रहा है—मुझे अभी साथ वाली दुकान से पता चला है कि सुबह-सुबह निगार आई थी—"

"क्या इन दुकानदारों को इसके सिवा कोई काम नहीं—"

"अरे प्रकृति का गहन सौंदर्य कौन नहीं देखता—!"

"देखने और सोचने में बड़ा अन्तर है बाले—मगर इस देश में नासमझी हद को पहुंची हुई है—यहाँ तो लोग शिकारी कुत्तों की तरह लड़कियों को सूंघते फिरते हैं—मैं कहता हूँ कि सतीश ने प्रेम करके क्या पाप किया है—अगर किया भी है तो इन लोगों को इसका

दुःख क्यों—? अगर निगार सतीश से प्यार करती है ता इनके पेट में दर्द क्यों होता है—? उनकी निगाहें निगार की प्रतीक्षा में क्यों बिछी रहती हैं—?"

"सच पूछो तो बाले जो लोग कुछ नहीं कर सकते वह केवल टीका-टिप्पणी करते हैं—दूसरों की बुराइयाँ ढूंढ़ने का प्रयत्न करते हैं—यह साथ वाला दुकानदार है न—इसकी उम्र कोई साठ से ऊपर होगी यानी कि निगार की उम्र की इसकी पोतियाँ हैं—मगर जब यह निगार को घूरता है तो यूँ मालूम होता है जैसे निगार के प्रेमियों में सब से पहला नम्बर इसका है—जब निगार सतीश के साथ निकलती है यह एक लम्बी सांस भरकर शान्ति से अपने सीने पर हाथ रख लेता है—जैसे इसकी सारी दुनिया लुट गई हो—और जब यह निगार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता तो अपनी असफल इच्छाओं की पूर्ति के लिए पड़ोस वाले दुकानदार के पास जाकर कहेगा—धर्मचन्द देखा तुमने कैसा ज़माना आ गया है—इन लड़कियों को जरा शर्म नहीं—साली यह इन्द्र के अखाड़े की परी किस ठाठ से आती है और कितनी बेहयाई से उससे बातें करती है—सच पूछो तो धर्मचन्द जी यह सब कलयुग का चिन्ह है—

हाँ... रामदास जी बिल्कुल कलयुग है—अपने जमाने में लड़कियाँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं—किसी दूसरे मर्द से बात तो क्या उसकी ओर मुँह उठाकर नहीं देखती थीं—"

"मुझे इस समय इतना गुस्सा आया है बाले—मैं बता ही नहीं सकता—मेरा दिल कहता है कि इन दोनों हारे हुए जुआरियों से जाकर कहूँ कि तुम्हारे ज़माने में यह सेक्टर बाईस भी नहीं था—"

"हा—हा—"बाले के माटे-मोटे ओंटों पर बड़े ज़ोर की हँसी फूट पड़ी—

"बाले हंसी की बात नहीं—बल्कि गम्भीर होकर सोचने की बात है—अब ये बूढ़े इस सेक्टर में आकर रुपये के दो बना रहे हैं—

यह बेचारे क्लर्कों का शहर—इन दुकानदारों की लूट का शिकार है—शायद ही इतना लाभ और किसी जगह दुकानदार लेते हों जितना यहाँ—फिर भी ये लोग पुराने ज़माने को याद कर रहे हैं—"

"रहते हैं सेक्टर बाईस में—बात करते हैं उन टूटे हुए गाँवों की जहाँ पैसा देखने को नहीं मिलता था—"

"हा—हा—ये भी खूब है—अरुण तुम्हारी हर बात में निरालापन है—खैर यह बात तो मुझे कभी नहीं भूलेगी कि जिस जमाने की तुम बात करते हो उस ज़माने में यह सेक्टर बाईस भी नहीं था—जब गाँव से सेक्टरों में नाम तबदील हो सकते हैं तो लड़कियाँ भी तो घरों से बाहर आकर बात-चीत कर सकती हैं—"

"और क्या—! इस देश की अल्प-बुद्धि पर रोना आता है।"

"खैर छोड़ो इस बात को—क्या आज रात को बोतल खुलेगी—"

"कहाँ— ?"

"वहीं अपने बीस में—"

"हाँ—बाईस में बुर्जुवा लोग ज्यादा रहते हैं—अपना बीस इस हिसाब से अच्छा है—"

"इसलिए कि साथ ही कोमलांगिनियों का रंगीन कालेज और ट्रेनिंग सेन्टर भी है—"

"यह बात अपने लिए क्या म त्व रखती है—आखिर इस जीवन में तुमने और मैंने क्या नहीं देखा—! यह सब, कुछ उन लोगों के लिये है जिन्होंने कभी औरत की सूरत नहीं देखी हो—"

"यहाँ सूरत तो क्या···"

"साथ ही पूरी अक्ल भी—" बाले ने वाक्य पूरा कर दिया—अच्छा छोड़ो—अब दुकान बन्द होने का समय हो गया है—"

"फिर प्रोग्राम पक्का है न—"

पूर्णिमा का चन्दा अपने यौवन की पूरी आभा बिखेरता हुआ शनैः शनैः ऊपर उठ रहा था—समय आठ से ऊपर हो जाने के कारण दुकानें बन्द हो चुकी थीं—होटलों की प्रतिक्रिया में त्वरागति आ गई थी—बड़े-बड़े होटल शायद दुकानें बन्द होने के बाद खुलते हैं क्योंकि दिन भर की हेराफेरियों और हर उचित और अनुचित कमाई गंवाने का समय रात ही है—जब इस अनुचित पैसे को कमाने वाले लोग प्रेम करते हैं तो निर्धन व्यक्ति केवल एक कामना भरी दृष्टि बाहर के बोर्ड पर डाल कर ही आगे बढ़ जाता है—वह अपनी परेशानियों को हल करने के लिए फिर सस्ते प्रकार के ऐश्वर्य का रास्ता ढूंढ़ता है और फिर यही ऐश्वर्य कानून की दृष्टि में जुर्म बन जाता है—उच्च वर्ग चिल्ला उठता है—

"यह जुर्म है—"

"यह कानून विरुद्ध है—"

"बार में बैठकर अंग्रेजी शराब पीना जुर्म नहीं—लेकिन चाँद की शीतल चाँदनी में बैठकर प्राकृतिक सौंदर्य से आनन्दित होते हुए दुख रहित होना जुर्म है—कानून का विरोध है—क्योंकि यह ऐश्वर्य केवल वही लोग उठा सकते हैं जो जुर्म नहीं करते—रिश्वत नहीं लेते—गरीबों का गला नहीं काटते—"

"अरुण—!"

"अरुण !"

"अरुण—अरे सो गये क्या—!" बाले ने उसे बांह पकड़कर

झिंझोड़ा—

"क्या बात है—?"

"अरे कब से जाम बनाकर रखा है तुम हो कि पता नहीं कौन-सी दुनिया में हो—!"

"हूँ तो इसी दुनिया में मगर मैं सोच रहा हूँ कि इस दुनिया में भी कितना ही अन्तर है—अब हम इस चाँद की चाँदनी में बैठकर शराब पी रहे हैं—वह भी सस्ती किस्म की—मगर कानून की दृष्टि में ये भी जुर्म है—हमें हर वक्त कानून का डर है—कोई भी साठ रुपये लेने वाला सिपाही हमें बाहों से पकड़कर कह सकता है कि तुम अनुचित काम कर रहे हो—"

"अनुचित काम है ही — पहले एक पैग पियो—तुम तो हर वक्त अक्ल से बातें करते हो —" बाले ने पैग अरुण के हाथ में देते हुए कहा—

फिर एक मिनट में प्याले से प्याले टकराये—कड़वी—कसैली—देसी शराब मुंह का स्वाद खराब करती हुई रगों में फैलकर इन्सान के सोचने की योग्यता को जगाने लगी—

"बाले तुम कह रहे थे ना—यह अनुचित काम है—"

"हाँ यार तुम दार्शनिक हो—बाल की खाल उतारते हो—"

"बाल की खाल नहीं बाले—मैं सत्य प्रिय व्यक्ति हूँ—इस समाज में हमें अभी तक उचित-अनुचित काम का पता ही नहीं चला—पाप क्या है पुन्य क्या है—? इसका फैसला अभी हम नहीं कर पाये—इस देश के विचित्र रिवाज हैं—अनौखे कानून हैं जो केवल उन लोगों पर लागू होते हैं जो कमजोर हैं जिनके पास पैसा नहीं — जो किसी मिनिस्टर के रिश्तेदार नहीं—जो किसी बड़े आफीसर के नातेदार नहीं—"

"देखो यहाँ बैठकर शराब पीना जुर्म है—मगर यार—जब इस शराब के साथ सोसाइटी गरल नाचती हैं तो उस समय यह पाप पुन्य बन जाता है—क्योंकि इसे बड़े लोग करते हैं—और तुम वहाँ जा ही नहीं सकते—फिर जरा शहर की ओर नजर दौड़ाओ—वजीरों से लेकर एक दुकानदार तक का निरीक्षण करते जाओ तो मालूम होगा यह लोग आज से कुछ साल पहले बिल्कुल साधारण आदमी थे—आज सब लखपति बन गये हैं—अपनी बिल्डिगें खड़ी कर ली हैं—इन फुटपाथों पर घूमने वाले हेराफेंरियों से कारों में सैर कर रहे हैं—"

हा...हा...हा—अरुण तुम फिर वही खुश्क बातें लेकर बैठ गये हो—जल्दी से एक डबल पैग पी लो क्योंकि तुम दिमाग से अभी काम ले रहे हो—यार इन खुश्क बातों को इन लीडरों के लिये रहने दो—प्रेम और प्रीति की बात करो—ऐसे रंगीन ओसर पर किसी लम्बी-लम्बी स्याह जुल्फों की बात छेड़ो—किसी के गोरे-गोरे गालों की बात करो—किसी के ग़ुलाबी ओंठों की प्रशंसा करो—किसी अल्हड़ नवयवती के उभरे हुए सीने की कहानी सुनाओ ताकि कामनाओं को तसल्ली मिले—"

"बाले—इस समाज के गलत कानूनों में सच्ची मुहब्बत सिसकियाँ ले रही है—सच्चा प्यार बासना की गोद में दम तोड़ रहा है—तुम खुद ही तो वह कहानी सुनाया करते हो कि किस तरह देहली में तुमने एक लड़की को गुन्डों के चँगुल से छुड़ाया था—वही जब १९४७ के दिन थे—जब इन्सान जंगली बन गया था—वह गुन्डे भरे बाजार लड़की के साथ मुँह काला करने का प्रयत्न कर रहे थे—"

"अरुण—"एक चिल्लाहट—

"बाले—तुम्हारी चिल्लाहट इस दुनिया में कोई सुनता भी है—मैंने तुम्हें बताया न कि यहाँ पाप—पुन्य है और पुन्य—पाप—तुमने कितनी

जवामर्दी से उन गुन्डों का मुक़ाबला किया—अपनी जान को ख़तरे में डालकर उस लड़की को छुड़वा दिया—मगर छुड़वाने के बाद तुम्हें कौन-सा सुख मिला—क्योंकि यहाँ गुन्डों के चंगुल से छुड़वाने के बाद भी समाज तुम्हारे ऊपर दोषारोपण करेगा—यहाँ जुर्म के लिए चौड़ा मैदान खुला पड़ा है—मगर भलाई के लिए एक इंच भी जगह नहीं मिल सकती — वह समस्या उस लड़की की थी—तुम उसे गुन्डों से बचा लाये—जब तुम से उसने यह सवाल किया कि मैं अब कहाँ जाऊँ—? मेरा इस दुनिया में कोई नहीं—मेरे रहने के लिये कोई जगह नहीं—मेरे मां-बाप—खत्म हो चुके हैं—मेरा कोई सहारा नहीं—"

"तुम सोच में पड़ गये थे—क्योंकि इस समाज में ऐसी जगह ही कहाँथी कि एक नौजावन लड़का और लड़की एक जगह इकट्ठे रह सकें—फिर तुम्हारे जैसे इन्सान जिसे लोग गुन्डा केवल इसलिये कहते हैं कि तुम अपना पेट भरने के लिये दुनिया का हर काम करने के लिये तैयार थे—मगर…"

"अरुण चुप रहो भगवान के लिये भूतकाल के घाव मत कुरेदो—" बाले बाकी बची शराब गले में उंडेलते हुए बोला—

"बाले मैं चुप कैसे रह सकता हूँ—?इतनी बड़ी नाइंसाफ़ी पर अपनी जबान पर ताले कैसे लगा सकता हूँ—? जबकि मैं जानता हूँ कि इस सच्चाई के बदले आज मैं ये सारी सजा भुगत रहा हूँ—सारा समाज और हकूमत मुझ से इसलिये डरता है और घृणा करता हैं कि मैं उन गुनाहों को नंगा करने से नहीं घबराता—मेरे मित्र—मैं जानता हूँ इस शहर में लोग तुम्हारे बारे में क्या-क्या राय रखते हैं—?"

"कोई गुन्डा कहता हैं—कोई तुम्हें जुएबाज की उपाधि देता है—कोई तुम्हें अनुचित कारोबार करने का हीरो कहता है—यद्यपि हालात

बिल्कुल इसके विपरीत हैं तुम जो कुछ भी करते हो केवल अपने आपको जीवित रखने के लिए—अपने बीवी बच्चों को पालने के लिये—अगर तुम यही काम करते होते जो ये छिछोरे लोग कहते हैं तो तुम भी सचमुच आज किसी कार के मालिक होते—यहाँ तुम्हारी अपनी बिल्डिगें खड़ी होतीं—तुम सुबह से लेकर शाम तक दुकान पर खड़े होकर ड्यूटी न देते—तुम इस चुप हाऊस में नहीं रहते—तुम प्रेम की बाज़ी भी न हारते—"

"अरुण—यार इन बातों से क्या लाभ है—किस को आवश्यकता है कि सच्चाई की ओर ध्यान दे—आज मेरी आँखों के सामने बेबस—भोली-भाली सूरत घूम रही है जिसको शरण देने के जुर्म में मुझ पर दुनियाभर के दोषारोपण किये गये—यद्यपि अरुण यह वास्तविकता है कि मैंने केवल इसलिये दुनिया-भर के काम छोड़कर एक मासूली-सी दुकान खोली कि उसे किसी तरह भी इस दुनिया से बचा सकूँ—मैंने उसको इसी मकान में अलग कमरा दे दिया—"

"मगर यह दुनिया बड़ी जालिम है अरुण—बड़ी जालिम—(आँसू)

"तुम रो रहे हो बाले—कहाँ हैं इस समाज के लोग जो तुम्हें अपराधी कहते हैं तुम्हें पापी कहते हैं—काश वह एक नजर तुम्हारे इन आँसुओं पर डाल सकते—काश वे एक बार सोच सकते कि अपराधी ऐसे आँसू नहीं बहाया करते—इस समाज का कानून इतना निराधार है कि अपराधियों की गरदन तक तो पहुँच ही नहीं सकता—"

"अरुण — मुझे आज वह लड़की याद आ रही है — न जाने वह..."

"बाले—तुमने उस लड़की के बारे में सदा मुझसे परदा रखा—कम से कम आगे की कहानी तो बता दो...उसके साथ क्या हुआ—?"

"आगे की कहानी—!" बाले ने फिर एक ठन्डी आह भरी और कुछ

कहने के लिए बोतल में से शराब उंडेलने लगा—

"रो कहाँ रहा हूँ अरुण—! यह केवल मुहब्बत के फफोले जरा दबाने से फूट जाते हैं—" बाले ने बड़ा पैग भरकर बिना सोचे-समझे मूँह से लगा लिया—जैसे प्रेम के सारे दुखों को घोल-कर इसी में पी जायगा—

"बाले—! तुम्हारी ओर देखकर तो प्रेम की पूजा करने को जी चाहता है—तुम में कितनी हिम्मत है—! कितना सहनशक्ति है—! इतने बड़े शोक को सीने में छिपाये रहते हो—मगर उफ़ नहीं करते—"

"—इस ज़माने में उफ़ करने से लाभ भी क्या है अरुण—! इस दुनिया का नीयम है—अपनी धुन में मस्त रहो—तभी तो मैंने जीवित रहने के लिए यह रास्ता निकाल लिया है—सुबह से लेकर शाम तक दुकान पर बैठा रहता हूँ—दिन ग्राहकों के साथ सरदर्दी करने में बीत जाता है—और रात सपनों पर निछावर हो जाती है—कुछ रातें तो इतनी तड़पाने वाली सिद्ध होती हैं कि नींद तक नहीं आती—फिर यह शराब—"

"अरुण—! तुम भी एक पैग लो यार—जान पड़ता है तुम्हें नशा नहीं हुआ—"

"मुझे नशा हो चुका है बाले—मगर मैं इसको प्रकट कम करता हूँ— क्योंकि मैं लोगों को यह नहीं बताना चाहता कि शराब ने मुझे पिया है—बल्कि यह बताना चाहता हूँ कि मैंने शराब पी है—"

"तुम्हारी बात निराली है—मगर यह सतीश जो तुम्हारा दोस्त है न अरुण—यह प्रेम को बहुत घटिया ढंग से कर रहा है—"

"अरे प्रेम की बात छोड़ो बाले—मैं तो केवल तुम्हारी कहानी

सुनना चाहता हूँ—

"अरुण वह शायर ने क्या कहा है—"

मेरा जीवन साथी बिछुड़ गया—लो खतम कहानी हो गई

"बस अब तो शराब ही अपनी कहानी है—अन्तर केवल इतना है कि लोग मनबहलाव करने के लिये पीते हैं—हम शोक भुलाने के लिये—इस पर भी लोग कहते हैं कि यह बदमाश है—"

"वह लोग स्वयं ही बदमाश हैं—हर व्यक्ति दर्पण में अपना भद्दा चेहरा देखकर सिटपटा जाता है—फिर हमें आवश्यकता ही क्या है कि हम ऐसे लोगों की बात सुनें—!"

मोटर साईकिल की गड़गड़ाहट ने अरुण की बातों को बीच में ही काट दिया—

"मालूम होता है तुम्हारा हीरो आ गया—"

"हीरोइन छोड़कर चली गई तो हमारे पास आ गया—"

"आओ भाई...आओ—मेरे नादान प्रेमी—

"मैं पहले ही जानता था कि तुम यहाँ ही होगे—"

"और हम जा भी कहाँ सकते हैं—!" अरुण ने बची-खुची शराब मुह में उंडेलते हुए कहा—

"मुझे तुम से बहुत जरूरी काम है अरुण—!"

"क्यों—? कुशल तो है—!"

"कुशल तो है...लो एक पैग पी लो अभी कुशलता ही कुशलता दिखाई देगी—" बाले ने शराब का भरा गिलास सतीश की ओर बढ़ा दिया—

"नहीं बाले मैं शराब नहीं पीता—"

"यह अभी नाबालिग़ है बाले—हर नाबालिग़ आदमी या तो

मां का दूध पीता है—या फिर प्रेमिका की आँखों से शराब—"

"हा—हा—" बाले बड़े जोर से दाँत फाड़ने लगा—जैसे उसे काफी नशा हो गया हो—

नाबालिग़—नाबालिग़—नाबालिग—वह कितनी ही देर तक कहता रहा—फिर खाली बोतल मुंह को लगा ली—

"अरुण—चलो अब शराब तो समाप्त हो गई है—"

"अच्छा भाई बाले—मैं चलता हूँ—जरा इस नौजवान की बात भी सुन लूं—मालूम होता है कुछ उदास है—"

"इसकी उदासी दूर करने के लिये एक बोतल और मंगालो—!"

"बोतल—!" सतीश ने आश्चर्य से पूछा—

"हां—हां—यार—चलो इस खुशी में आज हो जाय—एक बोतल तुम्हारी होने वाली बीवी—यानी हमारी नई,भाभो के नाम पर—" बाले शायद नशे में था—

"काश तुम्हारा कहना सच हो जाय—"

'सच क्यों नहीं होगा—! आज एक बोतल आ जाय तो सब सच हो जायगा—कुछ तुम पीओ—कुछ हम—"

"बाले—मैंने पहले भी कहा था कि सतीश अभी आँखों से शराब पीता है—जिस दिन आँखों की शराब मिलनी बंद हो गई—उसी दिन से लाल परी को पींना शुरू कर देगा—!" अरुण बीच में बोल पड़ा—

"मगर वह हमें नहीं मिलती न—हमारी प्रेमिका तो यह शराब है—शराब—हा—हा—हा—हा—ये कैसी वफादार है—सतीश दुनिया में कोई नहीं जानता—औरत बेवफाई कर जाती है—दुनिया का हर आदमी बेवफाई कर जाता है—मगर यह शराब—यह शराब कभी बेवफाई नहीं करती—कभी नहीं—तुम शायद यह नहीं जानते सतीश जब मेरी प्रेमिका को दुनिया ने छीन लिया था—जब मेरा कोई सहारा नहीं था—तो उस वक्त इसने मुझे अपने आंचल में आसरा दिया—मेरे आँसुओं

को अपने में समो लिया—मेरी आहों और सिसकियों को अपने में घोल लिया—फिर भी यह लोग कहते हैं कि शराब बुरी चीज है—शराब बुरी नहीं—बल्कि यह पाषाण हृदय दुनिया बुरी है—जो सजीले सपनों को नोच लेती है—जो दिल से दिल को अलग कर देती है—जो खुशियाँ छीन कर गम देती हैं—"

"और फिर हम गमों का उजाड़ने के लिए शराब पीते हैं तो दुनिया कहती है—शराब बुरी चीज है—शराब—" बाले शायद नशे में बोल रहा था—उसके सीने में टीस उभर आई थी—

"बाले चुप करो—लोग समझेंगे कि तुम शराब पीकर बहक रहे हो—" अरुण ने बाले को चुप कराने का प्रयत्न किया—

"अरे कौन साला बोल सकता है—शराब पी है—कोई चोरी तो नहीं की—ठेके से खरीदी है—वह भी गवर्नमेंट के ठेके से—सोहनसिंह—एक अद्धा और ला महाराजा मार्का—अरुण दुनियादारी की बातें कर रहा है—सचमुच शराब का मजा ही किरकिरा कर दिया है—उसे पीकर भी दुनिया का डर सवार रहे तो फिर उसको पीने का लाभ क्या है—"

"नहीं बाले—बस करो—।"

"बस नहीं—अरुण—शराब के लिए जो इन्कार करे उसका तो मैं दुश्मन हूँ—खाने के लिये इंकार कर दो—मगर शराब—शराब के लिये भूलकर भी इन्कार न करो—"

"मगर अब सतीश बोर हो रहा है—"

"सतीश को बोर नहीं होने दिया जायगा—सोहनसिंह इसके लिए एक चाय बनाओ—जरा मीठा तेज रखना—"

सतीश काफी देर तक बाले के चेहरे के उतार-चढ़ाव को देखता रहा—जो उस समय सुर्ख हो रहा था—बाले का यह रूप उसने पहली

बार देखा था—"

थोड़ी ही देर में सोहनसिंह महाराजा ब्रांड का अद्धा लिए आ रहा था—

बाले और अरुण उसके सामने पीते रहे—वह सामने बैठकर चाय की चिसकियाँ लेता रहा—शराब की बू सतीश के नथनों में घुसकर एक अजीब घृणा पैदा कर रही थी—वह विवशतावश बैठा रहा—क्योंकि अरुण के बिना वह जाना भी नहीं चाहता था—निगार के बाद एक वही उस का सहारा था—

वह था अरुण—!

"मगर तुम बताओ तो सही आखिर बात क्या है ?"

"यह घर चल कर बताऊँगा अरुण। यह कोई ऐसी बात नहीं जो राह चलते बताई जा सके—आखिर जीवन की समस्या है—कोई गुड्डे-ड़िया का खेल नहीं—"

"मैं तो समझता हूँ आजकल मुहब्बत कम और गड्डे-गुड़िया के खेल ज्यादा होते हैं—"

"यही तो तुम्हारी भूल है अरुण कि तुम हर चीज का ही मजाक में उड़ा देना पसन्द करते हो—"

"भूल मेरी नहीं सतीश तुम्हारी है तुम जानते हो कि मेरे जीवन में मजाक शब्द यों गायब हो गया है जैसे बेवा की मांग से सिंदूर गायब हो जाता है—"

"अगर इसे मजाक न कहूँ तो व्यंग्य कहना पड़ेगा—"

"व्यंग्य नहीं है—कोई भी दिल-जला दूसरे आदमी पर व्यंग्य नहीं

सकता—

"फिर—"

"फिर क्या दोस्त—यह तो उन दर्दों की टीसें हैं जो हमें जमाने ने मुहब्बत के बदले में दिए हैं—उन घावों की कराहट है जो समय ने हमें भेंट की सूरत में दी है—एक बात मेरी याद रखो सतीश—मैं कितना भी बुरा इन्सान सही मगर किसी मुहब्बत करने वाले का कभी मजाक नहीं उड़ा सकता। हाँ इतना जरूर कहूँगा कि जमाने की कठोरता का आभास कराये बिना नहीं रह सकता—"

"मगर इस कठोरता का इलाज—"

"जमाने से होशियार रहना—"

"जमाने मे कैसे होशियार रहा जा सकता है—?"

"यही तो एक चीज है जिस पर प्रेम करने वाले क्रियाशील नहीं होते।"

"बताओ तो सही अरुण—"

"देखो मेरे दोस्त सतीश—आज तुम्हें बहुत ही कड़वी बात कहने लगा हूँ—हो सकता है तुम इसका बुरा भी मान जाओ मगर फिर भी मैं इस बात को नहीं रोक सकता—"

"तुम बेधड़क होकर कहो मैं तुम्हारी बात का बुरा नहीं मनाऊंगा—"

"तो कान खोलकर सुन लो—मुहब्बत केवल एक पर्दा है—जिस दिन यह परदे से बाहर आ जाती है उसी दिन इसको जमाने-भर के खतरों का सामना करना पड़ता है—यह दुनिया इतनी नासमझ है सतीश कि मुहब्बत जैसी पवित्र चीज से भी घृणा करती है वह घृणा केवल इसलिए है कि लोग स्वयं कुछ नहीं कर सकते—यह तुम ध्यान से सोचो—इस शहर में जिसे हमें राजधानी कहते हैं क्या नहीं होता—!"

"बड़े-बड़े अफसरों—वज़ीरों—कलर्कों—चपरासियों तक रिश्वत लेते हैं—कोटे प्राप्त करके ब्लैक करते हैं—बिल्डिगें बनाकर सारी उम्र किराये खाते हैं—और हज़ारों हेरा फेरियाँ होती हैं—दुकानों की पगड़ियाँ ली जाती हैं—मगर ये सब कुछ उचित है—और प्रेम अनुचित—"

"यह सब पाप पुण्य हैं मगर प्रेम जैसी पवित्र चीज महान् पाप है—फिर भी तुम ऐसी दुनिया से कोई आशा रखो तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल होगी—" अरुण कुछ भावुक हो गया था—गुस्से के मारे उसका चेहरा सुर्ख नजर आने लगा था—जैसे अभी-अभी सारे समाज के ऊपर हमला करना चाहता हो—

"मगर मैं निगार के बिना जीवित नहीं रह सकता—तुम चाहे कुछ भी कहो अरुण...ये दुनिया जो मरजी कहती रहे—मुझे किसी चीज की परवाह नहीं—जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ—मुझे केवल निगार चाहिये और दुनिया की कोई चीज नहीं—"

"दुनिया की और हर चीज खरीद लोगे सतीश लेकिन दिल नहीं खरीद सकोगे—यही सबसे मुश्किल चीज है जो तुम चाहते हो—जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि इस दुनिया में मुहब्बत के सिवा हर गुनाह उचित है—"

"देखो अरुण तुम मुझे डर न दिलाओ—मैं तुम्हारे सहारे का मुहताज हूँ—मुझे यह नसीहतें न करो—बल्कि निगार को प्राप्त करने का रास्ता बताओ—सच जानो मैं निगार के बिना मर जाऊँगा—"

"सतीश—" अरुण चिल्ला पड़ा—

"तुम मुझे समझने का क्यों प्रयत्न नहीं करते अरुण—!"

"मैं तुम्हें समझकर भी यूं अनुभव करता हूँ जैसे अभी बिल्कुल कुछ नहीं समझा—मगर हालत की मजबूरियाँ कुछ इस तरह की हैं कि मैं

बहुत कुछ कहने के पश्चात् भी तुम्हें कुछ नहीं कह सकता—एक ओर तुम्हारे दिल का मामला है दूसरी ओर तुम्हारे कारोबार—एक ओर अगर तुम्हें मुहब्बत के रास्ते से मना करने का प्रतत्न करता हूँ तो तुम कहते हो मैं जीवित नहीं रह सकता—मगर दूसरी ओर तुम्हारा कारोबार है जो तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता—मैं स्वयं ऐसी उलझन में फँस गया हूँ सतीश जहां से कभी निकल नहीं सकता—"

"छोड़कर जाता हूँ तो दोस्ती के नाम पर कलंक लगता है—रहता हूँ तो दिल ही दिल में जलता हूँ—तुम से कुछ कहता हूं तो तुम गलत समझते हो—"

"अरुण तुम्हारी इन बातों का उत्तर मेरे पास कोई नहीं—मैं कहता हूँ कि तुम कोई ऐसा इलाज बताओ जिससे मेरे जीवन की यह उलझनें खत्म हो जायं—"

"तुम शादी कर लो—"

"शादी—" सतीश खुशी से उछल पड़ा—

"हाँ—हाँ—"

"यही सवाल तो मैं तुम से करने वाला था कि शादी कैसे करूँ—!निगार भी कह रही थी कि अरुण से पूछ लो—"

"मुझ से—! अरे मेरे भोले प्रेमी अगर मैं इस योग्य होता तो अपनी ही शादी क्यों न अब तक कर लेता—!"

"अगर अपनी नहीं कर सकते तो क्या हुआ—कभी डाक्टर ने भी अपना इलाज किया है—अब तो तुम हमारी चिन्ता करो—जल्दी से कोई ऐसा रास्ता बताओ जिससे निगार मेरे पास आ जाये—"

"तुम निगार के बाप से मिल लो सतीश—उससे मिलकर सारी इच्छाओं को प्रकट कर दो—"

"अरे बाप रे—निगार का बाप मिलट्री का रिटायर्ड आफीसर—

आजकल भी हर वक्त गले में पिस्तौल लटकाए रहता है—अगर कहीं उसने प्रेम शब्द भी सुन लिया तो गोली मार देगा क्योंकि वह तो अपने घर में कोई प्रेम की पुस्तक भी नहीं घुसने देता—"

बस उतर गया प्रेम का भूत—मैं न कहता था कि आज का प्रेम केवल सिनेमाओं के प्रेम की तरह होता है—अभी-अभी श्रीमान जी कह रहे थे कि मैं निगार के लिये दुनिया-भर का सामना कर लूंगा—निगार के बिना मेरा जीवन अधूरा है—मगर अभी उसके बाप से घबराकर कानों को हाथ लगा रहे हो—"

"नहीं यह बात नहीं है अरुण—मेरे डर में बुजदिली शामिल नहीं—लेकिन यह सत्य है कि मुझे निगार के बाप से बहुत डर लगता है—"

"बात वही हो गई जो मैंने पहले दिन कही थी—यानी कि लड़की पर प्रेमी से ज्यादा माँ-बाप का अधिकार होता है—माँ-बाप पहले—बाद में प्रेमी—क्यों है न यही बात—?"

"बात कुछ भी हो मुझे बोर मत करो—इसके अतिरिक्त कोई और रास्ता बताओ—"

"इसके अतिरिक्त—"अरुण बांयें हाथसे अपना सिर खुजाने लगा—

"हाँ याद आया—इसके अतिरिक्त—तुम एक पत्र लिख सकते हो निगार के माँ-बाप को—इन्सान जो चीजें जबानी नहीं कह सकता—खत में लिख देता है—इससे यह लाभ होगा, कि बात-चीत के द्वार खुल जायेंगे—"

"पत्र—" सतीश कुछ सोच में पड़ गया—

"इसके सिवा कोई चारा नहीं—"

"मगर पत्र में क्या लिखूं—"

"जो मरज़ी लिख दो—मतलब ही हल करना है—"

"मतलब हल करने के लिये तो मेरा ख्याल है यह भी काफ़ी होगा—"

मेरे प्यारे डेडी

आप को सुन कर खुशी होगी कि मैं निगार के साथ शादी......

"बस—बस—हो गई शादी प्यारे—तुम्हारे जैसे प्रेमी तभी तो जिन्दगी...भर रोते हैं जिन्हें एम० ए० पास करके पत्र लिखना भी नहीं आया—अरे मियाँ ये तो सोचो कि लड़की के बाप को पत्र लिख रहे हो—वह बाप जो प्रेम को ज़हर समझता है—जिसने अपनी लड़की की शादी पर न जाने क्या-क्या आशायें लगाई होंगी—"

"फिर तुम ही बताओ कि क्या लिखूं—?

"अच्छा अब सो जाओ बड़े-बूढ़े कह गये हैं कि रात की सलाह अच्छी नहीं होती—सुबह उठते ही मैं पत्र लिख दूंगा—"

रात भर अरुण सो नहीं सका—भूत और भविष्य उसके सामने ुंह फाड़े खड़े थे और वर्तमान की आग में वह स्वयं जल रहा था—एक ओर उसे लोग बेफिक्र नौजवान समझ रहे थे—दूसरी ओर मुहब्बत की आग अन्दर हा अन्दर उसे खत्म किए जा रही थी—इस आग की तिव्रता को सहन न करके उसने अपने घर-बार को छोड़ दिया था —अपना मारा वातावरण तबदील करके जीवित रहने की प्रयत्न किया—

मगर—यहाँ भी तो हालात ने उसे नहीं छोड़ा था—दुर्भाग्य साये के समान उसके पीछे लगा रहा—नये शहर का तजुर्बा भी फेल होता नजर आ रहा था—वह तो दलदल में फंसे हुए यात्री की तरह था। जो न इधर जा सकता है न उधर—एक ओर सतीश के जीवन का प्रश्न है दूसरी ओर वह स्वयं इतना विवश है कि किसी से कह भी नहीं सकता—वह गम को कितना सहन करने का आदी होता जा रहा है—वह जब भी कभी सतीश और निगर की भोंडी-सी मुहब्बत को देखता है तो सीने पर अंगारे लोट जाते हैं—यह बच्चे प्रेम शब्द के अर्थ नहीं जानते केवल इस पवित्र भावना को बदनाम कर रहे हैं—यह भी क्या मुहब्बत है कि दो माह पश्चात ही कह दिया कि मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकता जो प्रेमी जिन्दा नहीं रह सकता—उसे प्रेम करने का अधिकार ही क्या है—मुहब्बत तो जिन्दगी का सबसे बड़ा इम्तिहान है—

न जाने लोगों ने मुहब्बत को एक खिलौना क्यों समझ रखा है—जरा सी प्रेमिका आँखों से दूर हुई बस होश व हवाश को तिलांजलि दे दी—काम काज छोड़ दिया—बाल नहीं बनाए—दाढ़ी नहीं बनाई—कपड़े नहीं बदले—"

कोई पूछे—क्या हो गया—तो यह उत्तर मिलेगा—बस अब मैं इस दुनिया को छोड़ रहा हूँ—मुझे मेरी प्रेमिका नहीं मिल सकती तो मुझे इस काम-काज की क्या जरूरत है—इस दुनिया की क्या जरूरत है—"

उफ—कितनी सस्ती हो गई है मुहब्बत—! तराजू में तोलकर बिकने लगी—अरुण ने अपना निचला ओंठ काटा और सिगरेट सुलगाकर बाहर दालान में आकर सुलगते चाँद को देखने लगा—यह भी तो किसी की मुहब्बत में सदियों से जल रहा है—मगर इसकी जलन में भी कितनी प्रसन्नता है—यह कोई नहीं जान सकता—केवल वे लोग

जान सकते हैं जिन्होंने जीवन में कभी प्रेम किया है—और प्रेम के सारे शोक को अपने सीने में छिपा लिया—दुनिया के लिए मुसकराहट बिखेरी है और अपने लिये आँसू —

यही आँसू तो मुहब्बत के मारों की पूँजी रह जाती हैं—अगर उनको वह जमाने-भर में लूटवा दें तो उनका जीना क्या है—!

अरुण दिल ही दिल सोचता रहा—आसमान का चाँद लगातार जल रहा था—यही चाँद किसी समय कितना सुन्दर नज़र आता था··· जब उसकी बगल में संगीता थी—संगीता जिसने जीवन में पहली बार उसे एक पवित्र प्यार दिया—वह भावना दी जिन पर इन्सान की सांसें चलती हैं—

आज वही चाँद है—मगर संगीता नहीं—जमाने के पाषाण हृदय ने चाँद का आकार मानो बदल दिया है—यही प्रेमिका के होने पर रात का झूमर कहलाता है—यही चाँद संगीता के बाद रातों को सुलग रहा है इस में शीतलता के बजाय जलन पैदा हो गयी—सदा के लिये—

मगर यह सतीश—इस जलन को नहीं समझ सकता—ये नहीं जानता कि जब तुम अरुण के सामने बैठकर यही घटिया किस्म का प्रेम जताते हो तो उसके दिल पर क्या बीतती है—!

एक ही तरह की औरतों में कितना अन्तर है ! एक ओर निगार है—दूसरी ओर संगीता—निगार कितनी विशाल हृदय सिद्ध हुई—हर किसी के सामने वह सतीश से मिलती है और सतीश कितना घटिया है कि शादी से पहले वह सारे रास्ते देख चुका है—जो मुहब्बत में किसी सूरत में उचित नहीं और फिर हर किसी से खुले आम परिचय करवा देता है—यह है मेरी होने वाली—

मगर संगीता—कैसी लड़की थी—लज्जा की पुतली—भोली-भाली आकृति की मूर्ति—शराफ़त का सागर—जो दो साल तक उससे

खामोश मुहब्बत करती रही—जिसकी मान्यता आँखों के अतिरिक्त किसी और चीज़ से न हो सका—एक दिन भी वह उसे अपना प्रीतम न कह सकी—हृदय से जो मान्यता प्राप्त हुई वह दो साल बाद ज्ञात हुआ—

संगीता के झुकी-झुकी पलकें—अब भी सिगरेट के धूएँ में देख रहा था—सुन्दर बाल अब भी उसकी आँखों के सामने कंधों पर फैल गये थे—पतले-पतले-से लाल ओंट अब भी प्रेम की कहानी को दुहरा रहे थे—सीने की छोटी-छोटी गोलाइयाँ अब भी दुपट्टे के नीचे छिपी हुई थीं—

देखते ही देखते चाँद की चाँदनी में—संगीता का सब कुछ निखर आया—कल्पना का संसार सत्यता का रूप धारण करने लगा—

"संगीता—तुम आ गई संगीता—मेरा प्रेम कितना उच्च है—कितना पवित्र—मैं तो अब भी तुम्हें देखना चाहता हूँ—सारी दुनिया को भूलकर तुम्हे देख लेता हूँ—"

"यह सब उस पवित्र प्रेम की प्रेरणा है जो मेरे शरीर एवं आत्मा को छोड़कर प्रत्येक क्षण तुम्हारे पास रहती है—जब भी तुम इस स्वार्थी और धोखेबाज दुनिया की चिन्ता से मुक्त होते हो और मन की आँखें खोल लेते हो तो मैं तुम्हारे सामने खड़ी होती हूँ—क्योंकि मेरा तुम्हारा आत्मिक सम्बन्ध है—शारीरिक नहीं—" गुलाबी ओंठ थरथराये—झुकी पलकें हल्की-सी हरकत के साथ उठे—

"संगीता—मेरी संगीता—"अरुण ने अपनी बाहें आगे को फैला दिये ताकि उसे बगल में ले ले—छाया पीछे हट गई—

"अरुण—आत्मा को पकड़ने का प्रयत्न करो—तुम जानते हो मनुष्य के इस रूप से मुझे घृणा है—जब भी वह औरत को बगल में लेने का प्रयत्न करता है तो वह अपने आप को भूल जाता है—इस समय वह इंसान नहीं होता शैतान होता है—

"मगर संगीता मैं क्या करूँ—?"

"जो मैं कर रही हूँ—"

"मुझे तो यह भी नहीं मालूम—"

"मालूम करके भी क्या करोगे—आगे कौन-सा खुश रहते हो जो मेरे आँसूओं को देखकर खुश हो जाओगे—मगर यही आँसू तो प्रेम के उस पौधे का पोषण कर रहे हैं जिनकी छाया में आने वाली नसलों ने बैठना है—स्वार्थी और अवसरवादी लोगों को शादी के समय सोने के जेवर मिलते हैं—मुहब्बत करने वालों को—आँसूओं के जेवर—

"संगीता—तुम्हारे विचार कितने उच्च हैं—तुम्हारी भावनायें कितनी ऊँची हैं—

"यह सब तुम्हारी देन है—अरुण—यह सब कुछ तुमने ही सिखाया है—तुम्हारी संगति और पवित्र प्रेम ने मुझे साधारण साँसारिक लड़की से ऊँचा उठाकर एक आदर्श बना दिया है—अब मैं केवल एक आदर्श हूँ—"

"संगीता......"

"मुझे भूलने का प्रयत्न करो—मेरे ऊपर बहुत कठिन पहरे हैं—मुझसे तो अब तुम्हारा नाम ओंठों पर लाने का अधिकार भी छीन लिया गया है—तुम फिर दिल में मेरा नाम ले लेते होगे—मगर मेरे लिये यह सम्भव नहीं—कैसी यह दुनिया है—!"

"यह दुनिया—!" एक लम्बी सांस सीने की गहराइयों से निकली जिसमें दुनिया-भर का गम शामिल था—

"संगीता—वह स्वप्न जो कभी हमने देखे थे पूरे हो सकेंगे—"

"स्वप्न तो अब भी पूरे हैं अरुण—केवल सोचने और समझने का अन्तर है—"

"यह तो एक भरम है संगी.ा—जिसे छल कहा जा सकता है—"

"और मानव जीवन इसी छल पर खड़ा है—वरना जीवन के साथ मृत्यु शब्द इतना भयानक है कि इंसान एक दिन भी जीवित रहना पसन्द न करेगा—"

"संगीता तुम्हारे विचारों की उच्चता को पा लेना आसान नहीं है—"

"तुमसे अब भी कम है अरुण—तुम्हारे विचारों की दुनिया ने यह सब कुछ मुझे सिखाया है लेकिन तुम स्वयं क्या हो गये हो—? तुमने लिखना-पढ़ना क्यों बन्द कर दिया है—तुम्हारी कला—"

"कला का नाम न लो संगीता इस बारे में मैं अपने आप को गुमनाम रखना चाहता हूँ—अब यही गुमनामी मेरी जिन्दगी है—मैं नहीं चाहता कि किसी को भी यह मालूम हो कि मैं कलाकार अरुण हूँ—"

"अरुण—यह तुम मेरे साथ और अपने साथ जुल्म कर रहे हो—ईश्वर के लिये अपने कलम का सहारा न छोड़ो—ठीक है तुम इस दुनिया को छल सकते हो लेकिन मुझे—!"

"संगीता—मुझे इस बारे में मजबूर न करो—संगीता के बगैर मेरी कला अधूरी है—मेरे गीतों के स्वर टूटे हुए हैं—इन टूटे हुए स्वरों से अगर कोई स्वर निकल सकता है तो वह है संगीता—वह जमाने से सहन नहीं होता—यह दुनिया चाहती है कि मैं संगीता नाम से भी अपने कला का आरम्भ न करूँ—"

"अरुण—स्वर गीतों से कभी अलग नहीं हो सकते—स्वर—कला—गीत—राग—सब कल्पना की चीजें हैं—और दुनिया की कोई शक्ति इन विचारों को किसी कलाकार से नहीं छीन सकती—"

"संगीता बीते हुए समय को भूलने का प्रयत्न कर रहा हूँ—कला से मुझे क्या मिला—विरह शोक, आँसू और यह तनहाइयाँ—सुलगन—जमाने भर के व्यंग्य—सवाइयाँ—नफरत यह है इस प्रेम का परिणाम—!"

"अरुण—घबरा गये न आखिर—प्रेम में सफल होने वाले इतना नहीं पाते जितना खोने वाले—"

"मगर संगीता यह चीज तुम भी तो नहीं भूली कि प्रेम की असफलता के बाद मैं बिल्कुल निकम्मा इंसान बन गया हूँ—प्रेम के बदले में मैंने वह सहारे भी खो दिये हैं—जिसे लोग शब्द रिश्तेदारी के नाम से सम्बन्धित करते हैं। सब कहते हैं कि मैं एक आवारा इन्सान हूँ। जो प्रेम के सिवा कुछ कर ही नहीं सकता—संगीता यह युग अभी इस योग्य नहीं हुआ कि यह बातें समझ सके—प्रेम वह भावना है जो दुनिया के तमाम भावनाओं को समाप्त होने के बाद पैदा होता है—"

"जहाँ तक घबराहट का सम्बन्ध है संगीता—तुम्हें खोने के बाद अब कौन-सी घबराहट है—जो दुनिया में मुझे परेशान कर सकती है—फिर जिस आदमी ने सारी दुनिया को छोड़ दिया वह क्या घबरायेगा—अब तो जिन्दगी केवल तम्हारी यादों के सहारे है—"

"यही तुम्हें उजागर करता है अरुण और जो तुम्हें जमाने से अलग करता रहा है—"

"संगीता—काश तुम सदा के लिये मेरी हो जाओ—इस तरह सारी उम्र बातें करते बीत जाये और तुम मेरी बाहों में सिमट जाओ—मैं तुम्हारे इन कोमल ओंठों पर अपने ओंठ रखकर सारी उम्र की प्यास बुझा लूँ—मैं तुम्हारे इन मस्त नयनों से जीवन की सच्ची मादकता पी लूँ—इस सीने के कोमल उभार को अपने हाथों से मसल कर जीवन का वास्तविक आनन्द उठाऊँ—"

"संगीता—!"उसने अपने बाहों को अँधेरे में यूँ बढ़ा दिया जैसे संगीता को पकड़कर अपने जलते हुए सीने से लगा लेगा—

"परछाईं को पकड़ने का प्रयत्न न करो—"

"नहीं संगीता नहीं—में अब तम्हारे बगैर—" फिर वह अंधेरे में पागलों की तरह आगे बढ़ा—और किसी चीज़ से ठोकर खाकर औंधे मुँह गिर पड़ा—

"संगीता—!" एक दर्द-भरा स्वर उसके मुँह से निकलकर अंधेरे का सीना चीर गई—"

"अरुण—सतीश घबराकर कमरे से बाहर आ गया—

अरुण—तुम्हें क्या हुआ—?" दालान में औंधे मुँह लेटे हुए अरुण को उठाने लगा जिसके मुँह से खून की एक धार निकलकर पपड़ियों जमे ओंठों से होती हुई ठोढ़ी के नीचे से बहती हुई गले तक आ गई थी—

"कुछ नहीं हुआ—"(एक कंपकपाता हुआ स्वर)

"मगर तुम इतनी रात गये बाहर क्या कर रहे थे—?" सतीश ने उसे बिस्तर पर लिटाते हुए कहा—

"संगीता से मिलने गया था—!"

"संगीता से मिलने—!" (एक आश्चर्य)

"हाँ—हाँ—संगीता से मिलने—!"

"लेकिन संगीता—!"

"आजकल वह केवल कल्पना में ही आती है—और में कल्पना में ही उसकी आत्मा से बातें कर लिया करता हूँ और उसी उड़ान में मैंने उसको पकड़ने..."

अरुण—परछाईं कभी इन्सान के काम नहीं आ सकती—तुम कैसे भोले हो अरुण—ईश्वर के लिये यह पागलपन छोड़ दो—"

"यह पागलपन नहीं मेरे मित्र—यह तो सच्ची प्रेम की विभूतियाँ हैं—लोगों ने अगर संगीता को मुझसे छीन लिया है तो क्या शोक है मज़ा तो तब है जब मेरी आत्मा से भी उसे निकाल दे—"

"अच्छा अब ज्यादा मत बोलो—मुँह में से खून निकल रहा है—"

"यह खून नहीं सतीश—ये प्रेम की वह कहानी लिखी जा रही है जो कभी न मिट सकेगी—मुझे यह प्रसन्नता है कि मेरा खून प्रेम के काम आ रहा है—"

"सचमुच तुम हो पागल—अच्छा एक कप चाय पियो—"

"यह कृपा है तुम्हारी कि इस समय गरम-गरम चाय और एक सिगरट मिल जाय—"

"दयाल—"

"हाँ बाबूजी —!"

"जल्दी से चाय तैयार करो—"

"और तुम जल्दी से पेन और कागज ले आओ—"

"पेन और कागज—!"

"हैरान होने की क्या बात है—! भोले और नादान प्रेमी—! वह शादी का पत्र नहीं लिखोगे।"

"मगर अब—"

"हाँ—हाँ—अब तो समय है—प्रेम भरा पत्र किसी प्रेम भरे समय में ही लिखवाया जा सकता है—"

"हो पूरे खबती—"

"अपना ध्यान रखना—" अरुण के उदास ओंठों पर एक हल्की सी मुस्कान छा गई—

गरम-गरम चाय की प्याली के साथ सिगरट का धुँआ छोड़ते हुए अरुण किसी गहरी सोच में डूब गया था—सतीश पेन और कागज लिये प्रतीक्षा में था कि उसके जीवन का आज से नया युग आरम्भ होने वाला है—वह निगार के बाप को शादी के लिए खत लिखेगा—फिर दूल्हा बनकर घोड़ी पर सवार होगा—सेहरे बँधेंगे—शहनाइयाँ बजेंगी—फिर आग की गिर्द चक्कर काटे जायेंगे—

फिर निगार सदा के लिए इसकी हो जायेगी—"

"अरुण—जल्दी लिखाओ—"

"हूँ"—जैसे वह बहुत समय के स्वप्न से जागा हो—

"अरे खत—"

"हाँ — हाँ — पत्र लिखो—"

पूज्य पिता जी—!

नमस्ते

आप मेरा पत्र पढ़कर हैरान अवश्य होंगे क्योंकि आप मेरे नाम से परिचित नहीं—शायद अब तक कोई ऐसा सम्बन्ध भी नहीं जिसके नाते में आप को पत्र लिख सकूँ—मगर इस पत्र के पश्चात् शायद हम सदा के लिये एक अटूट रिश्ते में बंध जायँगे और न मैं आपके लिये अनोखा रहूँगा—और न आप मेरे लिए—

पूज्य पिता जी—बात जो सत्य है वह लिखते हुए मैं झिझक रहा हूँ—क्योंकि किसी भी छोटे बच्चे को अपने माँ-बाप के सामने इस तरह से जबान नहीं खोलनी चाहिये—मगर क्या करूँ—इसके अतिरिक्त अब कोई चारा नहीं था—फिर मनुष्यता के नाते जब सन्तान बराबर की हो जाय तो उन्हें घरेलू बातों में दखल देने का पूरा अधिकार है—

घरेलू शब्द मैंने समय से पहले अवश्य प्रयोग कर लिया है—मगर यह अनुचित नहीं—इस पर मेरा पूरा अधिकार है—वह भी इस कारण कि आप नये युग के मनुष्य हैं—और नए युग में हर वस्तु साफ और खुले दिल से होती है—और फिर आपने सारी दुनिया को अच्छी तरह से देखा है—मुझे आशा है कि आप संकुचित दृष्टि से काम नहीं लेंगे—क्योंकि मैं विचार और युक्ति पूर्ण बात कर रहा हूँ—इसे हर समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति सराहेगा—

मेरा विचार ही नहीं बल्कि मुझे पूरी आशा है कि इस पत्र के साथ मेरा पूरा जीवन बँधा हुआ है और इस नये जीवन का आरम्भ आप स्वयं करेंगे—आपके आशीर्वाद पर दो जीवन आधारित हैं—आपकी हल्की-सी हाँ और दया-भरे हाथ दो दिलों को सदा के लिए एक कर सकता है—और मुझे पूरी आशा है कि आप मुझे किसी तरह भी निराश न करेंगे—

यह ठीक है निगार आपकी इकलौती बेटी है और हर बाप अपनी बेटी की प्रसन्नता चाहता है—और मैं सौगंध खाकर कहता हूँ कि निगार के लिए मुझसे अच्छा लड़का कोई न मिल सकेगा—क्योंकि हम दोनों एक दूसरे को जीवन से अधिक चाहते हैं—प्रेम तो इस युग में साधारण सी बात हो गई है—इसलिये इस शब्द को प्रयोग करते हुए मुझे भय-सा लगता है—सत्य यह है कि मुझे निगार से और निगार को मुझ से हार्दिक प्रेम है—इसमें केवल आपके आशीर्वाद की आवश्यकता

है—ताकि आपके बच्चे प्रसन्नता के जीवन की यात्रा आरम्भकर सकें—

अधिक विस्तृत लिखना बेकार है क्योंकि आप समझदार हैं—अगर कोई गलती इस तुच्छसे हो गई हो तो अपना समझकर क्षमा कर दें।

आपका प्रिय
सतीश

"वाह—वाह—मजा आ गया अरुण—ऐसा पत्र तो स्वप्न में भी मैं नहीं लिख सकता था—आश्चर्य है तुम्हारी बुद्धि पर कि कितनी सरलता से इसका हल निकाल दिया—मेरी बुद्धि पर इतना बोझ था कि पागल हुआ जा रहा था—"

"आश्चर्य नहीं सतीश—प्रेम की असफलता है—जो कल्पना में मिलती है—संगीता के प्रेम ने ही तो मेरे व्यक्तित्व को उजागर किया है—वरना मैं भी एक साधारण सांसारिक पुरुष होता—

"आदमी तो तुम भी महान हो—" सतीश ने पत्र लिफाफे में बन्द करते हुए कहा—

"मेरा रंज मेरी महानता है दोस्त—मैंने तुम्हें पहले भी बताया था—प्रेम में पाने वाले से अधिक सफल खोने वाला रहता है—"

"और यही तुम्हारी थ्योरी मेरी समझ से बाहर है—"

"क्योंकि अभी तुम में लड़कपन है—"

"मुझमें लड़कपन हूँ—अरे फस्ट क्लास एम०ए० हूँ—उम्र छब्बीस साल से भी अधिक है—एक अच्छे कारोबार का मालिक हूँ—"

"और एक अदद प्रेमिका के प्रेमीभी —"

"हाँ—हाँ—इसमें क्या संन्देह है—" सतीश ने प्रेमिका का नाम सुनते ही अपनी तीस इंच चौड़ी छाती को चौड़ा करने का असफल प्रयत्न किया—

"यही तुम्हारा लड़कपन है—अभी तुमने प्रेम की कोई भी ठोकर सहन नहीं की केवल प्रेम किया है—वह भी पहली सीढ़ी पर—दूसरी सीढ़ी को आज तुमने हाथ लगाया है—सतीश यह एक सत्य है—जब तक यह छोकरियाँ मिलती रहती हैं मनुष्य दुनिया के शोक से अचेत रहता है—जब यह छोड़कर चली जाती हैं तो फिर आदमी का सहारा यही आँसू—तन्हाइयाँ—आहें—सिसकियाँ रह जाती हैं—इनको पीने के बाद आदमी सचेत होता है—"

"मुझे ऐसा सचेत नहीं बनना अरुण—मेरा तो लड़कपन ही भला—मुझे आँसू और गम नहीं चाहिएँ—यह तनहाइयाँ नहीं चाहिएँ कि रातों को उठकर पागलों की तरह परछाइयों से बातें किया करूँ। मुझे केवल निगार चाहिए—निगार—"

"हा ... हा ... हा... सतीश न इन्सान स्वयं सचेत बनता है न ही अचेत—सत्य तो यह है कि समय की तेज धारा हर चीज को बदलती है—समय की चाल को आज तक किसने रोका है—!" अरुण के ओंठों पर हँसी की लहर दौड़ गई—

"अच्छा छोड़ो इन बातों को—आठ बज गये हैं—नहा धोकर तैयार हो जाओ—दुकान का समय होने वाला है—"

"दुकान का या कालिज का—" अरुण फिर सूक्ष्म हँसी हँसा—

"दोनों का—क्योंकि प्रेम भी एक दुकान है—"

"यह दुकान तुम्हें प्राप्त हो—मैं तो वही अपने अंग्रेजी समय पर आ जाऊँगा—"

"अंग्रेजी समय कौनसा होता है हजूर—!"

"पूरे बारह बजे—"

"मगर आज शीघ्र घर को खाली करके दुकान पर पधारिए—"

"क्यों—?"

"तुम सब समझते हो यार—आज जरा—"

"समझ गया—" अरुण ने निचला ओंठ गुस्से के मारे दाँतों तले दबा लिया जैसे वह सतीश की इस हरकत पर अप्रसन्न हो—क्योंकि सतीश उसे कितने दिनों से कह रहा था कि मैं निगार को घर लाना चाहता हूँ—और घर लाने का मतलब वह जानता था मगर सतीश हठ करता रहा—वह कहता रहा कि निगार की भी यही इच्छा है—

अरुण ने अधिक कहना उचित न समझा क्योंकि इस आयु में शिक्षा कम ही काम करती है—भावनायें सदा बुद्धि पर परदा डाले रहती हैं—भावनाओं का नशा जब उड़ता है तब ही इन्सान सोचता है फिर पछताता है—देर तक वह दालान के कोने में खड़ा सुलगता रहा—केवल सिगरेट ही उसका साथ दे रही थी—रात भर उस दालान में संगीता से कल्पित वार्ता करता रहा—मगर दिन के प्रकाश में सब कुछ विलीन हो गया—

सवा दस बजे ठीक निगार आई—सतीश की आँखें तो पहले ही उसकी प्रतीक्षा में बिछी हुई थीं—निगार को देखते ही उसके ओंठों पर प्रसन्नता दौड़ने लगी—काउंटर से हटकर वह एकदम पिछले हिस्से में चला गया—अरुण ने तुरन्त ही काउन्टर वाली जगह संभाल ली—

"नमस्ते भाई साहब—" निगार के गुलाबी ओंठ गतिशील हुये—"

"नमस्ते—"अरुण ने झुकी हुई निगाहों से उत्तर दिया—और साथ ही पास वाली दुकान के साठ वर्षीय बूढ़े के मुँह को देखा—जो ललचाई हुई दृष्टि से निगार की ओर देख रहा था—उसकी पोजीशन इस समय बिल्कुल ऐसी हो थी जैसे कोई बच्चा हलवाई की अच्छी मिठाई को देखकर राल टपकाता है—मगर खरीदने से असमर्थ है—

हाय—उसने एक लम्बी साँस ली—जैसे मजनू ने बारह साल बाद अपनी लैला को देखकर ली थी—अरुण को इस बूढ़े की कामुकता पर सदा दया आती थी—क्योंकि एक तो इस आयु में कामुकता की भावना वैसे ही मर जाती है—मनुष्य की मानसिक कामना शेष रह जाती है। वैसे वह वास्तव में विल्कुल बेकार रहता है—फिर इसके साथ-साथ आयु भी एक विपरीत दिशा धारण करती है—फिर वह आदत अनुसार साथ वाले हमउम्र के पास जाकर वार्तालाप करने लगा—अरुण जानता था कि इस समय वही पत्थर और धात के युग की चर्चा करेगा—और इस के बाद कहेगा, देखा इन लड़कियों की निर्लज्जा की सीमा—आजकल तो दिन दहाड़े प्रेम करने लगी हैं—

"अरुण तुम यहाँ हो ही जरा मैं—!"

"मुझे पता है—" अरुण तुम अभी यह कह ही रहा था कि निगार अपने कूल्हों को मटकाती हुई पास से निकल गई—

"आप अभी दस मिनट ठहर जांय—"

"ठहरना ही पड़ेगा—वरना यह समाज के गिद्धों की आँखें न फट जांयगी—आज तो न जाने किस-किस की आँखें फटेंगी—

"अच्छा तो जनाब भी मज़ाक पर उतर आये—"

"यह मजाक नहीं सत्य है—"

सतीश चला गया—अरुण दुकान पर अकेला खड़ा था—वह जानता था सतीश आज कहाँ गया—

आज उसने घर को क्यों साफ करवाया है—अब तो निगार को कहेगा—देख अब डरने की कोई बात नहीं है—मैंने तुम्हारे पिता जी को शादी का पत्र लिख दिया है—अब तो कुछ दिनों पश्चात् हम एक हो जायेंगे—मैं दूल्हा बनकर तुम्हें ब्याहने आऊँगा—और तुम गले में जयमाल डालना—शहनाइयों की गूँज में डोली में बैठकर हम घर आ जायेंगे—

इसी घर में हम अपनी इन अभिलाषाओं की पूर्ति करेंगे—जो एक युग तक भटकती रही हैं—फिर वह रात आयेगी जिस रात की प्रतीक्षा हर नवयुवक को होती है—मैं धीरे-धीरे तुम्हारे पास आऊँगा—फिर लाल घूँघट लम्बा होता जायगा—और मैं उसे उठाने का प्रयत्न करूँगा—तुम शरमाओगी—लजाओगी—तुम्हारा चेहरा लाजवन्ती के समान लाल हो जायगा—

मेंहदी रचे हाथों में सुर्ख चूड़े की खनखनाहट कितनी शान्ति देगी—सफेद-सफेद हाथों पर सुर्ख-सुर्ख मंहदी—इन कोमल बाहों में सुर्ख चूड़ा—

हाय यह दृश्य जीवन में केवल एक बार आते हैं निगार—केवल एक ही बार—उस रात का आनन्द दो बार नहीं आता—उस रात के बाद फिर कोई नहीं लजाता—कोई घूँघट नहीं निकालता—फिर कभी सुर्ख चूड़े की खनखनाहट नहीं सुनाई देती—

अरुण ने एक लम्बी जमाई लेते हुए सिगरेट सुलगायी जैसे उसे उसके विचार से घिन आ रही हो—

समय से पहले किसी भी चीज का उपभोग करना बड़ा पाप है—फिर यह चीज—हे भगवान—उसने अपनी कुहनियों को दोनों हाथों में दबा

लिया—उसेसंगीता की याद ने फिर परेशान कर दिया संगीता जिस ने दो साल तक शब्द प्रेम को मान्यता भी नहीं दी थी—जिसने उसकी आखरी इच्छा को कुचलते समय कहा था कि अरुण मैं औरत हूँ—मुझे दुनिया में सब से अधिक अपनी इज्जत प्यारी है—तुम अगर उसे लूटने की प्रयत्न करोगे—मैं तुम्हारी ही दुश्मन हो जाऊँगी—प्रेम पूजा का नाम है शरीर को पा लेने का नहीं—शरीर हर जगह मिल सकता है—प्रेम के लिये कुछ हृदय विशेष हैं—

मगर सतीश तो सदा शरीर को पाने का आदी है—और आज—वह अपनी इच्छा को क्रिया शीलता का लिबास पहनाएगा—एक अनोखी मुस्कान उसके ओंठों पर फैल गई—

निगार—अब दुनिया का हमें कोई डर नहीं—अब केवल कुछ दिन की बात है-—केवल कुछ दिन की—इसके बाद अपनी तमाम आशायें पूरी हो जायेंगी—फिर ये डर-वर सब समाप्त हो जायेंगे—कोई टोक नहीं सकेगा—फिर हम खुले आम सेक्टर बाईस में हाथों में हाथ डाले घूमा करेंगे ।"

"सेक्टर बाईस—" निगार ने हैरानी से कहा—

"इसमें हैरान होने की कौन-सी बात है निगार—आखिर इन खूबसूरत जोड़ों को संध्या के समय सज-धजकर घूमते हुए देखकर हमारा भी तो दिल धड़कता है—हमारी अभिलाषाओं को भी ठेस लगती है—तुमने देखा कि रात के समय लड़कियाँ कैसे तंग मोहरी की शलवार—और जिस्म के साथ लगा हुआ चुस्त कमीज जिसमें कूल्हे बिल्कुल प्रकट हो जाते हैं—काली जुलफें कन्धों पर बिखराये कैसे घूमती हैं—"

"सतीश काश वह दिन भी आजाये, जब हम अपनी इच्छाएँ पूरी करें—जब हम आजादी से इस सेक्टर बाईस में घूम सकें—" (जवानी की सांसें धड़क उठीं)—

"वह दिन जल्द आयेगा निगार—" सतीश ने निगार के दोनों हाथ पकड़कर अपने सीने से लगा लिये—और फिर माथे पर बिखरी जुल्फों को पीछे हटाने लगा—निगार की निगाहें उठते ही सतीश की निगाहों से उलझ गई—और वह उसकी मस्त आँखों में यूं देखने लगी जैसे कोई गुम हुई वस्तु को तलाश कर रही हो—

"निगार—"(कामना-भरा स्वर)

"सतीश—"(प्रतिउत्तर स्वर)

"निगार—तुम मेरी हो—मेरे संसार का हर कण तुम्हारी सुन्दरता से प्रकाशमान है—मेरी हर सांस में तुम ही तुम हो—मेरी अंधेरी रातों का चाँद हो—"

"सतीश—" वह उसके सीने से लिपट गई—

दोनों दिलों की धड़कनें तेज हो गईं—कामनाओं के तूफान आत्मा की गहराइयों में मचलने लगे।"

"आज कितना अच्छा समय है निगार—! कितना अच्छा—! यह तनाइयाँ फिर हमें नसीब न होंगी—यह कोमल बाहें—यह मधु भरे नयन—ये सुन्दर बाल—मुझे अपने आप में समा लेने के लिये पुकार कर रहे हैं—तुम मेरे दिल के पास आ जाओ निगार—बिल्कुल पास—मेरे दिल की हर धड़कनें तुम्हें अपने-आप में समो लेने के लिये बेचैन हैं—(पाप की ओर झुकाव)

"मैं तुम्हारे हाथों में खिलौना-सी बन गई हूँ सतीश—मुझे कुछ पता नहीं क्या हो रहा है—मेरे अन्दर से धूँआं-सा उठ रहा है—मैं बेबस हो रही हूँ सतीश—" (जवानी की बिलबिलाहट)

"तुम्हारी जलन मेरी जलन में समा जायेगी तभी शान्ति मिलेगी—अमिट शान्ति—वह शान्ति मुझे तुम ही दे सकती हो—केवल तुम—दुनिया की और लड़की मुझे इतनी शान्ति नहीं दे सकती—"सतीश ने अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया और निगार बेबस परन्दे की तरह हो गई—

"सतीश—मुझे संभालो—में प्रसन्नता की खोज में निकली हूँ—मुझे तुम ही सुख दे सकते हो—केवल तुम ही—"

"तुम मेरे सिर में अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियाँ फेरो—तुम्हारे ओंटों से जो रस निकल रहा है—यही मेरी शान्ति है—इन्हीं ओंटों में दुनिया भर का अमृत समा गया है। यह तुम्हारे ओंठों का रस ही मेरा जीवन है—" फिर उसने निगार का निचला ओंठ अपने ओंठों में ले लिया—

और वह छुई-मुई कली की तरह बिस्तर पर गिर गई—

"मैं तुम्हारी हूँ—तुम्हारी—"

"मेरी—मैंने आज सब कुछ पा लिया निगार—सब कुछ—आज तुम मेरी दुल्हन हो—मैं तुम्हारा दूल्हा—देखो तो तुम्हारे चेहरे पर बिल्कुल दुल्हनों वाली लज्जा है—तभी तो तुमने आँखें मूँद ली हैं—" (भावकता का अतिशय—दिल की धड़कनें)

"मेरे सुहाग—"

"मेरा जीवन—"

"फिर वातावरण अभिलाषाओं के बोझ तले दबने लगी—"

"हम एक हो गये निगार—एक हो गये—" (सनसनाहट)

"मैं तुम्हारी हूँ केवल तुम्हारी—"

और फिर भावुकता ने लज्जा के परदों में आग लगा दी—

"तुम मेरी हो गई निगार—"

"अब हम दोनों दूल्हा-दुल्हन बन गये हैं—"

"मैं अभी तुम्हारे पिता जी को शादी का पत्र डाल रहा हूँ—"

"तुमने मुझे अपनी जवानी का सुन्दर और पवित्र फूल दिया है—"

"तुमने मेरी झोली में दुनिया-भर की वस्तुएँ डाल दी हैं—"

"अब तुम्हारे सिवा मेरा इस दुनिया में कोई नहीं—"

"मेरे देवता—" नुचे हुए सपने—टूटे हुए फूल बोल उठे—

सतीश ने निगार के चेहरे पर दृष्टि डाली—फिर उसके नंगे जिस्म की ओर देखा—जिसे अभी-अभी—

उसने घबराकर आँखें बन्द कर लीं—

' निगार—मेरा अभिप्राय हरगिज़ यह नहीं था—यह खेल—" हारे हुए मर्द की झूंझलाहट बाहर आ गई—

"परेशान न हो मेरे देवता—औरत जीवन में एक बार किसी को अपना बनाती है—"

"निगार तुम मेरी हो—देवी—ये लो मेरी ओर से सौगात—इस सुहाग रात का जो दिन में मनाई गई है—मैं अपने हाथों से तुम्हें पहना दूं—" सतीश ने एक वज़नी हीरे की अंगूठी निगार की उँगली में डाल दी—

"अब मेरी इज्जत तुम्हारे हाथ है—मेरे देवता—इस दासी को अपने चरणों से अलग न करना—शोख और चुलबुली निगार थोड़े से वक्त में ही गम्भीर हो गई थी—

"चिन्ता न करो—मैं प्रत्येक समय तुम्हारे साथ रहूँगा—"(मर्द की तसलियाँ)

"यह किताब कितने की है—?"

"मैंने कहा जनाब ये किताब कितने की है ?"

"आज आप सुनते ही नहीं—"

"जी—" वह यूँ चौंका मानो किसी गहरी नींद में था—

"मैं आपसे सम्बोधित हूँ—" फिर कोई मीठा स्वर उसके कानों में पड़ा—

उसने आँखे उठाकर देखा तो एक तेज व कड़ाके किस्म की लड़की अपनी काली जुल्फों को माथे पर बिखराये ओठों पर आवश्यकता से अधिक लाली पोते खड़ी हुई मुस्का रही थी—फिल्मी दुनिया की एक्सट्रा गर्ल मानो अपना पार्ट करते समय भद्दी-सी एक्टिंग करती है—

"मुझसे सम्बोधित हैं—कहिये मै क्या सेवा कर सकता हूँ—"

"आपके पास वह लेडी चटर्लजलवर है—"

"लेडी चटलर्जलवर—वह तो जब्त हो चुकी है श्रीमती जी—"

"यह तो मैं भी जानती हूँ—" उसने फिर लाली भरे ओंठ भोंडपन से फाड़ दिये—और कटे हुए बालों को पीछे को करने का असफल प्रयत्न किया—

"कमाल है आप जानते हुए भी मुझसे आशा रखती हैं कि मैं कोई कानून भंग करुँगा —"

"हा—हा—हा—आपकी कानून भँगी का जवाब नहीं—अभी नये-नये मियां आये मालूम होते हो—?"

"जी हाँ—हूँ तो नया ही—"

"तभी तो कानून से डरते हो—मेरा तो विचार है—कानून से वही लोग डरते हैं जो कानून नहीं जानते —"

"मैं कोई वकील नहीं हूँ—" अरुण ने उकताए हुए मूड में जवाब दिया—

"आप तो नाराज हो गये—भला कोई दुकानदार भी अपने गाहक से नाराज होता है—दुकानदारी घृणा का नाम नहीं प्रेम का नाम है—"

'जी—" अरुण ने एक उचटती सी दृष्टि सामने खड़ी औरत रूपी लड़की पर डाली—जिसने चेहरे पर हिमालय बके ब्रांड का लेप चढ़ा रखा था—और बुझी हुई आंखों में से एक कामुकता टपक रही थी—

"जी मैं दुकानदार तो अवश्य हूँ लेकिन गाहक को भी स्वयं सोचना चाहिए कि वह सौदा खरीदने आया है न कानून भंग करने को और अग्रसर करने—"

मैंने आपको कानून भंग करने की प्रेरणा नहीं दी बल्कि यूँही एक बात कही है वैसे तो इस शहर में हर पग पर कानून भंग होता है—

"होता होगा मुझे इससे क्या मतलब—आप कोई और सेवा बताएँ...

"तो आप कोई वही-वहानवी का उपन्यास दे दीजिये—"

"इसका उपन्यास रखना भी कानूनन जुर्म है—"अरुण उसकी आँखों में टपकती हुई शरारत का प्ररिक्षण करने लगा—यह औरत है या कोई —कभी लेडी चटर्लज लवर माँगती है कभी वही वहानवी—

"मगर यह कई दुकानों पर तो मिलते हैं—"

"श्रीमतीजी वह बड़े गन्दे उपन्यास हैं—किसी भी शरीफ़ खानदान के लोग उन्हें नहीं पढ़ते—"

औरत रूपी लड़की ने लम्बे-लम्बे बढ़ाये हुए नाखून जिनके ऊपर सुर्ख नेल पालिश जमी हुई थी—आबनूसी काउन्टर के कौने पर इस तरह रख दिये कि अभी अरुण के हाथों को अपने हाथों में ले लेगी—

मगर अरुण भी इसका परिक्षण अच्छी तरह से ले चुका था—वह जानता था—इसप्रकार की औरतों की मंजिल कौन-सी होती है—उसने

INDER RAINA.

तुरत ही हाथ पीछे हटा लिये—

"ए मिस्टर—आपको चाहिए कि आप इस सैक्टर बाईस को छोड़कर हरिद्वार चले जाँय और वहीं गंगा के किनारे बैठकर लोगों को उपदेश दिया करें—" इतना कहकर वह गुस्से से बल खाती हुई बाहर निकल गई—

साली आई है नसीहत करने अपने बापको—जैसे समझती है कि मैं इसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसकर दुकान लुटवाना शुरू कर दूँगा—और इस पौडर और लिपैस्टिक के बंडल के साथ बाजारी प्रेम आरम्भ करके अपनी जवानी को तबाह करूंगा—यह कहते हुए उसने सिगरेट सुलगाया—

"अरे किस को गालियां बक रहे हो—महात्मा कबीर—" बाले ने पीछे से उसके कंधे पर हाथ मारते हुए कहा—

"किस को गालियाँ देनी हैं बाले—हम तो अपने भाग्य को कोस रहे हैं—समाज का यह भयानक नक्शा देखकर डर-सा लगने लगा है—विशेषकर जब से यह साला फैशन मिडिल क्लास में आ घुसा है—सारा समाज गंदगी का शिकार हो रहा है—"

"कुछ कहोगे भी कि लैक्चर ही झाड़ोगे—"

"कहनेको क्या रखा है भाई मेरे—यह मिडिल क्लास की छोकरियाँ जब फैशन करके निकलती हैं तो अपने आपको फिल्मी हीरोइनों से कम नहीं समझतीं—और यह फैशन भी तमाम मिडिल क्लास में सिमिट आई है—जिनके पास खाने के लिये दोनों समय की रोटी बहुत कठिनता से होती है—वह भी अन्धाधुन्ध फैशन पर पैसे खर्च कर रहे हैं भगवान ने इन लोगों को भी इस अंग्रेजी शहर में जगह दे दी है—जो रहते थे मामूली-मामूली गांवों में या छोटे शहरों में..."

"इस शहर में आते ही उन्होंने अपने आप को देसी अंग्रेज बनाना आरम्भ कर दिया है—लड़कियों ने बाल कटवा लिये—तंग मोहरी की शलवारें पहन लीं—चुस्त कमीज पहन लिये जो शरीर के साथ बिल्कुल मिले रहते हैं और जो मानसिक उत्सुकता को भड़काने वाले अंग भी नंगे रखने शुरू कर दिये—ओठों पर से प्राकृतिक लाली गायब हो गई, तो सस्ती किस्म की लिपस्टिक लगानी आरम्भ करदी—चेहरे का रंग अगर उड़ गया तो पाउडर का लेप शुरू कर दिया—

"बस—बस—मेरे महात्मा बुद्ध—बहुत हो चुका—

विश्वास करो बाले यह मध्यम वर्ग दिन-प्रति-दिन तबाही की ओर जा रहा है—इसके पास खाने के लिये पैसा नहीं—मगर फैशन अवश्य करेगा। इस शहर में जो करप्सन फैल रही है उसमें सबसे बड़ा हाथ इस फैशन का है—चली आई है साली घर से—लेडी चटर्ल्जलवर लेने—वही वहानवी पढ़ने—"

"अब छोड़ो यार अरुण—तुम इतना गुस्सा मत करो—"

"बाले कमाल की बात यह है कि जब मैंने मना किया तो कहती है तुम गंगा के किनारे जाकर साधू बन जाओ—"

"ठीक ही कहती है—अब तुम किसी जवान औरत का दिल बहलाने के बजाय उसे उपदेश देना शुरू करोगे तो वह तुम्हें इसके सिवा और क्या कहेगी—?"

"मुझे ऐसी ही जवान औरतों से घृणा है—जो सस्ती किस्म का मेकअप करके सेक्टर बाइस में आ जाती हैं—ताकि नौजवानों के दिल तड़पा सकें—और यह आजकल की चारली चपलन नौजवान जिनकी हड्डियों तक को गिन लो—वह मुँह में उधार का सिगरेट दाबे लम्बे कश

लगाते हुए—

हाय की लम्बी आवाज निकालकर सीने पर हाथ रख लेते हैं—"

"इन नौजवानों की पतलूनें तुमने देखी हैं बाले—वही अमरीकन-जैसे लड़कियों की शलवारें शरीर के साथ मिली होती हैं वैसे ही इन नौजवानों की पतलूनें—दो जेबें पीछे लगी हुई—इन कमबख्तों की सेहत देखो तो हड्डियों के ढ़ाँचे हैं—मगर पहनते हैं अमरीकन पतलूनें—अरे जरा सेहत तो अमरीकन बना लो पहले—फिर अमरीका में तो कोई लड़का इस तरह किसी लड़की का पीछा नहीं करता जिस तरह अपने हिन्दुस्तान में है—वहां ऐसी घुटन नहीं जिस मुल्क की पोशाक पहनते हो=कभी उसके बारे में सोचते भी हो—वहाँ औरतों को पति नहीं मिलते—"

"यहां मर्दों को औरतें नहीं मिलतीं—दस-दस नौजवान एक-एक लड़की के पीछे यों दीवाने हुए फिरते हैं जैसे कभी हमने गांव में एक कुतिया के पीछे कई-कई कुत्तों को फिरते देखा था—"

"बाले एक ओर रूस के उन नौजवानों को देखो—मेरा संकेत गंगारिन और तितोफ़ की ओर है जो छब्बीस साल की उम्र में चांद का सफर कर के आये हैं—जिन्होंने अपने देश के लिये इतना बड़ा कार्य किया है जो सदा इतिहास में अमर रहेगा—

"मगर हमारा देश—क्या बताऊँ—यहाँ सेक्टर बाईस देखकर—बम्बई में चौपाटी—देहली में कनाट पलेस—कलकत्ता में चौरंगी—लखनऊ में हज़रतगँज—इन जगहों को देखकर यों मालूम होता है जैसे यहां के नौजवानों को देश के सम्बन्ध में कोई ख्याल नहीं—"

"बस करो—बस करो—मियाँ—तुम्हें तो वह लड़की ठीक कह गई है—तुम हरिद्वार जाके उपदेशक हो जाओ—तुम्हें मुल्क की चिन्ता खाये जा रही है—यद्यपि इस देश के नेताओं की कुरीतियां

अगर देखो तो अमरीका को भी भूल जाओगे—"

"यह सब कुछ उनका ही तो पैदा किया है—उनकी लीडरी इसमें सुरक्षित है कि नौजवान देश की बजाय अइय्याशी की ओर ध्यान दें ताकि उनकी गद्दियां सेफ रहें—"

"अब छोड़ो इस किस्से को—बताओ वह तुम्हारा हीरो कहां है—?"

"वह भी कहीं गया होगा—"

"कहीं गया होगा क्या मतलब—?"

"मतलब हर बात का न पूछा करो—"

"इसलिये कि निगार के साथ गया है—"

"जान-बूझकर तो मुझसे न पूछा करो बाले—"

"मेरा तो विचार है अरुण—इन दोनों की शादी करवा दो—ताकि यह कारोबार तो तबाह होने से बच जाये—"

"मेरी अपनी हार्दिक इच्छा है मैं स्वयं यही चाहता हूँ कि यह शादी जल्द से जल्द हो जाय—ताकि मैं भी आज़ाद हो सकूँ—"

इतने में सामने से मोटर की गड़गड़ाहट सुनाई दी—

"लो वह आगये—मिस्टर सतीश—सेक्टर बाईस के हीरो—"

"आज तो चेहरे पर प्रसन्नता है—"

"प्रसन्नता है या उदासी—" अरुण ने बात काट दी—

"देखो बायीं गाल पर अब तक सुर्खी लगी हुई है—" बाले ने व्यंग किया—

"हैलो—बाले क्या हाल है—?"

"अपना सुनाओ यहाँ तो सदा से एकही हाल चला आ रहा है—अब तो हम प्रेम के जगत से पेन्शिन पा रहे हैं—"

"पेन्शिन भी—सूद खोरी की—क्यों आज सुबह-सुबह सूद का पैसा वसूल करने निकल आये—"

"कोई सुबह-सुबह प्रेम करने जाता है और हम पेट का धन्धा करने निकलते हैं—"

"बाले—दुनिया में मनुष्य को दो ही तरह की भूख परेशान करती है—"

"एक पेट की—दूसरी बासना की—"

"बहुत अच्छे—सतीश—आज तो काम की बात कर गये—अरुण बीच में बोल पड़ा—

"यह तो अरुण बोल रहा है—सतीश नहीं—"

"इस समय तो मैं ही बोल रहा हूँ—"

"खैर फिर भी मुबारिक हो—" बाले यह कह कर साईकिल पर सवार हो गया—शायद उसे अपनी कोई पार्टी नज़र आ गई थी—"

सुलगते हृदय

दूसरी करवट

अंगारे
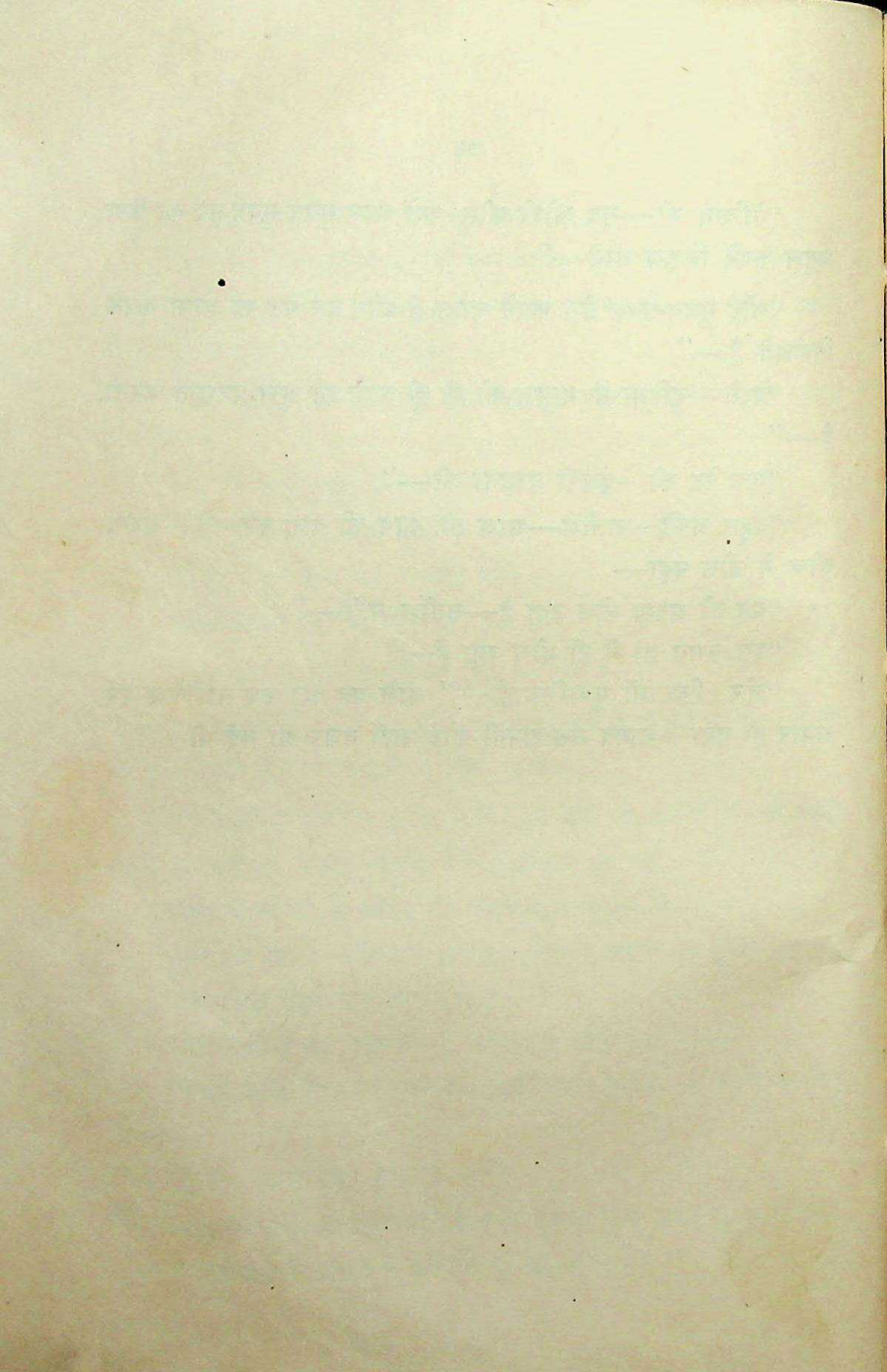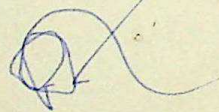
करवट—इन्सान ने जब भी करवट बदली तो उसे नये वातावरण से पाला पड़ा—और प्रेम की हर करवट जीवन और मरण की खिचावट होती है और सतीश ने निगार के पिता को पत्र लिखकर एक नई करवट बदली थी—इस करवट के साथ उसका पूरा जीवन सम्बन्धी था। सारी इच्छाएँ सम्बन्धित थीं—

वह हर रोज पोस्टमैन की प्रतीक्षा में आखें बिछाये रखता—उस आशा भरे पत्र के लिये—जिसमें शादी का निमन्त्रण होगा—जिसमें निगार के पिता के अपने हाथों से लिखा हुआ खुशियों का संदेश होगा—अब तो दुनिया भर की खुशियाँ इस पत्र के साथ ही जुड़ गई थीं—

मगर वह केवल प्रतीक्षा ही करता रहा—पत्र तो क्या कोई कागज का छोटा-सा पुरजा भी उस ओर से न आ सका—अगर कोई कारोबारी खत आ जाता तो वह उसे अरुण की ओर फेंक देता—जैसे कोई गले सड़े फल को फेंक देता है कारोबार से उसे तनिक भी रुचि न रही थी—

एक ओर तो पत्र का उत्तर नहीं, दूसरी ओर निगार की सूरत देखे हुए भी उसे हफ्ता गुजर गया था—उसने सोचा अच्छा शादी का प्रोग्राम बनाया—रोज के आनन्द से भी गये—सतीश का मुस्कराता चेहरा अब दिनों-दिन मुरझाने लगा—बहारें अब पतझड़ में परिवर्तित होने लगी थीं—उसने दाढ़ी बढ़ानी शुरू कर दी—कपड़ा बदलनी छोड़ दिया—नहाना धोना—तमाम घूमना-फिरना—सब कुछ का पूरी तरह

बाईकाट कर दिया—शायद निगार की विरह उसके लिये नष्टकारी सिद्ध हो रही थी—

अचानक चोट पर एक चोट और लगी—दुःख पर एक दुःख और पड़ा—दिल के घाव पर एक घाव और लगा जब उसे ये तार मिला—

मां बहुत बीमार है जल्दी चले आओ—

तार पढ़कर वह बौखला सा गया —उसे मां के पास से आये हुए अर्सा हो गया था—पिता से साधारणतः झगड़ा रहता था—क्योंकि उनकी इच्छा थी कि वह खेती करे—घर की जमीन की खेती करवाये मगर सतीश नहीं चाहता था कि मैं एम० ए० करने के बाद खेती करूँ। इन किसानों की कमाई पर जीवित रहूँ जो सारा साल परिश्रम करने के बाद आधी फसल हमारे घर में फेंक जाते हैं—जिनकी सारी ईच्छाएँ सिसकती रहती हैं—वह अपनी अधूरी इच्छाओं को पूरा करने के लिये सूद पर पैसा लेते हैं और ये पैसा वह आयु भर नहीं उतार सकते—केवल सूद ही देकर खुश हो जाते हैं—यद्यपि मूलधन से कई गुना पिता जी सूद वसूल कर लेते थे—

मगर फिर भो वह रकम ज्यों की त्यों उनके सिर पर खड़ी रहती थी-—इस अपराध व अन्याय—लूट खसोट का साथ वह न दे सका—वह जमीदार बनने की बजाय दुकानदार बन गया—गाँव के रीति रिवाज उसे पसन्द न थे। छोटी सी आयु में वहाँ हर एक की शादी हो जाती है—जब वह अपने पिता की ओर देखता—जिनकी शादी सोलह साल की आयु में ही हो गयी थी, और सत्तरह साल की आयु में बाप बन गये—जबकि वह बाईस साल की उम्र में एक विद्यार्थी था—

जब भी वह पिताजी के पास खड़ा होता था तो लोग उन्हें बाप-बेटे की बजाय भाई-भाई समझते थे—उसे गाँव के यह रीति रिवाज

पसन्द न थे—इतना पढ़ने के पश्चात् भी ऐसा जीवन बिताते हुए लज्जा सी आई—

इन ही चीज़ों से तंग आकर वह इस शहर में बस गया था—स्वाध्याय की उसे पहले से ही रुचि थी—गालिब—ज़ौक—इक़बाल—प्रेमचन्द टैगौर—बलटन—शीली--सैक्सपीयर—सारतरे—मेरी कोरीली—गोयटे और कई प्रसिद्ध व्यक्तियों की रचनाओं को उसने कालिज में पढ़ डाला था—यही कारण था कि उसने और काम करने की बजाय किताबों का धन्धा शुरू किया—किताबें ही जीवन का सुन्दरतम साथी हैं—

और यही किताबें, निगार को उस तक ले आईं—इन ही किताबों ने अरुण जैसा निःस्वार्थ और घनिष्ट मित्र दिया—अरुण का स्वास्थ्य और अध्ययन तो उससे भी कहीं विस्तृत था—अरुण ने हजारों नहीं लाखों किताबें पढ़ी थीं—अरुण की योग्यता और विद्वता का वह इतना लोहा मानता था कि उसके सामने स्वयं को बिल्कुल ही अनपढ़ समझता—फिर उसमें प्यार मित्रता और वफादारी कूट-कूटकर भरे हुए थे—आज तक लोग रिश्तेदारी का ढ़ोंग रचते आये थे—अरुण जैसे दोस्त ने उसका ऐसा साथ निभाया कि कोई रिश्तेदार भी नहीं निभा सकता—अरुण मनुष्यता की वह मूर्ति था जिस पर वह तो क्या आने वाला युग भी घमंड कर सकेगा—

"सतीश किस का तार है—?" अरुण ने घबराये मूड में उसे झिंझोड़ा—

तुम पढ़ सकते हो अरुण—" उसकी आँखों से दो मैली बूंदें टपककर उसके उदास चहरे पर झिलमिलाने लगीं—

"माँ सख्त बीमार है—"

"तुम जल्दी जाओ सतीश—जल्दी इसी समय—"

"माँ बीमार है—माँ—" अरुण स्वयं अपने आँसू न रोक सका—माँ एक पवित्र भावना का नाम है—जिस नाम को लेते ही दोनों ओंठ एक

दूसरे को चूम लेते हैं—दुनिया में दो ही प्यार हैं सतीश—माँ का या प्रेमिका का जिसका जवाब कोई नहीं पैदा कर सकता—

"अरुण—कैसा समय आ गया है—मैं मुसीबत में फँस गया हूँ—मेरे मित्र—इधर इतने दिनों से निगार नहीं आई—उधर माँ बीमार हो गई है—मैं क्या करूँ अरुण—!"वह बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा—

"रो नहीं सतीश—तुम जल्दी माँ के पास पहुँचो—जल्दी—कहीं ऐसा न हो कि उसे अपने इकलौते बेटे का शोक पागल कर दे—"

"अरुण—मैं अब किस मुँह से घर जाऊँ—जब पिता जी ने स्वयं ही कह दिया था कि अगर इस घर में रहना है तो उन के हर नियम को मानना होगा—अर्थात् सूदखोरी करनी होगी—हराम की कमाई को खाकर जीवित रहना होगा—"

"तुम पागल न हो सतीश—बड़े जो कुछ भी कहते हैं छोटों को सहन करना होता है—फिर तुम्हारी लड़ाई माँ के साथ तो नहीं थी—नियम और विचारों की लड़ाई में ममता का खून क्यों कर रहे हो—?

"अरुण—" ! सतीश चिल्ला पड़ा—

"चिल्लाने की आवश्यकता नहीं—"

"अरुण मैं जीवन की सबसे बड़ी उलझन में हूँ—मेरी आत्मा काँप रही है—मेरा दिल घबरा रहा है—कुछ समझ में नहीं आता मैं क्या करूँ—मेरे चारों ओर अन्धेरे फैले हुए हैं—कहीं प्रकाश का चिन्ह नहीं—न जाने मुझे क्यों डर-सा लग रहा है—मेरा विचार है तुम भी मेरे साथ चलो—मैं अकेला जा नहीं सकूँगा—"

"मुझे कोई ऐतराज नहीं मेरे दोस्त—अगर मेरे जाने से तुम्हारे शोक में कोई कमी हो सकती है—तो मेरा सौभाग्य है—अरुण का जन्म ही इसलिए हुआ है—"

"अच्छे अरुण—" यह कहकर वह उसके गले से लिपट गया—

"मेरा विचार है कि हम मोटर साईकिल पर शीघ्र ही पहुंच जायंगे —"

"मुझे कोई ऐतराज नहीं—"

और जब घर के दरवाजे पर उसने मोटर साईकिल रोकी तो घर के सब लोग बाहर निकल आये—

सतीश आ गया—सतीश आ गया—सारी हवेली उसी के नाम से गूंज उठी—

पिता जी ने उसे बगल में ले लिया—

माँ कहाँ है—! ने उससे बिलबिलाते हुए पूछा—

"अन्दर—तेरी ही प्रतीक्षा कर रही है—"

"माँ—"एक तड़प के साथ वह अन्दर की ओर लम्बे-लम्बे डग भरने लगा—"

"मेरे—बेटे—"माँ कमजोर बाँहें कपकपा कर उठी—और जल्द ही नीचे गिर पड़ी—

"माँ—माँ—मैं आ गया हूँ माँ—"

"और मैं जा रही हूँ मेरे बेटे—"

"माँ—"दुनिया-भर का दर्द उसके स्वर में भर आया—

"मेरे···सी···ने···से···ल···ग···जा···"और वह माँ के कमजोर सीने पर अपना सिर रखकर रोने लगा—

"रो···ते···ही···पगले···तू···आ···गया ··· पा··· नी···" उसने चमचे से माँ के मुँह में पानी डाला—"

'तू···ने···बहुत···देर···करदी···मेरे बेटे···"

"माँ तूने मुझे पहले क्यों नहीं लिखा···!"

"बेटे···तुम···बाप-बेटे के झगड़े में—मैं क्या कर सकती थी···तू भी···जिद्दी···है···वह भी"

नहीं—माँ—मैं—" वह मां के लड़खड़ाते स्वर को सुनकर घबरा गया···हजारों प्रयत्न करने के बाद उसके आँसू न रुक सके—

"तू···रो···रहा है···मेरे बेटे···रो नहीं···आज···आज रोने का दिन नहीं—" हिचकियां—

"पानी लो माँ—"

"मेरी माँ···जल्दी बोलो—मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी···"

"वह इच्छा···अब नहीं पूरी हो सकती···मैं तुम्हें··· दूल्हा··· बनते देखना···चाहती थी···तेरे सिर पर···सेहरा बँधे···देखकर··· मरना···चाहती···थी—"

"माँ— ' वह और बिलबिलाने लगा—

"प्रणाम माता जी—" अरुण ने अन्दर प्रवेश कर मां के चरणों में अपना सिर रख दिया—

"जीते···रहो···सतीश ये कौन है···?"

"माँ— यह मेरा भाई ही है—तुम्हारा नया बेटा—इसका दुनिया में कोई नहीं—"

"मेरे बेटे—इस पगले का ख्याल···रखना···मेरे बाद··· तुम ही··· इसको—"

"ऐसा न कहो माँ—ऐसा न कहो—"

"वह···समय···आ गया है···मेरे···बेटे···इसका··· हाथ···आज के···बाद तुम्हारे···हाथों···में है···" मां की आवाज रुक गई—

"मां—" वह पूरी शक्ति से चिल्लाया—मगर समय का देव अपना काम कर चुका था—

"अब······माँ नहीं—सतीश उसकी लाश है···" अरुण ने रोते हुए सतीश को अपनी गोद में ले लिया—"

घर में चारों ओर रोना पीटना फैल गया—

सारी हवेली—क्षण में आंसुओं का केन्द्र बन गई—

गाँव के लोग इकठ्ठे होने लगे—सारे गाँव की औरतें—रो-रोकर—अन्दर दाखिल होने लगीं—

मौत—कितनी भयानक चीज थी—हर वस्तु को शोक में डुबोकर चली गई—उस घर के साथ सारी खुशियाँ रूँठ गईं—

सतीश के सुन्दर बाल—मौत के कारण कटवा दिये गये—माँ का क्रिया-कर्म सब उसे ही करवाना था—उस समय उसे वहाँ रहना था—फिर उसको हरिद्वार ले जाकर गंगा में भी डालना उसी के जिम्मे था—अरुण इन रीति-रिवाजों को नहीं मानता था—रूढ़िवादी लोगों ने व्यर्थ ही ये गलत रिवाजें गढ़ रखी हैं—मरने वाला मर गया—उसका शोक क्या कम होता है—जो इतने सारे रिवाजों को और बोझ बनाकर उस पर लाद दी जायें—

मगर यहाँ तो सब रस्मों के पुजारी हैं—

सतीश को माँ की अस्थियां गंगा में डालने के लिये हरिद्वार जाना ही था और सतीश के साथ अरुण को भी—

वापस फिर अपने घर आ गया—मगर जीवन के सबसे पवित्र प्रेम को सदा के लिये समाप्त करके—दुनिया का हर प्यार कहीं न कहीं मिल सकता है मगर मां—मां का प्यार—यह कहीं नहीं मिल सकता—और अगर इस चिन्ता का इलाज कोई था तो वह भी निगार—

मगर निगार को देखे हुए भी उसे एक समय बीत गया था—वह राहें उसे वीरान और सुनसान दिखाई देने लगीं जहाँ से चलकर कभी निगार उसके पास आया करती थी—मगर अब इन राहों में केवल उसकी आँखें बिछी रहतीं—वह जवानी की मधुर चाल—वह गोरे-गोरे पावों में सुर्ख चप्पल—सब कुछ गायब था—

कभी-कभी तो उसने कल्पना में भी काफी धोका खाया—कल्पना ही कल्पना में निगार की तस्वीर बनाकर पीछे भागने का प्रयत्न किया—यद्यपि इस सड़क पर निगार के अतिरिक्त कोई और लड़की जा रही होती थी—मगर यह कल्पना भी मानव को कितना पागल बना देती है—जो हर लड़की के चेहरे को देखकर केवल अपनी प्रेमिका ही याद आती है—वैसें ही चिन्ह उसके चेहरे पर नजर आयेंगे—एक ओर मां की मौत का गम—दूसरे प्रेमिका का वियोग—

ये दो ऐसी घटनाएं थीं जिन्होंने उसे दुनिया से विरक्त-सा कर दिया था—कारोबार में कोई रुचि नहीं—खाना पीना—सब समाप्त केवल

अरुण के विवश करने पर दो चार ग्रास विषपान कर लेता था—कभी-कभी तो अरुण भी उसकी यह हालत देखकर डर जाता—मगर वह दिल ही दिल में सारी चिन्ता पी रहा था—इसके अतिरिक्त वह कर भी क्या सकता था—दोस्त की बरबादी उसे और भी तबाह कर रही थी—

जीवन पहले ही उसे काफी धोखा दे चुकी थी—मगर यह धोखा भी अनोखा और विचित्र था—यहां वह अपना शोक भूलकर दूसरे के शोक के लिए ही परेशान रहने लगा—वह सतीश को इस हालत में छोड़-रक भी नहीं जा सकता था—मगर इसके दुःखों का इलाज भी तो उसके पास न था—निगार के न आने से वह स्वयं भी परेशान था अगर निगार इन दिनों आ जाती तो सतीश को काफी हौसला हो जाता—मगर उसका न आना और भी दुखदायक था—फिर व्याह का पत्र लिखा जा चुका था—इसके बाद निगार का न आना संकट से खाली न था—

एक दिन—स्वभावतः सतीस उदास और परेशान बैठा किसी किताब का अध्ययन कर रहा था—अरुण सिगरट के कश लगाकर धुएँ के गोले बनाने और बीते विचारों में व्यस्त था—किसी के कोमल पद चाप सुनते ही सतीश की निगाहें उठीं—उसके सामने उसका खोया हुआ जीवन खड़ा था—

"निगार—" वह खुशी को रोक न सका—

'सतीश—पिछले हिस्से में आ जाओ—धीरे बोलो—"

निगार का स्वर बहुत ही सहमा हुआ था और वह तेजी से अन्दर चली गई—

"निगार—निगार—" वह पागलों की तरह उससे लिपट गया—जैसे कोई मुद्दतों का भूखा रोटी के टुकड़े से लिपटता है—

"तुम कहाँ चली गई थीं—! कहाँ—निगार! (चुम्बनों की वर्षा)—मै अकेला—! (उद्वेगी पुरुष की प्यास जगह-जगह से टपकने लगी थी)—मैं अकेला—!"

"मेरे सतीश—!" वह भी इससे लिपट गई थी—

"निगार मेरी माँ भी मुझको छोड़कर चली गई—"

"मां कहाँ चली गई—?"

"इस संसार से बहुत दूर—"

"क्या कह रहे हो सतीश—?"

"मैं क्या कह रहा हूँ—! प्रकृति की कठोरता ने मुझे कहीं का न छोड़ा—अच्छी वस्तु मुझसे रूठती चली जा रही है—हर प्यार मुझ से छिनता जा रहा है—मगर निगार तुम इतने दिनों से कहाँ थीं—"

"समय और समाज के चंगुल में—सतीश अब इसे निगार को भूलने का प्रयत्न करो—"

"यह क्या कह रही हो निगार—! इस निगार को भूलना तो अपने आप को भूलना है—कौन-सा ऐसा व्यक्ति है जो अपनी आत्मा को भुलाकर जीवित रह सकेगा—"

"विवशता सब कुछ करवा देती हैं—"

"नहीं—नहीं—" वह चिल्ला पड़ा—

"तुम्हारी और मेरी चिल्लाहट से कुछ भी नहीं होगा—न तुम स्वतन्त्र हो न में—पिता जी ने तुम्हारा पत्र पढ़कर हजारों टुकड़े करके फेंक दिया है—और इसके बाद मेरे साथ जो हुआ—वह सुनकर तुम सहन नहीं कर सकोगे—"

"क्या हुआ निगार—? क्या हुआ—? जल्दी बताओ—तुम्हें मेरी सौगन्ध है जो मुझसे कुछ छिपाने का प्रयत्न करो—"

"सतीश कोई ऐसी बात नहीं हुई जिसे नहीं कहा जा सके—यह तो मुहब्बत के साथ-साथ ही लिख दिया गया है—पिता जी ने वही किया—जो इस दुनिया के सब बाप करते हैं—मारपीट—गाली गलोंज—प्रेम की सजा इससे अधिक और क्या हो सकती है !"

"निगार यह क्या हो रहा हैं—! क्या हमारा प्रेम कोई इतना बड़ा पाप था—! जिसके बदले में यह सजा दी गई—यह मारपीट करने वाले लोग कुछ तो सोचें—"

हर आदमी अपनी परिस्थिति के अनुसार ठीक ही सोचता है—"

"मगर निगार तुम्हें मेरे पास तो आना चाहिए था—कम से कम मुझे तो बताया होता—"

"काश यह आना मेरे बस की बात होती—एक ही बहाना था कालिज आने जाने का जिससे हम लोग मिल लेते थे—वह भी बन्द कर दिया गया—"

"अब क्या होगा निगार—अब क्या होगा—!" वह उसके कोमल हाथ को पागलों के समान चूमने लगा—

"मुझे कुछ पता नहीं सतीश—मैं तो आखिर एक लड़की हूँ—जिसने तुम्हें अपना देवता समझकर सब कुछ सौंप दिया—मगर अब पिता जी कहते हैं—मैं तुम्हारा ब्याह ऐसी जगह करूँगा—जहाँ तुम सारी आयु सिसकती रहो—तुम्हें इस प्रेम की इतनी बड़ी सजा मिलेगी जिसको तुम कोई जन्म तक याद रखोगी—"

"निगार"—सतीश ने उसे फिर बाहों की पकड़ में ले लिया—जैसे अभी-अभी कोई उससे छीने लिये जा रहा हो—यह नहीं हो सकेगा

—नहीं हो सकेगा, मेरे जीवन में तुम्हें कोई ब्याह कर नहीं ले जा सकता—

"मगर तुम क्या कर सकते हो—! क्या करोगे-- !"

"मैं तुम्हें यहाँ से अभी भगा कर ले जाऊँगा—किसी दूसरे शहर में जाकर शादी करेंगे—निगार तुम मेरे सिवा किसी और की नहीं हो सकतीं—"

"अरुण—!"

"क्या बात है दोस्त—" अरुण भाग कर गया—

"तुमने सुना कुछ—वह लोग निगार की शादी कर रहे हैं—उसका कालिज जाना—घर से निकलना तक बन्द कर दिया है—"

"हाँ—"अरुण ने उदासभरी नजरों से सतीश और निगार को देखा और प्रेम का शोकमय फल देखकर चुप खड़ा हो गया—

"अरुण अब में इसे भगा कर ले जा रहा हूँ—"

"भगा कर—" अरुण चकित हो गया—

"हाँ—हाँ--मैं इसे यहाँ से भगा ले जाऊँगा—निगार मेरी है अरुण—केवल मेरी—मेरे जीते जी इसे कोई नहीं ले जा सकता—"

"इसका परिणाम सोच लो सतीश—"

"परिणाम इससे भयानक और क्या होगा—तुमने तो स्वयं ही कहा था कि जीवन तो जुए की बाज़ी है—अब समय आ गया है—इस पर खुल कर एक दाव लगाया जाय—

"मगर यह दाव इतना सरल नहीं जितना तुम समझ रहे हो—"

"कठिन या सरल का निर्णय समय पर छोड़ दो—अरुण तुम मुझे साहस दो ताकि मैं अपने मिशन में सफल हो जाऊँ—"

"यह कोई ऐसा फैसला नहीं सतीश, जिसके लिये मैं इतनी जल्दी उत्तर दे दूँ—सबसे पहले तो निगार से पूछ लो—कि वह तुम्हारे

साथ जा सकती हैं—इस राह में बहुत सारी कठिनाइयाँ हैं—यह मत भूलो कि तुम्हारे भागने के बाद पुलिस तुम्हारा पीछा नहीं करेगी—"

"मगर हम पुलिस के हाथ आयेंगे कहाँ से—हाँ निगार तुम पहले अपना विचार बता दो कि जीवन की इस अन्धेरी में तुम मेरा साथ दे सकती हो—!"

"सतीश—मुझे तुम कभी अपने से अलग न पाओगी—मैं तुम्हारी हूँ, मुझे जहाँ मरजी ले चलो—बाकी मुझे इस दुनिया के सम्बन्ध में कुछ भी तो जानकारी नहीं—क्या है— क्या नहीं—यह जब से होश सम्भाला है केवल तुम्हें ही देखा है—या इन मां-बाप को देखा था जो प्रेम करने के बदले में शत्रु बन गये—"

"बस—बस—बन गया काम निगार तुम अभी तैयार हो जाओ—

जोश के साथ होश का दामन न छोड़ो सतीश—सब काम इतनी जल्दी नहीं हो सकते—जितनी जल्दी तुम करना चाहते हो—जाने से पहले जगह का ठिकाना करना होगा—समय नियत करना होगा—भाग कर तुम ससुराल नहीं जा रहे जो तुम्हारी आव-भगत होगी—यात्रा है—नया शहर होगा—कम से कम जीवन की आवश्यकता के लिये रुपये पैसे—मामूली समान की भी जरूरत है कि नहीं—"

"मगर अरुण मैं अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता—ऐसा न हो कि इस प्रतीक्षा में ही वह लोग इसका ब्याह कर दें—"

"एक दो दिन का बीच देकर ही सारी समस्याओं पर विचार कर लो—"

"शायद निगार दोबारा इस दुकान पर न आ सके—"

"ऐसी कोई बात नहीं—तुम निगार को दो दिन का समय दे दो—इस दौरान में इसे सोचने का अवसर मिल जायगा—"

"हाँ—" सतीश किसी गहरी सोच में गुम हो गया—

"सतीश—मैं तुम्हारी भलाई के लिये कह रहा हूँ—मुझे जमाने का पूरा अनुभव है—फिर जाते समय माँ ने तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में दिया था—माँ का कहना मुझे हर तरह से पूरा करना होगा—"

"अरुण भैया—जैसे आप कहें मैं उसके लिए तैयार हूँ—" निगार ने झुकी नजरें ऊपर उठाईं—"

भैया—इस शब्द ने शायद उसके कानों में रस घोल दिया था—शायद बहन का प्यार मुद्दतों से मरा पड़ा था—अब उमड़ आया था—उसे किसी लड़की ने आज तक भैया न कहा था—निगार इस समय कितनी भोली लग रही थी—यद्यपि वह निगार और सतीश के बाजारी प्रेम को इतना पसन्द न करता था—मगर इन दोनों में भेद भी था कि आज तक उन्हें किसी ऐसी सोसाइटी में बैठने का अवसर ही नहीं मिला था—जिससे कुछ सीख सकते—मध्यम वर्ग का लड़का और लड़की इससे ज्यादा ठोस प्रेम क्या कर सकते थे—यह तो उसका ही अहोभाग्य था कि छोटी-सी आयु में हर प्रकार की सोसाइटी में बैठ चुका था—ताज होटल बम्बई—अशोका होटल देहली—ग्रेंड होटल कलकत्ता व हिन्दुस्तान के और सारे बड़े-बड़े होटलों से लेकर फुटपाथ के रास्ते में रैस्टोरैन्टों तक का आनन्द उठा चुका था—बम्बई के ईरानी होटल—देहली के ढ़ाबे—भला उसने किस में समय नहीं काटा—हर बड़े-बड़े लीडर के साथ विचार परिवर्तन कर चुका है—अध्ययन के लिये शायद उसने दुनिया की कोई किताब नहीं छोड़ी—

मगर उसके मुकाबले में इन शहर में रहने वाले लाख घूम-फिर लें—मगर जीवन के विस्तार से अलग रहेंगे—यह उन शहरों में रहते हुए कभी इतने बड़े हृदय के नहीं हो सकते—यही कारण है कि उनके प्रेम में अभी दृढ़ता के बजाय ओछापन है—यह केवल उनकी सीमित सोसाइटी का प्रभाव है—इसके लिए समय और जमाना ही जिम्मेदार है—यह दोनों नहीं—

"आप किस सोच में डूब गये—अरुण भैय्या—" निगार ने फिर अपने शब्द दुहराये—

"मेरी बहन, मुझे अपनी सोच परेशान नहीं करती—मैं केवल तुम्हारे लिये सोच रहा हूँ—मैं डर रहा हूँ इसका परिणाम—"

"अरुण तुम परिणाम के बारे में दुखी न हो—मुझे बताओ इसके सिवा अब कोई तरकीब है—और कोई ऐसा रास्ता मौजूद है जिससे हम एक हो जायं—" सतीश झुंझला उठा—

"ठीक है अगर तुम दोनों की खुशी इसी में है तो मैं कौन होता हूँ बीच में टांग फँसाने वाला—" यह कहकर अरुण कांउन्टर की ओर चला आया—

इसके बाद शायद सतीश और निगार कामुकता का प्रदर्शन करने लगे थे—क्योंकि अरुण को किसी के गालों के चूमने का स्वर सुना—

समय की चाल कभी नहीं रुकती और न रुकेगी—यद्यपि मनुष्य समय की प्रतीक्षा में अपनी चाल में कमी या अधिकता कर देता है और समय एक ही होता है चाहे आप उस समय में कोई विशाल कार्य करके संसार में नाम मशहूर कर लें या किसी का खून करके फाँसी पर चढ़ जायं—

समय वही है प्रयोग के ढंग में अन्तर है—

और इसी समय की प्रतीक्षा में अब सतीश वह घड़ियाँ गिन रहा था जब वह निगार को इस शहर से सदा के लिए भगा ले जायगा—इस स्वार्थी और स्वार्थसिद्ध संसार से बहुत दूर—एक नई दुनिया बसायेगा—जहाँ उसके और निगार के अतिरिक्त कोई न होगा—वहाँ की हर रात मस्त होगी—हर दिन प्रसन्नता पूर्ण होगा—यहाँ के डर समाप्त हो जायेंगे—

यहाँ छाई हुई वायुमंडल की उदास परछाइयाँ सदा के लिए दूर हो जायेगी—इनकी जगह बहारों के काफिले ले लेंगे—जाने के लिये अरुण ने बुधवार का दिन निश्चित किया था—एक ओर तो वह दुनिया का हर अच्छा काम करने के लिए बुधवार का दिन ही चुनता—दूसरी ओर ईश्वर की महिमा भी नहीं मानता था—

सतीश को भी यही दिन पसन्द था—

दुकान की सारी बची-खुची पूँजी तीन हजार रुपये नकद के करीब थी—जो अरुण ने बैंक से निकलवाकर सतीश के सुपुर्द कर दिये—यद्यपि सतीश आग्रह करता रहा कि इसमें से एक हजार रुपये तुम

अपने लिये रख लो—शायद तुम्हें कोई आवश्यकता पड़ जाये—मगर अरुण ने यह कहकर टाल दिया कि मैं अकेला आदमी हूँ मुझे किसी का बोझ तो उठाना नहीं—इस के लिए अब मैं कभी परेशान नहीं होता—क्योंकि अपने बाहुबल पर जरूरत से ज्यादा भरोसा है—फिर तुम घर से पहली बार जा रहे हो—पता नहीं बाहर किन-किन दुखों का सामना करना पड़े—

बाहर एक ही चीज मनुष्य की मित्रता निभाती है वह है पैसा—अरुण ने देहली में अपने एक वकील दोस्त के नाम पत्र दिया था कि वह हर मामले पर उनका साथ देगा—जब भी कभी आवश्यकता पड़े वह उससे सहायता ले सकता है—

और समय आगे बढ़ता रहा—नई आशाएँ और नई इच्छाएँ समय की गोद में मुस्काती रहीं—

वह दिन भी आ गया जब सतीश और निगार ने जाना था—सब तैयारियाँ गुप्त थीं—सिवाय तीन इन्सानों के दुनिया की किसी भी शक्ति को इसकी जानकारी नहीं थी—प्रोग्राम यही था कि निगार और सतीश यहाँ से अम्बाला तक मोटर साईकिल पर जायेंगे—अरुण "डी लक्स" की दो सीटें सुरक्षित करवा कर उसी से अम्बाला आ जायगा—क्योंकि गाड़ी से यात्रा में खतरा था—सब प्रोग्राम आसानी से पूरे हो गये—

वह दृश्य भी देखने योग्य था—जब अरुण—सतीश और निगार को विदाई कर रहा था—ये बिछुड़ने का दृश्य भी कितना दुख दायक होता है—जब जिह्वा विदा कहते हुए लड़खड़ाने लगती है और मन के दुख की गहनता दर्शाने के लिये आँसू आँखों से बाहर आ जाते हैं—

निगार भी फूट-फूट कर रोने लगी—

सतीश भी अपने आंसू न रोक सका—

अरुण शायद जीवन-भर शोक सहने के लिए पैदा हुआ था—इतने अच्छे दोस्त का विरह—जिसे वह भाइयों से अधिक प्रिय समझता था फिर वह इसी राह पर चल निकला था—जहाँ चिन्ताओं के अतिरिक्त कुछ नहीं—हजार प्रयत्नों के उपरान्त वह अपने आँसुओं को रोक न सका—

वातावरण देर तक आंसुओं के बोझ में डूबा रहा—

जब बस चलने लगी तो तीनों ही फूट-फूट कर रो रहे थे—वह अकेला मोटर साईकिल पर वापस जा रहा था—मगर हाथ-पांव—मन और बुद्धि—कोई चीज भी तो उसका साथ नहीं दे रही थी—इतने बड़े शोक में यदि कोई चीज हाथ बटा सकती थी—

तो वह थी शराब—

शराब की दुकान पर जाकर उसने सोलन विसकी आधी बोतल लेकर वहीं पान वाले की दुकान पर सोड़ा और गिलास लेकर आधी चढ़ा ली—विसकी के अन्दर जाते ही थके हारे शरीर में कुछ चुस्ती आई—और वह मोटर साईकिल पर बैठने के योग्य हो गया—आधे घन्टे तक तो इसका नशा रहेगा—इस समय वह बाले के पास जा कर कुछ गम हल्का करेगा—कमबख्त शराब भी कैसी चीज है, इसे भी एकान्त ही में पीने में आनन्द है—

जब वह चन्डीगढ़ पहुँचा तो बाले अभी दुकान पर बैठा हिसाब-किताब में ही व्यस्त था—शायद पीने के लिए सोच रहा था कि किस हिसाब से पी जाय—मगर अरुण ने सेक्टर उन्नीस से ही महाराजा ब्रान्ड की बोतल लेकर मोटर साईकिल के थैले में डाल ली थी—

"अरे वाह अरुण—बड़े ठीक औसर पर आये हो—मजा आ गया—मगर यह मोटर साईकिल तो उस फरहाद की थी जो शीरीं के लिए दूध की नहर खोद रहा है—"

"अरे वह नहर उसने पूरी कर ली है—इसलिये शीरीं स्वयं भी उसे मिल जायगी—तुम चिन्ता न करो बाले—"

"मगर यह मोटर साईकिल आज तुम्हारे पास कैसे—?"

"इसलिए कि फरहाद को शीरीं मिल गई और इसी प्रसन्नता में मोटर साईकिल मुझे दे दिया गया है—"

. "शीरीं मिल गई—"बाले के स्वर में हैरानी थी—"

"हाँ—हाँ—"

"मगर यह कैसे हो सकता है—?"

"सुबह अपने आप पता चल जायगा—" इसी बात पर अपनी शीरीं की बात करो—"

"अरुण—अपने शीरीं का क्या हाल है—ठीक है पैसे दो ले लो—"

"मगर आज वहाँ जाने की आवश्यकता न होगी—" अरुण ने मोटर साईकिल खड़ी कर दी—महाराजा ब्रान्ड शराब की बोतल काँउन्टर पर रख दी—

"वाह मेरे यार—! आज तुम जरूर किसी घटना का शिकार हुए हो—और मेरा अनुमान है तुम पहले मैटर चला चुके हो—"

अरुण यह शब्द मैंटर सुनकर बड़े जोर से हंस पड़ा—क्योंकि यह वाले के प्रत्येक वाक्य का एक बोल था—हर बात में वह इस शब्द का प्रयोग आवश्यक समझता था—विशेषकर शराब के प्रयोग पर या पीते समय —पीने से पहले—पीने के बाद—तो—'मैंटर" का शब्द हर वाक्य में फिट हो जाता था—जैसे कोई सर्राफ अंगूठी में नगीना जड़ देता है···

"यह मैंटर तो अब जीवन-भर चलेगा बाले— इस मैंटर के अतिरिक्त हम दुःख के मारों का है भी कौन—?"

"आइये—आइये राठी साहब—" वाले बीच में ही बात छोड़कर किसी दूसरे आदमी की ओर ध्यान देने लगा—

"सुना भई—आज तेरा मैंटर चलया कि नहीं—" (सुना भाई तेरा मैंटर चला है कि नहीं)

"तुसी आ गये हो बादशाहो हुन मैंटर चलदा ई—" (आप आ गये हैं अब तो मैंटर ही चलेगा)

"पहले आप से मिलिये—महाशय अरुण साहब—आप किसी समय देहली रहते थे—आजकल चन्डीगढ़ में हैं—और मेरे मित्र होने के साथ-साथ सतीश के भी मित्र हैं—"

"और आप हैं महाशय राठी साहब—इस राजधानी के प्रसिद्ध व्यक्ति—"

"वह सतीश सैक्टर बाईस वाला—" राठी ने अपना हाथ उलझे हुए बालों में फेरते हुए कहा—

"अरुण राठी के कसरती और गठे हुए शरीर—मोटे-मोटे हाथ, नशीली मगर छोटी आंखें— चेहरे पर सादगी के साथ-साथ सोच की उभरतीं लकीरें और छिप जातीं थी — आवाज बारीक मगर आकर्षक थी—देर तक उसके व्यवितत्व का निरक्षण करता रहा क्योंकि इस

से पहले भी बाले उस आदमी की सारी कहानियाँ सुना चुका था—"

"फिर आज ते मैटर कट्ठा चलेगा—"(आज तो मैटर इकट्ठा ही चलेगा) जेहड़ाँ मर्जी चलालो बादशाहो—असी तो तुहाड़े गुलाम हैं बादशाहो" (जैसे मर्जी चलालो हम तो आप के गुलाम हैं)—बाले ने अपनी मूछों को ताव दिया,—जैसे शराब का जोश अब ही आरम्भ हुआ हो—

चाय की रेहड़ी वाला ठाकुर सिंह सोडे ले आया—घने वृक्षों की छाओं तले चारपाई पर फिर पार्टी गरम हो गई थी—

एक—

दो—

तीन—

चौथे पैक तक राठी शान्ति से सिगरट फूँकता रहा—अरुण की गम्भीरता से और अधिक प्रभावित हो रहा था—बाले तो कहता था कि इस आदमी से सारा चन्डीगढ़ डरता है—परन्तु उसका चेहरा तो कह रहा था कि यह आदमी बहुत शरीफ है —कभी भूलकर भी किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता—कभी किसी की बुराई सोच ही नहीं सकता—

"राठी साहब—"

"हुँ—"वह यूँ चौंका जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो—

"अरुण बहुत अच्छा आदमी है—यह कमबख्त किसी को नहीं बताता कि मैं कलाकार भी हूँ—"

"बाले—" अरुण ने बीच में उसे टोक दिया—

यह राठी साहब—बहुत अच्छे आदमी हैं—अरुण ऐसा मित्र जीवन भर नहीं मिलने का—इससे क्या छिपाना—यह ठीक है तुमने मुझे सौगन्ध डाली है कि कभी भी मेरे प्रेम और कला की चर्चा किसी से

न करोगे—मगर यह राठी साहब—"

"इनके बारे में बहुत-सी कहानियाँ लोगों ने गढ़ रखी हैं—सच अरुण—ऐसा दोस्त नहीं मिलेगा—उन्हें आज तक मित्रों ने खूब लूटा है मित्र—मित्र उन्हें धोखा देते हैं—धोखे में डाल देते हैं—और यह उन को उस धोखे और षड़यन्त्र के बदले में रात को शराब पिलाते हैं—"

"बाले—बीती हुई बातों को उघेड़ने से क्या लाभ—आह जो करते हैं अच्छा ही करते हैं—"

"नहीं राठी साहब—यही तो आप की कमजोरी है—आप लोगों की भूलों से आँखें फेर लेते हैं—मित्रों ने आप से कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवा कर भी पैसे वसूल कर लिये—क्या नाम है उसी कम ख्त का—उसकी मा दी—"

बाले—किसी को गाली मत दो—मित्र की नीचता का उत्तर गाली नहीं—उसने जो किया वह बुरा था—तो हमें इस बुराई का उत्तर इस घटिया तरीके से नहीं देना चाहिए—ठीक है उसने हेराफेरी की—मित्रता के पीठ में छुरा घोंपा—इसमें अधिक से अधिक वह दस-पन्द्रह हज़ार—बीस हजार खा गया—मगर बाले—यह क्यों भूलते हो कि गया हुआ पैसा आ सकता है—मगर खोया हुआ मित्र नहीं—"

"वाह—वाह—राठी साहब—धन्यधाद—ऐ—से मित्र पर—मैं तो ऐसे मित्र की सराहना करता हूँ जो मित्रों के हाथों लुट जाने पर भी मित्रता को बदनाम करने के लिए तैयार नहीं—जो मित्रों की उपेक्षा सहन नहीं कर सकता—परन्तु अपना सब-कुछ बरबाद कर सकता है—" अरुण के ओंठ सहसा प्रसंशा के लिये पुकार उठे—

"अरुण तुम नहीं जानते उस चौधरी के बच्चे को—उसने हेरा-फेरी से राठी साहब के ट्रकों पर कब्जा कर लिया है—यार यह कैसा

मित्र है जो मित्रों के हाथ लुटकर भी दोस्ती का दम भर रहा है—"
बाले फिर पांचवा पैग तैयार करने लगा—

उसने जो कुछ किया बाले अच्छा किया—उसके ऐसा करने से न तो राठी गरीब हो सकता है और न ही वह इस से पहले करोड़पति था—एक चौधरी ही क्या मियाँ—किस-किस की बात बताई जाय—मुझे प्रसन्नता है मैंने आज तक दोस्ती को स्वयं मिटकर भी जीवित रखने का प्रयत्न किया है।

अब वह लोग नीच हैं तो मैं इसके अतिरिक्त और क्या कर सकता हूँ कि उनके साथ शराब पीना छोड़ दूँ—"

"बहुत अच्छे—शराब ही एक ऐसी चीज है जो सदा किसी भले आदमी के साथ बैठकर पी जा सकती है—किसी नीच और धोखेबाज के साथ बैठकर शराब पीना इतना बड़ा अपराध है जितना चोरी करना—"

अरुण ने पांचवे पैग को मुँह लगाते हुए कहा—

अरुण साहब यह सब-कुछ तो आप जैसे लोगों की देन है—वरना मैं किस काम का आदमी था—!"

"नहीं—राठी साहब—मैं आपकी इस महान मित्रता से बहुत प्रभावित हुआ हूँ—मुझे आज गर्व है कि मैं आज एक उच्च चरित्र व्यक्ति के साथ बैठकर शराब पी रहा हूँ—जितनी अच्छी यह शराब है उतने ही अच्छे तुम हो—इमान से आज तो एतिहासिक रात है—जिस रात मैंने एक परम मित्र को पाया है—"

"यह मेरा अहोभाग्य है कि आप ने मुझे इस योग्य समझा—"

राठी साहब—मैं आपसे प्रभावित हूँ—मैंने सोचा था कि यह मध्यम-वर्ग और निम्न लोगों का शहर है—नये-नये अमीर बने हैं—या अपनी आन दिखाने का बेकार प्रयत्न कर रहे हैं—मगर आप को पाकर तो मेरा यूँ विचार बदल रहा है जैसे अभी मानवत जीवित हैं—

"धन्यवाद—बहुत-बहुत धन्यवाद—अरुण विश्वास जानो तुमसे मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है—तुम्हारी मित्रता तो गौरव योग्य है—तुम सतीश के लिये जो कुछ भी कह रहे हो वह मुझे भूला नहीं —मगर मुझे यह समझ नहीं आती कि लोग आप जैसे आदमी पर क्यों गन्दगी उछाल रहे हैं—"

"क्या मतलब— ?"

मतलब कुछ नहीं अरुण साहब—यह दुनिया मनुष्य को किसी दशा में भी जीवित नहीं रहने देती—यह बात अब कहने की नहीं—परन्तु अब तुम से मित्रता हो गई है—तो मुँह में आई बात को रोक भी नहीं सकता—लोग जहाँ सतीश के बारे में अच्छी राय नहीं रखते—वहाँ वह आपके बारे में भी यह कहते हैं कि दोनों ने मिलकर एक लड़की रखी हुई है—जिसके साथ दोनों मिलकर दिन-रात आनन्द उठाते हैं—

"राठी सहाब—" अरुण के हाथों से तुरन्त की सुलगाई सिगरट जमीन पर गिर पड़ी—

"अरुण भाई—मैं केवल लोगों की बातें बता रहा हूँ—वे तो यहाँ तक कहते हैं कि इस दुकान के अन्दर ही वे सब पाप करते हैं—"

उफ — इतने कमीने हो गए हैं—इस समय के लोग—वे क्या समझते हैं कि अरुण इतना गिरा हुआ है—राठी साहब विश्वास नहीं करोगे—अरुण ने इस समय तक सैकड़ों लड़कियों के साथ सह-वास किया है—और मैं गर्व से कह सकता हूँ कि वे सब की सब निगार से सुन्दर थीं—हाँ केवल एक ही लड़की से प्रेम किया है जिसके लिए मैं जीवन भर सिसकता रहूँगा—अब एक निगार तो क्या हजार निगार भी अरुण के धर्म को नहीं डिगा सकती—फिर मेरे मित्र

true friendship of
Raithi

ग्रौरत तो जैसे-तैसे मिल सकती है—परन्तु मित्र जीवन में कम मिलते हैं—

"बाबू जी सितम हो गया"—वह सतीश का नौकर दयाल बौखलाया हुग्रा सामने खड़ा था—

"क्या हो गया दयाल—?"

"निगार के पिता जी घर पर ग्राये हुए हैं—उन्होंने सारा मुहल्ला इकट्ठा कर रखा है—वह कह रहे हैं कि निगार घर से भाग गई—निकालो सतीश के बच्चों को—उसने मेरी लड़की को उड़ाया है—कहाँ है उसका साथी ग्ररुण—इन दोनों बदमाशों ने मिलकर मेरी लड़की को खराब किया है—

"दयाल—"ग्ररुण ने बाकी बची शराब एक ही बार में गले में उंडेल ली—

"मैं ठीक कह रहा हूँ बाबू जी—वह पिस्तौल लिए खड़े हैं वह कहते हैं कि ग्राज मैं सब को पिस्तौल से मार दूँगा—"

"कौन बहनका—गोली मारेगा—ग्ररुण को—मैं उसकी माँ को—दूँगा—"राठी क्रोध से बोल पड़ा—उसका मुँह लाल हो रहा था, ग्राँखें जैसे ग्राग बरसा रही हों—

"राठी साहब—जो होना था—वह तो हो चुका मुझे पूरी ग्राशा थी कि ग्राज रात को कोई न कोई उपद्रव होगा—"

"इसका क्या मतलब है कि निगार—"

"हाँ मतलब यही है—मैं ग्राप से कोई बात छिपा नहीं सकता क्योंकि इस शहर में ग्रौर कोई घनिष्ट मित्र भी नहीं जिससे यह बात बताऊँ—ग्रसलियत यह है कि सतीश निगार को लेकर भाग गया है—इस के ग्रतिरिक्त उस पागल प्रेमी के पास कोई ग्रौर रास्ता नहीं था—मैंने उसे बहुत समझाया कि सतीश यह काम मत करो—यह दुनिया बड़ी जालिम

है—प्रेम एक पागलपन है—उसे अंधा भी कहा जा सकता है—इस अंधे-पन में मनुष्य बड़ी-बड़ी भूलें कर जाता है—इतिहास इस चीज का साक्षी है कि बड़े-बड़े राज्य इस प्रेम के कारण बरबाद हो गये हैं—बड़े कारोबार मिनटों में इस प्रेम ने चौपट कर दिये हैं—"

"मगर वह नहीं माना राठी साहब—मैं आज ही उन दोनों को छोड़ कर आया हूँ—"

"यह मामला टेढ़ा है अरुण—तुमने मित्रता के लिए इतना बड़ा बलिदान दिया है—इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा—इस दशा में वहाँ जाना भी ठीक नहीं—"

"ठीक है या गलत राठी साहब—अब तो होनी हो चुकी है—आगे के पगों के बारे में सोचना होगा—मैं घर तो अवश्य जाऊँगा—दुकान भी आवश्यकता खोलूंगा फिर मुझे अपनी जीवन की आवश्कता भी क्या है—अरुण का जीवन मित्रों के लिए है— मृत्यु भी मित्रों के लिए तो मेरे प्राणों को संतोष मिलेगा—"

"अरुण मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ—देखता हूँ कौन बहन का—तुम्हें हाथ लगा सकता है—

"अन्यादी मांदा—साड़े यार नूँ जेड़ा हथ ला जाये—ओदे हथ बड़-दियांगा—"(हमारे यार को जो हाथ लगाये उसके हाथ काट देंगे।) बाले अपनी लम्बी मूँछों को ताव देने लग—"

उस रात उसने घर पर जो मित्रता का दृश्य देखा—वह शायद जीवन-भर नहीं भूल सकता था—राठी और बाले की मित्रता पूजने योग्य थी—विशेषकर राठी का व्यक्तित्व अकेला ही सौ के करीब आदिमयों के सामने जाकर ललकारने लगा—पाँच दस आदमियों ने

Arvind
Tiber

अगर किसी ने अरुण की ओर हाथ उठाने का प्रयत्न किया तो अकेले राठी ने वे हाथ दिखाये कि मित्रता का ऐसा उदाहरण नहीं मिल सकता—

पाँच दस को मार पड़ते देखकर सब शान्ति से चले गये—क्योंकि इन में एक भी लड़ने वाला नहीं—अधिक मात्रा में केवल तमाशा देखने वाले सम्मिलित थे—

रात को राठी और बाले—उसके साथ ही आये—सुबह राठी उसके साथ दुकान पर बैठा रहा—

राठी की इस विशाल मित्रता को उसने मन ही मन मान्यता दी थी—सारा भारत घूमने के बाद उसने अनुभव किया कि राठी के समान मित्र नहीं मिल सकता—राठी केवल मित्रता के लिये ही जीवित है।

"गजब हो गया है निगार गजब—"

"क्या हो गया—"

"होना क्या है वकील कहता है कि तुम्हारी शादी दो महीने से पहले किसी सूरत में नहीं हो सकती—क्योंकि कानून के अनुसार हर लव मैरिज के लिये दो महीने का नोटिस देने की आवश्यकता है—"

"फिर अब क्या होगा—?' निगार ने उदासी में पूछा—

"होना क्या है दो महीने तक सब्र करो मेरी जान—"सतीश ने निगार के जुल्फों को पीछे हटाते हुए प्यार से उसके ओंठ थपथपाये—

"दो महीने हमें ऐसे ही काटने होंगे—"

"तुम घबरा रही हो निगार—पांडवों ने तो तेरह साल तक अज्ञात वास का जीवन बिताया था—हमें तो केवल दो महीने—

"मेरा दिल तो घबरा रहा है सतीश—यहाँ मेरा दम घुटता है—एक ओर दिल में डर दूसरी ओर यह पाबन्दी—हम आजादी से कहीं आ जा भी नहीं सकते—फिर पिताजी ने अखबार में भी तो निकलवा ही दिया है—पुलिस अवश्य हमारा पीछा कर रही होगी—"

"पुलिस हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती निगार—हम दो महीने तक इसी होटल में बन्द रहेंगे—

"कभी रात को घूम आया करेंगे—टैक्सी में जाया करेंगे—टैक्सी में आया करेंगे—"

"सतीश मेरा दिल काँप रहा है—जबसे मैंने अखबार में पढ़ा है—मेरे हाथ पाँव भी साथ छोड़ रहे हैं—" यह कहते हुए निगार उसके सीने से लग गई—

उसने अनुभव किया कि निगार का शरीर हल्के-हल्के काँप रहा है—उसके सुन्दर मुख पर दुख की परछाइयाँ नाच रहीं हैं—

"निगार डरो नहीं—जब तक सतीश जीवित है तुम्हें दुनिया की कोई शक्ति कुछ नहीं कह सकती—पुलिस हमारा क्या बिगाड़ सकती है—सतीश ने निगार को दोनों हाथों में भींचकर उसके गुलाबी ओंटों को चूम लिया—

"मगर सतीश यह डर अपने बस में नहीं—यह तो आत्मा का डर है—मैं हजार प्रयत्न के उपरान्त भी इसे अपने मस्तिष्क से नहीं निकाल सकती—रात-भर मुझे भयानक स्वप्न दिखाई देते रहे हैं—मुझे यूँ अनुभव होता रहा है जैसे हम दोनों इस दुनियाँ में बिल्कुल अकेले हैं—हम आगे-आगे भाग रहे हैं समाज के भयानक जन्तु हमारे पीछे-पीछे—रास्ते की झाड़ियों से उलझकर हमारे शरीर के कपड़े भी तार-तार हो गये हैं—परन्तु वे लोग बराबर हमारा पीछा करते चले आ रहे हैं—चारों ओर से भयानक चीखें सुनाई दे रहीं हैं—"

"अन्त में एक समय ऐसा भी आता है जब मैं बिल्कुल निढाल होकर गिर पड़ती हूँ—तुम मुझे अपनी बाँहों में उठाकर भाग रहे हो—परन्तु कब तक—अन्त में वे राक्षस हम तक पहुँच जाते हैं—उनकी आकृतियां बिल्कुल उन गिद्धों से मिलती जुलती है जो बोटियां नोच नोच कर खाते हैं— और इन गिद्धों की आकृति के मनुष्य हमें चारों ओर से घेर लेते हैं—तुम मुझे बचाने के लिए मेरे ऊपर लेट जाते हो—फिर चारों ओर से तुम्हें मार पीट शुरू हो जाती है—

अचानक इन गिद्धों में से एक देवता के समान मनुष्य निकलता है जो उन सब को इस काम के लिये मना करता है— परन्तु भीड़ में उसकी कोई नहीं सुनता—फिर वह मनुष्य तुम्हें बचाने के लिये अपने आपको आगे कर देता है—बढ़े हुए हाथ नहीं रुकते—वे इस मनुष्य पर पड़ने लगते हैं—

"यहां तक कि वह देव स्वरूप मानव मर जाता है—तब इन लोगों के हाथ रुकते हैं—जब उसकी लाश जमीन पर गिरती है तो पता चलता है कि वह अरुण—"

"निगार—"सतीश ने डर कर उसे अपने सीने से लगा लिया—"

"हाँ—सतीश इस समय से तो मेरा दिल बिल्कुल वश में नहीं—मैं डर रही हूं हमारे कारण अरुण किसी विपत्ति में न फँस जाय—कहीं उस परम मित्र पर कोई आपत्ति न आ जाय—"

"तुम घबराओ नहीं निगार—इन स्वप्नों का क्या है—यह तो मनुष्य सारे जीवन देखता रहता है—फिर सारे स्वप्न सच्चे थोड़े होते हैं—यह तो केवल. विचारों की दौड़ है—"कहने को तो सतीश ने यह बात कह दी परन्तु उसका दिल बराबर डर रहा था—परिस्थिति की समस्या दिन प्रति दिन जटिल होती जा रही थी—मन का धीरज—प्राणों का शाँति बराबर छीनती जा रही थी —हर समय डर लगा रहता था—कहीं वे खुलकर बाहर भी नहीं जा सकते थे—आज़ादी से घूम भी नहीं सकते थे—इनकी दशा तो उस समय बन्दियों से भी बुरी थी— जेल के अन्दर तो शायद थोड़ी बहुत आजादी होती है—परन्तु यहाँ तो हर समय होटल के अन्दर भी घूमने की आजादी नहीं—प्रत्येक क्षण प्राणों पर भय सवार रहता है—

वह ऊपर के दिल से तो निगार को बराबर तसल्ली दे रहा था—परन्तु अन्दर से वह स्वयं उससे कहीं अधिक डरा हुआ था—फिर निगार का यह स्वप्न कितना भयानक था—उसे सुनकर तो उसके प्राण काँपते थे—

उसने देखा—निगार उसके अंकव में ही निद्रा के अंक में चली गई—उसका गोरा-गोरा मुखड़ा जो कई दिनों से कुम्हलाया-सा था—अब निद्रा की गोद में बड़ा भोला-सा लग रहा है—निद्रा भी कैसी अवस्था है जिसे प्राप्त करते ही सारे छल कपट मर जाते हैं—

अब निगार के फूल से गाल सफेद बर्फ के समान प्यारे-प्यारे लग रहे थे—गुलाब की पत्तियों जैसे ओंठ आपस में मिल गये थे—नशीली आँखें बन्द हो गई थीं—सीने का उभार साँस लेने से बराबर ऊपर नीचे हो रहा था—

"यह समय कितना अच्छा था—इससे अच्छा समय कब वापस आयेगा—यह दुनिया कितनी बुरी है—यह युग कितना पत्थर-दिल है—यह आदमी कितने राक्षस हैं जो इस पवित्र प्रेम के पीछे पड़े हुए हैं—आखिर इस भोली सूरत ने इस जमाने का क्या बिगाड़ा है—प्रेम कौन-सा अपराध है अगर यह अपराध ही होता तो—जमना के तट पर मोहन की मुरली क्यों गूँजी—! क्यों राधा रातों को भागी हुई आती—! क्यों शिवजी पार्वती के लिये ताँडव नाच नाचते! —क्यों भगवान राम जंगलों में सीता सीता पुकारते हुए पागल से हो जाते—!फरहाद पहाड़ों के सीने काटकर दूध की नहर क्यों निकालता—! क्यों राँझा हीर के लिए बारह वर्ष तक उसकी भैंस क्यों चराता—"

परन्तु ओह यह युग कितना पाषण हृदय हो गया है—

अपने विचारो में डूबा हुआ विवश मानव नींद की गोद में सो गया—निगार और वह एक बिस्तर पर आसीन थे—

मध्य रात्रि में फिर प्रेम के तूफान उमड़ आये—दिल की इच्छाएँ एक बार फिर प्रबल हुई—फिर उसने सोये-सोये ही निगार के सीने को टटोला तो सारे शरीर से चिन्गारियाँ सी फूटने लगीं—उसके शरीर ने एक लम्बी अंगड़ाई ली—फिर उसने अपने सुलगते ओंठ निगार के ओंठों में धंसा दिये—

मेरे देवता—वह उसे लिपट गई—

"मेरी जीवनी—"(उखड़ी सांसें)—"मेरे समीप हो जाओ—"

"मैं कितनी समीप हूँ—!"

"नहीं यह दूरी समाप्त कर दो—इस प्रकार पास आ जाओ कि मुझे तुम्हारी सांसों की भी पहचान न रहे—यह शरीर भी मिलकर एक हो जांय—"

"जब दिल ही एक हैं तो शरीरों की दूरियाँ—

शरीरों की दूरी भी अब कहाँ बाकी हैं—यह शरीर अब तुम्हारा ही है मेरे देवता—इससे जो इच्छा सो करो—जब दिल ही दे दिया तो शरीर को अलग करके क्या करूँ। (कामुकता की ओर निमन्त्रण)

"निगार—तुम कितनी अच्छी हो—जिसने मेरी सारी इच्छाओं को पूरा किया है—जिसने मेरे स्वप्नों को पूर्ति की है—जिसने प्यार से मेरे ओंठों की प्यास बुझाई—"

"मुझे लज्जित न करो—देवता—"

फिर तूफान आ गया—जवानी का तूफान—तूफान के पश्चात्—छम-छम करती हुई वर्षा हो गई—थकी हारी बदलियाँ फिर आराम के लिये रात की गोद में विश्राम ढूंढने लगीं—

प्रातः—दरवाजे पर जोर-जोर से खट-खट हो रही थी—सतीश

घड़बड़ा कर उठा—दरवाजे खोलने के लिये जाने ही लगा था कि उसे अपनी मूर्खता का आभास हुआ—उसके शरीर पर तो कोई कपड़ा भी नहीं है—जल्दी से उसने नाइट सूट पहना और फिर निगार की ओर देखा—वह भी इसी तरह लेटी हुई थी—कांपते हुए हाथों से उसने निगार को उठाया—जल्दी-जल्दी में उसने कपड़े पहने—

दोनों की वाणी कुछ समय तक मूक रहीं—दिल की धड़कनें बराबर तेज होती गईं—यद्यपि वे उनको रोकने के लिये पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहे थे—परन्तु द्वार की खट-खट लगातार उन्हें डरने पर विवश कर रही थी—

"दरवाजा खोलो—दरवाजा खोलो—" फिर किसी का स्वर आया—

"सतीश—" निगार उससे लिपट गई—

"घबराओ नहीं निगार—" फिर वह दरवाजे की ओर बढ़ा—दरवाजा खुलते ही उन्होंने जो दृश्य देखा वह दोनों के लिए असहनीय था—

"मैं पुलिस इंस्पेक्टर हूँ—आपने इस लड़की को भगाया है—मेरे पास आप दोनों की गिरफ्तारी के वारंट हैं—"

उत्तर में पूर्णशान्ति थी—

"मिस्टर सतीश आप का नाम है—"

"फिर शाँति—"

"आपकी शान्ति मुझे हथकड़ियाँ डालने पर विवश कर रही है—"

उत्तर में आंखों से आँसुओं की दो बूंदें निकल पड़ीं, जो दिल की कहानी कह रहे थे—परन्तु यहाँ इस कहानी को कौन सुने—!

दूसरे दिन प्रातः ही अरुण जब अखबार पढ़ रहा था तो उस पंक्ति

को देखते ही अखबार उस के हाथों से गिर पड़ा—गिरे अखबार से भी वह दृष्टि न हटा सका—

देहली ७ सितम्बर—चन्डीगढ़ की भगाई गई लड़की एक होटल से प्राप्त करली गई और भगाने वाला एक नवयुवक है जिसका नाम सतीश है—वह भी चन्डीगढ़ का ही रहने वाला है। उसकी दुकान सेक्टर बाईस में है—जहाँ यह लड़की किताबें मोल लेने के लिए आया करती थी—लड़की को पिता के घर वापस भेज दिया गया है—और अपराधी को वापस चन्डीगढ़ लाया गया है—अदालत से उसके ऊपर मुकद्दमा चलाया जायगा—

"अपराधी—उसने क्रोध से अपना निचला होंट काट लिया—

अपराधी सतीश नहीं, तुम्हारे यह कानून हैं—जो दो दिलों की तबाही का कारण बने हैं—सतीश ने भगाया नहीं था बल्कि अपनी प्रेमिका को लेकर गया था—जिसे वह अपने जीवन से अधिक प्रिय समझता था—

परन्तु वह ही स्वंय जलकर रह गया—उसकी आवाज को कौन सुनता था—

मुकदमा भी एक एतिहासिक विशेषता रखता था—अदालत में लोगों की बड़ी भीड़ थी—सब ओर सतीश की ही चर्चा थी—फिर छोटे शहरों में तो यह खबर भी हवा की तरह फैल जाती है—बड़े शहरों में तो ऐसे हजारों मुकदमे रोज होते हैं परन्तु लोगों को पता भी नहीं होता—

मुकदमे की कारवाई जब आरम्भ हुई तो सतीश उस समय भी रो रहा था—अरुण भी अपने आँसू नहीं रोक सका—और सतीश ने अरुण के लाख कहने पर भी कोई वकील नहीं किया—वह बराबर यही कहता रहा कि मेरा वकील कोई नहीं है—और न ही हो सकता है—यह प्रेम की दुनिया की वकालत केवल मेरा प्रेम भरा हृदय ही कर सकता है—"

ठीक दस बजे अदालत की कारवाई आरम्भ हुई—

"अपराधी सतीश—!"

खामोशी—

"अपराधी सतीश—!"

उत्तर में केवल आँसू—

"अपराधी सतीश—! तुम्हारे विरुद्ध एक भले घराने की लड़की को भगाने का आरोप है—"

"वह भले घराने की लड़की—जज साहब—मेरी प्रेमिका थी और मेरा सम्बन्ध भी एक भले घराने से है—मैं एम० ए० पास हूँ—"

"जज साहब—यह अपराधी बहुत खतरनाक है—"

"सरकारी वकील अपनी बहस शुरू करे—"

"जज साहब व उपस्थित अदालत—आज जिस केस के बारे में मैं बहस करना चाहता हूँ, वह कोई ऐसा केस नहीं जिसे कोई न जानता हो—या ऐसा अपराध नहीं जिसके लिये बहस की आवश्यकता पड़े—केस बिल्कुल सीधा-सादा है—अपराधी ने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया है—जिसके प्रकाश में मुझे बहस करने की जरूरत भी नहीं थी—परन्तु फिर अदालती कारवाई का आदेश है—ऐसे बदमाश, आवारा और कमीने नौजवानों को कड़ी से कड़ी सजा देने के लिए मुकदमे को खुले अदालत में लाया जाय—"

"अपराधी सतीश इस शहर का एक दुकानदार है—वह दुकानदार जिसके पास हमारी सबकी बहू-बेटियाँ सौदा लेने जाती हैं—अगर दुकानदार लोग ऐसी नीचता आरम्भ कर दें तो मेरा विचार है कि किसी भी भले आदमी की इज्जत सुरक्षित नहीं रह सकती—अपराधी जहाँ पूरी जाति और देश पर काला धब्बा है—वहाँ वह पूरे समाज के लिए गन्दी मछली है—जो हमारे समाज को गन्दा कर देगी—एक भली लड़की को भगा कर अपराधी ने जो सभ्यता के विरुद्ध कार्य किया है उसके लिए अदालत को चाहिए कि अपराधी को बड़ी से बड़ी सजा दे—ताकि बाकी लोग भी इससे शिक्षा पायें—इसके साथ ही मैं अपना ब्यान समाप्त करता हूँ—?"

"अपराधी सतीश—तुम्हारा कोई वकील है ?"

"मेरा वकील—जज साहब मुझे खेद है कि मेरे केस की इस दुनिया में कोई वकालत नहीं कर सकता—"

"क्या मतलब—?"

मतलब कुछ भी हो जज साहब—मुझे यह कहते दुख होता है कि प्रेम के अभियोगों का सम्बन्ध हृदय और आत्मा से होता है और इस प्रेमी जगतके ऊपर आपकी अदालतों का कानून नहीं चल सकता क्योंकि आत्मा का सम्बन्ध सीधा उस शक्ति से है जिसे लोग परमात्मा कहते हैं—और मुझे बहुत दुःख के साथ कहना पड़ता है कि प्रेम जैसी पवित्र भावना को भी इस दुनिया ने अदालतों में खींच कर ईश्वर की शक्ति को चैलेंज किया है—"

"वाह—वाह—वाह—" बहुत सारे लोग प्रसंशा करने लग गये—

"आर्डर—आर्डर—" जज की गर्जदार आवाज अदालत के कमरे में गूंजी—

"हाँ तो जज साहब—! मेरे विरुद्ध जो सरकारी वकील ने विष उगला है मेरे जैसे भले आदमी के ऊपर जो उन्होंने नीचता का प्रदर्शन किया है—वह किसी भी सरकारी वकील को शोभा नहीं देता—"

"शब्द नीच और असभ्य ध्यान देने योग्य है—परन्तु मैं अपने आदरणीय श्रीमान सरकारी वकील को यह बता देना चाहता हूँ कि निगार के अतिरिक्त मेरी दुकान पर हजारों लड़कियाँ आती थीं—क्या मैं सब को भगा कर ले गया था—?"

"या सब के साथ ही मेरे सम्बन्ध थे—"

"मेरा विचार है इसका उत्तर वह नहीं में ही देंखे—"

"और जहाँ तक प्रेम का सम्बन्ध है—मैं अदालत पर और वकील साहब पर स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस प्रेम पर मुझे सदा गर्व रहेगा क्योंकि मैं निगार से तन मन से प्रेम करता हूँ—मैं कामुक नहीं —अगर मुझे किसी लड़की का शरीर प्राप्त करना होता तो इस समाज में इसकी कमी नही—कुछ नोटों के बदले शरीर खरीद सकता हूँ—"

"परन्तु किसी दिल को जीतने के लिए बलि देनी पड़ती है—जो लोग कुछ नहीं कर सकते वह केवल दोषारोपण कर सकते हैं लोगों को गालियाँ देते हैं—"

"जज साहब मैं अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना चाहता—केवल इतना ही कहूँगा कि मैं निगार से तन मन से प्रेम करता हूँ—करता रहूंगा इस पथ में कोई रुकावट—कोई भी मुसीबत आ जाए तो मैं उसका प्रसन्न चित्त सामना करूँगा—इस प्रेम के अपराध में अगर आप कोई सजा देना चाहते हैं तो मैं उसका स्वागत करूँगा—"

"जज साहब—किसी गहरी सोच में पड़ गये—अदालत में बैठे हुए लोगों ने एकदम चुप्पी साध ली थी और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से सतीश की ओर देख रहे थे—

सतीश के ब्यान ने अदालत में एक सनसनी-सी पैदा कर दी थी—अरुण को तो आशा ही नहीं थी—सतीश जैसा अबोध आदमी इतना अच्छा ब्यान देकर तमाम लोगों की सहानुभूति ग्रहण करेगा—

"अपराधी सतीश—तुम्हारी बातों से ज्ञात होता है कि तुमने जो काम किया उसमें अपराध युक्त बुद्धि का दोष कम था—परन्तु फिर भी कानून की दृष्टि में तुम निर्दोष अपराधी सिद्ध नहीं हो सकते—"

"इसलिए तुम्हें अदालत केवल तीन मास कैद की सजा देती है—"

इसके बाद अदालत समाप्त हो गई—

जिस समय सिपाही सतीश को कटहरे से बाहर ले जा रहे थे अरुण उससे लिपट कर रोने लगा—

"मेरे सतीश—!"

"अरुण—तुम चिन्ता न करो—बस निगार का ध्यान रखना—मैं वापस आकर फिर भाग्य की परीक्षा करूंगा—अब निगार की तमाम जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है—"

"यह सजा नहीं सतीश—यह तो प्रेम के सीने पर एक अमिट घाव है—अरुण चिल्ला पड़ा—"

"ऐसे घाव हर प्रेम करने वाले को खाने ही पड़ते हैं—" सतीश ने बुझे हुए दिल से उत्तर दिया और दिन बीतने लगे—

एक दिन निगार अरुण के पास बड़ी तेजी में आई—अरुण ने देखा कि उसका फूल सा चेहरा बिल्कुल मुरझा गया है—प्रसन्नता की जगह उदासियों ने ले ली है—आँखें लगातार रोने के कारण सूजी हुई थीं—वस्त्रों में कोई क्रम नहीं था—

"अरुण भइया गजब हो गया—"

"क्या हो गया बहन—?"

"वह लोग मेरी शादी कर रहे हैं—"

"शादी—"

"हां—हां—शादी निगार का स्वर कांप रहा था—

"कब—और किसके साथ—?"

"केवल सात दिन शेष रह गये हैं—जिसके साथ कर रहे हैं उसको मैं जानती तक नहीं—इतना अवश्य सुना है कि मेरे साथ कोई लड़का

ब्याह करने के लिये तैयार नहीं था—इसलिये डैडी ने ऐसे आदमी के साथ सम्बन्ध पक्का किया है जिसकी पहली पत्नी मर चुकी है—उसकी आयु भी चालीस से ऊपर है—"

"यह नहीं हो सकता निगार यह कभी नहीं हो सकता—यह दुनिया का सबसे बड़ा अपराध है—यह सबसे बड़ा पाप है—कहाँ गये वे अदालतों में बैठकर कानून चलाने वाले—क्या अब उनके कानून सो गये हैं—जब एक बीस वर्षीय लड़की चालीस वर्षीय बूढ़े को ब्याही जा रही है—"

"यदि प्रेम करना अपराध है तो यह कहाँ का पुन्य है—? ये अन्धे कानूनों के मालिक दिलों को तोड़कर खुश होते हैं—निगार तुम चिन्ता नकरो, जब तक अरुण जीवित है यह शादी नहीं हो सकेगी—मैं संगीता की सौगंध खाकर कहता हूँ ये ब्याह नहीं होने दूँगा चाहे कुछ भी हो जाये—"

"अरुण भइया—"

"ठीक है निगार बहन—तुम जाओ—अब यह फैसला तुम मुझ पर छोड़ो—सतीश की मां ने सतीश का हाथ मेरे हाथ में दिया था और सतीश ने तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में दिया है अब मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उस धरोहर की रक्षा करूँ—"

"भइया—" निगार के आँसू निकल पड़े—"

रो नहीं निगार—जब तक मैं जीवित हूँ तुम्हें कोई नहीं ले जा सकता—तुम जल्दी से घर जाओ—मैं ब्याह वाले दिन वहीं मिलूँगा—मेरा विचार है—शायद सतीश भी तब तक वापस आ जाये क्योंकि उसे दो महीने से अधिक बीत चुके हैं—"

"सतीश—" निगार ने प्यार से उसका नाम लिया—"

"हां—हां—मेरा विचार है कि वह शीघ्र आ जायेगा—"

फिर वह दिन भी आ गया जब निगार की बारात आनी थी—ठीक दूसरी सुबह सतीश जेल से छूट कर आ रहा था—अरुण दिन-भर कोई काम नहीं कर सका—सारे दिन कमरे में बन्द रहा—क्योंकि आने वाली रात ही उसके जीवन की सब से बड़ी परीक्षा लेने वाली थी—मित्र की धरोहर की रक्षा हर तरह से वह करना चाहता था—

सारा दिन शराब और संगीता की कल्पना पर निछावर हो गया—शायद मानसिक उलझन ने उसे पागल बना दिया था—कर्त्तव्य और प्रेम की चक्की में यह बराबर पिसता रहा।

आने वाली रात शायद प्रलयकी रात थी। रात के अन्तिम चरण में निगार का विवाह होना था—

अब केवल एक ही चीज साथ रह गई—शराब—जिसके सहारे वह यह आपत्ति काल काट रहा था—दूर कहीं शहनाइयों और बैंड बाजों का स्वर सुनकर वह बौखला रहा था—फिर इससे बड़ी मुसीबत उसके लिए और हो भी क्या सकती थी—सारी रात इसी प्रतीक्षा में बीत गई—तीन बजे वह अपने घर से बाहर निकला—चारों ओर एक भयानक नीरवता थी—सन्नाटा—घर से सारा शहर नींद की गोद में सो रहा था—केवल दो एक कोठी पर हजारों लाल-पीली बत्तियाँ जगमगा रही थीं—मोटर-साईकिल ने स्टार्ट होते ही वातावरण में एक गड़गड़ाहट सी मचा दी—लाल-पीली बत्तियों के सीने कांपने से लगे—अरुण की आँखें इस समय क्रोध से लाल हो रही थीं—एक जेब में शराब की पूरी बोतल थी—वह जीवत में पहली बार मृत्यु से इस तरह खुले आम लड़ने जा रहा था—इतना

खुलकर तो शायद वह संगीता के लिए भी नहीं लड़ सका था—

फिर वातावरण में बेंड बाजों की आवाज गूंजने लगी—शायद बारात के लोग शादी का सबसे बड़ा नियम जिसे "फेरे" कहते हैं आरम्भ करने जा रहे थे—

उसने मोटर साईकिल को कोठी के बाहर ही रोक दिया—और जल्दी-जल्दी अन्दर प्रवेश करके दालान में पहुँच गया—यहाँ एक तिलक-धारी पंडित किसी किताब के पेज खोले—आग जलाये—कुछ मंत्र पढ़ रहा था—

बरात वाले भी तिलक धारी पंडित के पास आ गये थे—दूल्हे मिया के मुँह पर सेहरे बंधे हुए थे—मोटे ताजे लम्बे कद के चालीस वर्षीय दूल्हे को उसने क्षोभ भरी दृष्टि से देखा—यह दूल्हा कहाँ था—यह तो समाज के सीने पर एक घाव था—ऐसा घाव जो नासूर से पैदा होता है—उसके हृदय में आया कि उसके पास जाकर गला पकड़ कर चिल्ला पड़े—

जिस लड़की से तुम शादी कर रहे हो वह तुम्हारी लड़कियों के बराबर है—यह ब्याह नहीं दुनिया का सब से बड़ा अपराध है—जब निगार से यह अधिकार कानून ने छीन लिया है कि वह किसी नवयुवक से शादी नहीं कर सकती तो उस कानून ने यह कैसे आज्ञा दे दी कि वह अपने से दुगनी आयु के बूढ़े से शादी कर ले—

इसके हृदय में आया कि यहाँ जोर-जोर से चिल्लाना आरम्भ कर दे

"लड़की को जल्दी लाओ—महूरत का समय आ गया है—तिलक-धारी पंडित के स्वर ने उसके बिचारों का ताना बाना बिखेर दिया—

"यह शादी नहीं होगी—" अचानक अरुण चिल्ला पड़ा—"

सब लोग फटी-फटी निगाहों से उसे घूरने लगे—"

"कौन हो तुम—?" एक गर्जदार स्वर गूँजा—"

"मैं कोई भी हूँ—इससे किसी को मतलब नहीं—मैं फिर कहता हूँ कि यह ब्याह नहीं हो सकता—ब्याह दो दिलों के मेल का नाम है—न कि जबर्दस्ती का—यह ब्यात नहीं बरबादी है—केवल एक रीति पूरी की जा रही है—एक लड़की को केवल इस लिए ब्याहा जा रहा है कि समाज में उसके स्वर का कोई सुनने वाला नहीं—वह अपने हक के लिए लड़ नहीं सकती—!"

"बन्द करो यह बकवास—"

"यह बकवास नहीं सत्य है—यह कहां का न्याय है कि बीस वर्षीय लड़की को चालीस वर्षीय बूढ़े के साथ ब्याह दिया जाय। अगर तुम सच्चाई पर हो तो क्या यह बता सकते हो कि तुम्हारे में से कोई भी आदमी अपने से दुगनी आयु की किसी बूढ़ी औरत के साथ ब्याह करना पसन्द करेगा—"

"निकल जा यहाँ से कमीना कहीं का—यह कहते हुए एक लम्बी-लम्बी मूँछों वाले रोबदार आदमी ने उसे धक्का दिया—"

"मैं यहाँ से उस समय तक नहीं जाऊँगा—जब तक यह शादी नहीं रुकेगी—में यह अपराध नहीं होने दूँगा—यह ठीक है कि वह मूक बाला है—परन्तु अधिकार और न्याय भी कोई चीज है—!"

"वह मेरी लड़को है—मैं उसकी अच्छाई-बुराई का स्वयं जिम्मेदार हूँ—"

"आप की लड़की है इसका यह मतलब नहीं कि आप केवल अपनी जिद के लिए उसे तबाही के भयानक गड़ढ़े में धकेल दें—दुनिया का

कोई बाप इतना बड़ा अन्याय नहीं कर सकता—जो बाप ऐसा अन्याय करता है वह बाप कहलाने का अधिकारी ही नहीं—फिर बाप से ऊपर उठकर उसका एक सम्बन्ध और भी है—वह है सामाजिक—"

"चुप रह बदतमीज—गुस्ताख—मैंने तुम्हें पहचान लिया कि तू वही सेक्टर बाईस के गुण्डडे का साथी है—और शराब पीकर मेरी बेइज्जती करने आया है।"

"मैं गुन्डा नहीं हूँ—न ही वह गुन्डा था—गुन्डे तो आप लोग हैं जो एक लड़की को बेसहारा समझकर एक बूढ़े के पल्ले बाँधकर जीवन-भर के लिये उसकी प्रसन्नता छीन रहे हैं—"

हरामजादा—एदी मांदा—एदी बहन नूं साला बूढ़ा कहता है दूल्हे नू—"

चारों ओर से गालियों की बौछार होने लगी—कई युवक जोश में आ गये थे—"

"जाओ लड़की को लाओ—महूरत का समय जा रहा है"

"लड़की नहीं आयेगी—"

"कौन जमया रोकन वाला—(कौन पैदा हुआ है रोकने वाला) रामसिंह—श्यामसिंह—करतारे—नत्थू—इस[उल्लू के पट्ठे को सीधा कर दो—' निगार के पिता को बेहद क्रोध आ गया था—

"मैंने कह दिया कि मैं शादी नही होने दूँगा—नहीं होने दूँगा—" अरुण ने यह कहते हुए वेदी पर लगे हुए केले के छिलके और दूसरी लकड़ियाँ उखाड़नी शुरू कर दीं—ऊपर से उसपर लाठियों की बौछार आरम्भ होगई—

"मारो कमीने को—"

"मारो वदमाश को—"

"मारो हरामजादे को—"

चारों ओर से उनके ऊपर मार पड़ने लगी परन्तु उसने वेदी की सब लकड़ियाँ तोड़कर [हवन का सामान फेंक दिया था। पंडित के हाथों से पोथियाँ छीनकर फेंक दी थीं—क्रोध की दशा में जब वह पंडित का गला दवाने लगा—तो वह बाहर भाग गया—

परन्तु ऊपर से मार बराबर जारी थी—यहाँ तक कि वह बेबस होकर गिर पड़ा—उसके मुँह से खून की धार बहने लगी—शरीर पर इतने घाव थे कि शायद पहचानना भी कठिन हो रहा था—

मारने वालों के हाथ खून में रंगे जाने लगे—लाठियाँ खून में लाल हो गईं—हवन की जगह अरुण के खून ने ले ली थी—और वह पड़ा सिसक रहा था—

मारो हत्यारो मारो—और मारो—अपने हाथ मत रोको —मगर ब्याह रोक दो—निगार—केवल सतीश की है—

"सतीश की—!"

अचानक सेहरा बंधे हुए बूढ़े]दूल्हे ने अपने सेहरे को ऊपर उठाया—शायद वह यह नाम सुनकर चौंक पड़ा था—

कौन सतीश—! तुम अरुण—तो नहीं हो—! दूल्हे ने अपने सेहरे दूर फेंककर अरुण के ऊपर झुकते हुए पूछा—

"—हाँ—हाँ—मैं—अरुण ही हूँ—उसका स्वर लड़खड़ाने लगा था—परन्तु तुम तो दूल्हे हो— यह क्यों भूल रहे हो कि जिस

लड़की को तुम ब्याहकर ले जा रहे हो—यह पहले ही सतीश की दुल्हन बन चुकी है—वह इसके साथ सुहाग रात भी मना चुका है—एक ही लड़की के दो-दो पति भी हो सकते हैं—"

"अरुण यह मैं क्या सुन रहा हूँ—! मुझे पहचानने की प्रयत्न करो—मैं ही वह अभागा बाप हूँ—जो अपने बेटे की बहू से ब्याह कर रहा हूँ—"

"अरुण—अरुण—"वह चिल्लाने लगा—परन्तु अरुण चुप था—उसके खून से भरे हुए ओंठ सहमे हुए थे—

"सतीश आ गया—सतीश आ गया--निगार का पुराना प्रेमी—" चारों ओर आवाजें गूँजने लगी—

सतीश के साथ राठी और बाले थे—राठी की आँखें उस समय किसी शेर की भाँति चमक रहीं थीं—बाले ने अपनी पगड़ी को टेढ़ा कर रखा था—

"पिताजी यह क्या—?—क्या आप शादी करने—"

"हाँ मैं ही वह आभागा बाप हूँ मेरे बेटे—"

"मगर अरुण भइया—!"

"सतीश अरुण के ऊपर झुक गया—"

"अरुण भइया—अरुण—"वह उसके खून में सने शरीर से लिपट गया—"

"सतीश तुम आ गये—अच्छा हुआ—अपनी धरोहर संभाल लो—बहुत अच्छे अवसर—"

"केड़े वहन दे'''ने मारा ऐनूं—ओदी मादी—ओदी बहन दी—ड़े यार ने कल्ला देखके कुट छटाया—राठी और बाले ने मिलकर अन्धा-धुन्ध लोगों को पीटना आरम्भ कर दिया था—शायद राठी जैसा आदमी केवल दोस्तों के काम आने के लिये ही पैद हुआ था—

"राठी—बाले—यह मत करो—बात खत्म हो गई—ये तो मेरे पिताजी थे—"

"यह क्या कह रहे हो सतीश—"

"हाँ अरुण ये ठीक है—मैं ही आभागा पुरुष हूँ—जो पुत्र की पत्नी को ब्याहने चला था—"

सब लोग आश्चर्य से सतीश की ओर देख रहे थे—जो अरुण से लिपटा हुआ रो रहा था—सब की वाणी मूक थी—यह दृश्य भी देखने योग्य था—"

यह क्या हो गया —?

यह क्या हो गया—?

"अरुण को बचाओ—"

"अरुण को बचाओ—"

मैं ठीक हूँ—सतीश तुम मेरी चिन्ता न करो तुम इसी खून में सनी हुई वेदी में बैठकर निगार के साथ ब्याह कर लो पंडित को बुला लो

"हाँ—हाँ—ठीक है—ठीक है—"

परन्तु अरुण—मैं तुम्हें इस दशा में छोड़कर कैसे ब्याह कर सकता हूँ—अरुण—में ऐसा ब्याह नहीं चाहता जो तुम्हारे खून के ऊपर रचाई जाय—"

"तुम पागल हो—प्रेम सदा बलिदान चाहता है—"

परन्तु तुम्हारे शरीर के यह घाव—राठी और बाले ने अपना बलिदान करने वाले मूर्ति को चूम लिया—

"यह शरीर के घाव तो कभी न कभी भर हो जायेंगे—लेकिन दिल के घाव—"

अरुण के मुँह से एक चीख निकली—

तुम मनुष्य नहीं देवता हो—तुमने आज वह कार्य किया है—जिस पर आने वाला युग पूरा गौरव करेगा—तुम न आते तो शायद एक बाप अपने बेटे की पत्नी के साथ ही शादी कर लेता—कल की पत्नी आज मां—"

"सतीश तुम देर न करो—"

"परन्तु अब तो दिन का प्रकाश हो चुका है—इसमें ब्याह नहीं पढ़े जा सकते—पंडित जी बोल पड़े—"

"रात के अंधेरे में तो तुम संसार का सबसे बड़ा पाप भी करने के लिये तैयार थे—मगर दिन के प्रकाश में दो प्रेम करने वालों के ब्याह से भी तुम्हें इंकार है—राठी ने पंडित का गला दबाते हुए कहा—

"नहीं—नहीं—पढ़ाऊँगा—पढ़ाऊँगा—"पंडित ने काँपते हुए हाथों से फिर अपनी किताब को खोला—

"तुम क्या तुम्हारे बड़े भी पढ़ायेंगे—साले पाखंडी—जब बीस वर्षीय लड़की किसी बूढ़े से ब्याही जाती है तो इंकार नहीं करते—राठी ने बड़बड़ाते हुए अरुण को अपने हाथों में उठाकर चूमना रू कर दिया—"

———